श्री

श्रीब्रजविहार

जगत्नारायणजी

संग्रहीत

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द व्रजचन्द श्रीयशोदानन्दनजी

की बिचित्रलीलाएं

वर्णित हैं॥

जिसको

उक्त महाशय के परम स्नेही मित्रबर पण्डित बैजनाथ ने र-

सिकसज्जनों के आनंदार्थ

रामनारायण यंत्रालय श्रीमथुराजी में मुद्रि-

त कराकर प्रकाशित किया

संबत १९५० वैक्रमी

क़ीमत ३ ॥)   डा० मह० ॥)

प्रकटपत्र

प्रकट होकि यह परम मनोहर ग्रन्थ श्रीब्रजविहार जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द श्रीव्रजचन्द यशोदानन्दन की अनेक लीलाऐं वर्णित हैं और अनेक राग रागनियों में जगतनारायण ने बहुतसी पुस्तकों से चुन कर बड़े परिश्रम से संग्रह कियाहै अब इस ग्रन्थ को बिना पंडित बैजनाथ बुकसेलर की आज्ञा के कोई महाशय छापने वा छपवाने का इरायदा न करें नहीं तो लाभ के बदले हानि उठावेंगे।

पुस्तक मिलने का पता
पंडित बैजनाथ बुकसेलर
नयीसडक मथुरा

पुस्तक मिलने का पता
पंडित बैजनाथ बुकसेलर
हरद्वार ज़िला सहारनपुर

सूचीपत्र

इति

प्रकटपत्र

प्रकट हो कि यह परम मनोहर ग्रन्थ श्रीव्रजबिहार जिसमें श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद श्रीव्रजचंद यशोदानंदन की अनेक बिचित्र और अनूठी लीला व्रजभाषा की अनेक रागरागनियों में रसिक भक्त प्रेमीजनों के हृदय में हर्ष बढ़ाने वाली वर्णित हैं जिसको जगद्विख्यात श्रीकृष्णचंद्र के परम भक्त श्रीजगतनारायणजी ने भक्तजनों के कमलरूप हृदय को प्रफुल्लित करने तथा भ्रान्तिरूप अंधकार के नाश करने के निमित्त सूर्यरूप उक्त ग्रन्थ को प्रकाशित किया। महाशयो यह कुछ जगतनारायणजी की चातुरी नहीं है किन्तु केवल कृपासागर जगतउजागर दीनबन्धु दीनानाथ श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद की प्रेरणा है। अब श्रीजगतनारायणजी की आज्ञानुसार बाबू बैजनाथजी ने रामनारायण यंत्रालय में मुद्रित कराया॥

कोई महाशय बिना आज्ञा जगतनारायणजी के इस ग्रंथ को छापेगा या छपवावेगा वह लाभ के बदले हानि उठावेगा॥

पुस्तक मिलने का ठिकाना
बाबू बैजनाथ बुकसेलर
नयी सड़क मथुरा

अथ श्रीगोपालाष्टक लिख्यते

रति सुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेष
म्॥ नकुरु नितंबिनगमनविलम्बनि मनुसर
तं हृदये शम्॥ धीरसमीरे यमुनातीरे बसतिव
ने वनमाली॥ गोपीपीन पयोधरमर्दन चंचल
कर युगशाली १

नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणम्॥ ब
हुमनुते ननु ते तनुसंगत पवनचलतमपि रेण
म्॥ धीर० २॥

पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकितभवदुपया
नम्॥ रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति
तव पंथानम्॥ धी० ३॥

मुखरमधीरं त्यजमंजीरं रिपुमिव केलिसुलोल
म्॥ चलिसखिकुंजे सतिमिरपुंजे शीलयनील
निचोलम्॥ धीर०॥ ४॥

उरसिमुरारे रुपहितहारे घनइव तरलवलाके

तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृत पिया
के॥ धीर०५॥

विगलितवसनं परिहृतरशनं घटयज घनम
पिधानम॥ किशलयशयने पंकजनयने निधि
मिव हर्षनिदानम्॥ धी०६॥

हरिरभिमानी रजनिरिदानी मियमपियाति वि
रामम्॥ कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधु
रिपुकामम्॥ धी०७॥

श्रीजयदेवकृतहरिसेवं भणति परमरमणीय
म्॥ प्रमुदितहृदयं हरमतिसदयं नमत सुकृत
कमनीयं॥ धीर०॥

॥८॥

इति श्रीगोपालाष्टक
समाप्तम्॥
शुभम्
१९५०

श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः॥

श्रीकुंजबिहार

अथ श्रीकुंजबिहार श्रीराधास्याम के परम प्रेमी भक्त श्रीयुत जगतनारायणजी संग्रहीत

लिख्यते

मंगलाचरण

दोहा

सदा सुमिरिये गजवदन मोती दिपे लिलार
सर्व भुबन और दीप में जाकी ज्योति अपार

दोहा

देखो कुबिजा प्रेम कर पाये हरि से मीत
प्रेम नहांसी खेल है कठिन प्रेम की रीत

दोहा

दरपन में मुख देखि के राधा कियौ गुमान
सुन्दर देख्यो रूप निज कीनो मन अभिमान

दोहा

मो समान या जगत में और न दूजी नारि
मोहि लियो में स्याम को फांस प्रेम की
डार

दोहा

बिन्द्राबन सो बन नहीं नंदगाम सो गाम
बंशीबट सो बट नहीं कृष्ण नाम सो नाम

रागभैरों

मंत्रमय गणेश बिघ्नहरण सदा गाइये ॥ प्रथम जाहि गाइगाइ सकल सिद्धि पाइये ॥ मंत्र को स्वरूप सोई गज मुख ठहराइये ॥ मंत्र भाग चा रभुजा भालचंद्र धाइये ॥ अंकुश सीस दूव ज्ञा न रूप सो चढ़ाइये ॥ मदहर सिन्दूर सीस मोद क फल पाइये ॥ भक्तमान एक दंत केवल सु खदाइये ॥ देवदेव भक्तन के मानस में आइये

तैलंगी रागिनी

आज कहीं बंसी बाजी रे ॥ सखी इन कुंजन के

बीचजब सों भनक परी श्रवनन में सुधि न रही कछु मेरे तन में ॥ आनि मिलौ मोहन प्यारे तब हो मन राजी रे ॥

ठुमरी

आज उन बिन जियरा तरसै रे ॥ टेक ॥ ऋतु आई बर्षा की रूमझूम ॥ उन ॥ रैन भई कारी अंधियारी कोइल कूक रही दई मारी ॥ पवन चलत दामिनि दमकै घन बूंदन बरसै रे ॥

अथ बलि लीला

प्रारम्भ

दोहा

भली भई मैं ना जरी बहि लोचन के साथ
मेरे सुत ऐसे भये मो ऋण पसारे हाथ।

दोहा

बलि चाही सो ना भई प्रभु चाही तत्काल
बलि चाहत बैकुंठ को भेजि दियो पाताल॥

दोहा

यज्ञ और शुभ धर्म करि बलि मन अति अधिकाय ॥ इन्द्रासन जब डिगमग्यो कह्यो श्रीपति सों जाय ॥

दोहा

तब हरि हृदय बिचार कें कीजे कौन उपाय इत बलि इत इन्द्रासन राखि दोउन को भाय

समाजी बचन

पद

बलि को छलन चले तिरलोकी कला बनाइ लई छोटी ॥ हाथ में लैलई कनक लकुटिया सिर पै रखि लई टोपी ॥ करि असनान पोतिया धोती सूरज को जल ढारे ॥ पाय पहरि लई चंदन खड़ाऊं हाथ में लैलई भागवत पोथी ॥ भरी सभा राजन की बैठी बात कही एक छोटी ॥ तीन पैड़ बसुधा दै राजा या में ब्राह्मण करि खायगो रोटी ॥

राजाबचन

रागदेस

प्रभु मेरे आये बलि के द्वार करता रामहरी ॥ ल कुट कमंडल अधर मेखला कटि पर सोहै यज्ञ जनेऊ शिखा और अम्बरस्तन जोहै ॥ अतिलघु बामन रूप धरि आये बलि के द्वार ॥ महाराजा अचरज एक देख्यो जाय कहूं बिस्तार ॥ कर- ता रामहरी ॥

समाजीबचन

पद

बैठ्यो यज्ञ रचै राजा बलि आहुति पान मिठाई बैसान्दुर भये गगन सघन ते भार पहुंचाई ॥ अ रब खरब मेवा धरि लीनी गहरी साम कराई ॥ बैठ्यो यज्ञ रचै राजा बलि घी के कलस भराई करता रामहरी

राजाबचन

पद

राजा बिप्रन भक्त नाम सुनि कें उठि धायौ ॥ अद्भुत दरसन पाय शीश चरणन में नायौ ॥ कहा तुमारी कामना प्रभु मांगौ हृदय बिचार ॥ नीके बचन सुने राजाबलि सर्वसु डारौं वार ॥ कर्त्ता राम हरी ॥ जब बलि कियौ प्रणाम उदक लै चरण परवारे ॥ अर्घादिक बिधि साज आनि आसन बठारे ॥ धन्य धर्म धनि राजकुल धन्य यहै अनुराग ॥ घर बैठे प्रभु किरपा कीनी धन्य हमारे भाग करता राम हरी ॥ कैधों वेद वपु धरे कैधों ब्रह्मा सुर भेजे ॥ कैधों अग्नि को पुंज कैधों रबि तेज बिराजे कैधों सकल सोभा अधिकाय

भई इकठी आय ॥ करता राम हरी

ब्राह्मणबचन

पद

यज्ञ करत सब को मन मोह्यो मोहि लिये बलि राय ॥ लेओ कलप तरु द्दस कोटि कल्पना जे न मावे ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि जोय तुमरे म-

न भावे ॥ बचन बड़े गुननन बड़े प्रभु त्रिबिधि तुम करत ग्राम धाम सुख दीजिये मोय अधिक सुखदेव ॥ करता रामहरी

वार्त्ता

हे प्रभु आप धन्य हैं धन्य हैं मेरी साष्टांग प्रणाम अंगीकार कीजिये आप की इच्छा होय सो आज्ञा कीजिये

ब्राह्मणबचन

कबित्त

आगे प्रह्लाद बाबा तेरो न्रप ऐसो हतो ॥ ता के हित राम ने न्रसिंह रूप धार्यौ है ॥ जा को यश परम पुनीत व्यास भागवत में गायो सो भयो भक्त प्रभू को प्यारो है ॥ तैसोई सपूत भयो बहलोचन ता के आय छायो यश जग में कुल ऐसो तिहारो है ॥ पूजो मन काम मेरी सुनिये हो राजा बलि या ते आसीर्बाद तुमको हमारो है ॥

ब्रह्मणबचन

पद

तीन पैंड देउ नाप यही पृथ्वी बलि राजा ॥ इत नो हीं संतोष और मेरे नहिं काजा ॥ मैं संतोषी बन बसूं कोइ यन जानें मोय ॥ तेरो नाम सुन्यें राजा बलि जांचन आयो तोय ॥ करता राम हरि ॥

राजाबचन

पद

तब राजा हंसि कही भुम्मि लै कहा कमें हो ॥ कहा कंचन कहा लाल कहा मुक्ता उपजे हो कहा तुमारी कामना प्रभु मांगो हृदय बिचार नीके बचन सुने राजा बलि सर्वसु डार्यो वार करता रामहरी

वार्त्ता

हे प्रभु मो कूं आप के बचन सुनि कें बड़ी हंसी आवै · हे महाराज तीन पैंड़ धरती लेकें कहा करोगे · कहा हीरा मोती लाल उपजाओगे

श्रीमहाराज कोऊ गाम परगनो रथ हाथी घोड़ा पालकी गौ इत्यादि मांगी होती· तीन पैंड धरती में तो भले प्रकार पायँ पसारि कें सोयो हू न जायगो

ब्राह्मणवचन

पद

कुटी बनाऊं भजन करूं माला फेरूं चार ॥ इ नोहीं संतोष राजा बसूं तिहारे द्वार ॥ करता रामहरी

वार्ता

हे राजन आप को नाम सुनि कें कै या समय में राजा बलि बड़े धर्मात्मा और दानी या भू मंडल में प्रगट भये हैं जो कोई जो कछू काम ना करि कें याचना करिवे कूं जाय है सो मन वांछित दान राजा सूं पावे है बड़ी दूर सूं आ यौ हू सो हे राजन कै तो तीन पैंड धरती दीजि ये नहीं नाहीं कीजिये ॥

राजाबचन

पद

पूछत हैं बलबीर धीर बामन अधिकारी ॥ कहा तुम्हारो नाम ग्राम कहो बिप्र बिचारी ॥ मात पिता भ्राता भगिनी सुत सबही कहौ बिचारी नीके बचन कहे राजा बलि सर्वस डारो बारी॥

करता राम हरी

वार्त्ता

हे भूदेव मेरी यह प्रार्थना है सो आप कृपा करि के बताओ कि कौन सो तो आप को ग्राम है और कहा आप को नाम है और कौन आप के माता पिता हैं सो सब समझाय के मो सूं कहो यह मेरी सुनिबे की इच्छा है

ब्राह्मणबचन

पद

मैं अनाथ को नाथ संग मेरे नहिं कोई ॥ नहीं तात नही मात भ्रात बन्धू नहिं कोई ॥ परदेशी

निर्गुण रहूं कोइयन जानें मोय ॥ त्रिभुवन भू
मि उदार जानि बलि जाचन आयो तोय ॥ कर
ता रामझरी

बार्ता

हे राजन न तौ मेरी माता न कोऊ पिता और
न भ्राता है मैं तौ अतिय परदेसी ब्राह्मण हूं
सो तू तीन पैंड पृथ्वी मो कूं जल्दी दै या में
कुटी बनाय कें परमेश्वर को भजन करूं न-
हीं नाहीं कर ॥

रागदेस

आयो पौरि तिहारी में राजा बलि ॥ चारि वेद मु
ख अग्न पढो हूं मैं ब्राह्मण व्रतधारी

राजाबचन

रागदेस

आये पौरि हमारी बामन ॥ कै लेउ हीरा लाल ज
वाहर कै लेउ अलरव भंडारी ॥

ब्राह्मणबचन

पद

ना लेऊँ हीरा मुक्तायल ना लेउँ अलरव भँडारी
तीन पैंड बसुधा दै राजा या में रचौं धर्म्म सारी
सूरस्याम प्रभु की छबि निरखत चरन कमल ब
लिहारी

शुक्राचार्य्यबचन

पद

मति दे दान जिमी को ॥ याहि मति जानें दुजदे
व बामन ये छलिया गोलोकपुरी को

राजाबचन

पद

दऊंगो दान जिमी को गुरूजी मैं तो ॥ जो ब्राह्मण
भूखो फिर जायगो बिगरै नाम बली को

ब्राह्मणबचन

पद

लऊंगो दान जिमी को रे राजा बलि ॥ धर्मनीक

मुनि आयो राजा लै लै नाम बली कौ

शुक्राचार्य्यबचन

पद

अरे मति दे दान जिमी कौ रे राजा बलि ॥ याही नें हिरनाकुश मार्यौ बनिगयौ सिंह बनी कौ याही नें हरिचंद छल्यौ है धरि कें भेष मुनी कौ राजा बलि मति दे दान जिमी कौ

राजाबचन

पद

द्वारे ठाड़ौ भगरत ब्राह्मण ये फल है करनी कौ

ब्राह्मणबचन

तीन पैंड़ पृथ्वी दै राजा जीतैगो इन्द्रपुरी कौं

शुक्राचार्य्यबचन

याही नें भस्मासुर मार्यौ धरि कें भेष जनी कौ याही नें बृन्दा छलि लीनी धरि कें रूप धनी कौ रे ॥ राजा बलि मति दे दान जिमी कौ ॥

वार्ता

अरे राजा देनी है तो दे दे नहीं तो नाहीं करदै हम काहू दूसरे दाता सूं जाय के मांगें ॥ राजा अजी महाराज तीन पैंड धरती के लिये कहा बचन हारूंगो. तीन पैंड तो जो आपने मांगी है सो लीजिये और आधी पैंड मेरी ओर सूं लीजिये ॥ ब्राह्मण ॥ तो राजा बेगी संकल्प कर

पद

तब राजा संकल्प शुक्र ताहि बरजन आये
लेगो सर्वस छीन देयगो तोहि नर्क पठाये।
छोटो तन याहि मति गिन राजा याते बड़ो न
कोय ॥ मोहन नाथ रमापति स्वामी जो कछु
करै सो होय

राजाबचन

पद

तब राजा हंसि कही नर्क मों नाहिं डरे हों ॥

सर्वसङ्ग लैजाय पीठि में अपनी दे हों ॥ डरें राक या रूठ सों बिप्र न फेस्यौ जाय ॥ धर्म्म रहै तौ सब रहै गुरु धर्म्म गये सब जाय ॥ क रता राम हरी

ब्राह्मणबचन

पद

तू सुनियो रे राजा बलि बसुधा काहू की नाम ई ॥ सतयुग में हेमाचल राजा चारों खूंट मही ॥ अति प्रचंड मही पति राजा वाऊ के संग न गयी ॥ बसुधा काहू॰ ॥ त्रेता में रावण भयौ राजा कंचन कोट मई ॥ राक लख पुत्र सवा लख नाती लकड़ी काहू नें न दई ॥ बसुधा का हू की॰ ॥ द्वापर में दुर्योधन राजा नौलख बीर सही ॥ राक लख योजन ऊंचौ वाकौ छत्र च लत हो मांटी गीध खई ॥ बसुधा॰ ॥ कलि युग में जो कृष्ण भये राजा कंस को राज लई कंस विध्वंस गरद करि डारे गोपिन सुखदई

बसुधा काहू० ॥ सतयुग द्वापर त्रेता कलियुग चारों युग जो सई ॥ कहत सूर प्रभु वेही नर रूठे जिन ये अपनी कही ॥ बसुधा काहू की न भई

ब्राह्मणबचन

श्लोक

चलन्ति मेरु प्रचलन्ति मंदरं । चलन्ति तारा रबि चन्द्रमाश्च ॥ कदापि काले पृथ्वी चलन्ति । सत्पुरुष वाक्यं न चलन्ति धर्म्मः ॥

अर्थ

हे राजन देख मेरु और मंदराचल पर्वत चलायमान हैं और तारागण सूर्य्य और चंद्रमा चलायमान हैं और काहू समय में पृथ्वी इ चलायमान होयगी परन्तु सत्पुरुषन के वाक्य और धर्म्म कभी चलायमान नहीं होयहैं

राजाबचन

इतनी समरु प्रश्न जब कीनों तुरत मंगाइ लई मा

री ॥ आऔ विप्र संकल्प लीजिये ये बसुधा है तिहारी ॥ हाहाकार मच्यौ तिहुं पुर में तब हरि पांव पंसारी

ब्राह्मणबचन

पद

आधो पैंड और दे राजा नहिं जा सत्ते हारी ॥ सत कूं हारूं नाहिं गुरूजी नांपो पीठि हमारी ऐसो दान अब कब २ दैंगे अब हरि भये भिखारी ॥ करता०

सभाजीबचन

पद

नाग फांस लियो बांधि राजा को सत्त जो तो ल्यौ ॥ राजा हो धर्म्म नीक कछू सुखते ना बोल्यौ ॥ रावल में कोई गयो जाय रानी ते बोल्यो ॥ रानी करि अति भक्ति प्रेम सों आरति लाई ॥ आरति करति श्रीपति जादों राई में अति भयो प्रसन्न मांगो इच्छा जो तुमारी

धन्य राज धनि पाट आये तुम से जो भिखारी सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को नित रहौं द्वारह मारी ॥ कर० ॥

ब्राह्मणवचन

पद

मागले राजा तिहुं पुर कों और मांग लेव मति मानी ॥ इन्द्र को इन्द्रासन मांगि लै संत रहे की येही मिजमानी ॥ सोलह सिंगार बत्तीसों भूषण दोऊ कर जारि रहीं सब रानी ॥ अब बारम्बार पुकार कहत हों मांगन होय सो मांग लै रानी

रानीवचन

पद

हरियल हाद चले धरनीपति नैकन पांव दियो भुवि माहीं ॥ चकई जैसे रैन कों त्याग चली चन्द कों टरत सुत की नाहीं ॥ कब के तो दानी भये प्रभु तुम मेरे द्वार पसारत बाहीं

अब बारम्बार पुकारि कहत हों मंगता पै हम मांगत नाहीं

शङ्काचार्य्यबचन

पद

बल छल प्रभू कहा तैने कीना रे ॥ बांधन गये आप वंधि आये कौन सयानप कीना रे मारन गये लंकपति रावन राज विभीषण दीना रे ॥ जहां की बातें तहां वैसा ही कीना रे दरवाजा दीना रे ॥ देखि स्वरूप मुदित मन दोनों रानी राव सुख दीना रे ॥ अग्र दास पद पंकज पर के भक्ति कृपा कर भीना रे

वार्त्ता

अरी रानी हम तो पै अत्यन्त प्रसन्न हैं जो तेरे जी में आवै सो मांग लै. रानी. अजी महाराज मैं आप सूं यही बर मांगूं हूं मेरे पति कूं छोड़ि देउ और मेरे द्वार पै १२ महीना

विराजौ और नित्त्य दरसन दियौ करौ ॥

रानी तथास्तु

स्तुतिरानी

छन्द

सुनि बचन बामन के नृपति तब पर्यौ चर नन धाय कें ॥ पद एक नापी पीठि मेरी लियौ प्रभु अपनाय कें ॥ अभिमान में ना ज्ञान कीनों चीनों ना पद पाय कें ॥ अब दीनबंधु दयाल हैं कें दास अपनों जानियें ॥ अपराधमेरे क्षमा कीजे प्रीति उर पहिचान कें

वार्त्ता

अरे राजा हमनें तोकूं पाताल लोक को राज दियौ

दोहा

लीला रसिक बिनोद की बलि बामन सम्बाद ॥ पढै सुनें नित सुख लहै नासै सकल बिषाद

इति श्रीबलिलीला श्रीजगतनारायण
जी संग्रहीत समाप्तम
शुभम्

अथ श्रीमोरध्वज लीला श्रीजगत
नारायणजी संग्रहीत
प्रारम्भ

दोहा

श्रीगणपति को सुमिरि के गुरु कों शीश नवा
य ॥ मोरध्वज लीला कयूं श्रीकृष्ण यश गा
य ॥

दोहा

प्रेम भक्त को कहत हूं सुनों रसिक दे कान ॥
मोरध्वज लीला होयगी ये निश्चय कर जा-
न ॥

चौपाई

यज्ञ करन को बैठ्यो राजा ॥ ब्राह्मण पंडित

जोरि समाजा ॥ भक्तिभाव ताके अति भारी।
धर्म्म धुरंधर अति बल धारी ॥ उत में पांड
व यज्ञ रचाई ॥ कृष्ण सहित बैठे दोउ भाई
स्याम कह्यो अर्जुन समझाई ॥ अश्व संग
जावो तुम भाई ॥ बचन मानि प्रभु को तब
लीनों ॥ घोड़ा संग आप चलि दीनों

समाजीबचन

दोहा

रतन कुंवरि ते भूप ने कही बात समझाय
घोड़ा के संग जाय के फेरी लाओ कराय ॥

कुंवरबचन

दोहा

आज्ञा दीनी आपने लीनी शीश चढ़ाय ॥ ब
ड़ुरि चाप करमें लियो चरणन शीश नवाय।

राजाबचन

दोहा

जो तो कूं रोके कोई मेरो धरियो ध्यान ॥ सु

फल मनोरथ होयंगे सिर पै श्रीभगवान ॥

समाजीवचन

चौपाई

इत सों अर्जुन सन्मुख आये ॥ उत सों रतनकुंवर ह्व धाये ॥ पूछत अर्जुन को तुम भाई ॥ नाम गाम कहिये समझाई ॥ कैसे तुम सनमुख चले आवौ ॥ अश्व फेरि घर कूं चले जावौ जो तुम बात मानि हौ नाहीं ॥ तौ मारत हूं देर कछु नाहीं

कुंवरबचन

दोहा

सात बरस के कुंवर हैं बोले बचन समारि। मैं घोड़ा नहिं फेरि हों तुम्हरौ कहा बिचार

चौपाई

मोरध्वज हैं पिता हमारौ ॥ अश्व फिरावन इत पग धारौ ॥ रतन कुंवर फिरि है अब नाहीं ॥ भलें करौ तुम युद्ध मन भाई ॥ अरे-

लाल तू मानत नाहीं ॥ आय गयी तेरी मौत दि
ठाई ॥ मेरी बात मानि अब लीजे ॥ उलटि पांव
पीछे कूं दीजे

दोहा

इतनी सुनि के कुंवर ने लीनों बान चढ़ाय
अरे सठ तें जान्यों नहीं दीनी शर बढ़ाय

चौपाई

दौनों युद्ध करें अति भारी ॥ अपनी २ घात बि
चारी ॥ कुंवर बान इक ऐसो मारयो ॥ मूर्छि
त अर्जुन भयो अपारो ॥ तबही कुंवर भवन को
आयो ॥ आय पिता को शीश नवायो ॥ ७

सोरठा

सुनों पिता इक बात घोड़ा लाये फिराय इस
युद्ध भयो अति भार मग में अर्जुन ते बहुत

अर्जुनबचन

दोहा

भारत में बहु युद्ध करि राजा जीते अनेक ॥

अब हार्यो सो कहा भयो बालक राखी टेक

कृष्णबचन

दोहा

भक्ति बड़ी संसार में करै सो पावै जीत ॥
अरजुन तुम बौरे भये यही हमारी रीत ॥

अर्जुनबचन

दोहा

मैं तुम ते बिनती करूं सुनों सबै चित लाय
या कलियुग में आपनों दीजे भक्त बताय।

कृष्णबचन

दादरा

नाहक भक्त सतावैरे अर्जुन ॥ टेक ॥ मोरध्वज सतबादी राजा क्यों चाहि त्रास दिखावो यह हठ छांडि देउ तुम चित मों पूरी यज्ञ करावो ॥ स्याम सखी चरणन की चेरी बिमल कृष्णगुण गावो

अर्जुनवचन

दादरा

मेरे चाह अति भारी प्रभुजी ॥ टेक ॥ देखोंजाय मोरध्वज राजा कैसो है मतधारी ॥ करि के कृपा वेगि अब चलिये मन कूं नहीं करारी ॥ श्याम सखी कूं देउ यही वर भव के जाल निरवारी ॥ प्रभु०

कृष्णवचन

दोहा

अति पुनीत है मोरध्वज दयावंत गुणवान
नाहक ऐसे भक्त कों क्यों कीजे हैरान ॥

वार्त्ता

हे अर्जुन भक्त कों सतावनो अच्छो नहीं

चौपाई

बहुत भांति समझायो तोकूं ॥ एक नमानी सोच है मोकूं ॥ चलि अपनो तोय भक्त दिखाऊं ॥ तेरे मन सन्देह मिटाऊं ॥ फकीर बनी को सिंह

जो प्यारे ॥ वह आवेगो काम तिहारे ॥ अपनों भेष भगोंड़ा कीजै ॥ राजा की नगरी पग दीजै

अर्जुनबचन

दोहा

कहा कारण जोगी बनों क्यों पकरें बनराय
मेरे मन संसय भयो सो दीजे समझाय ॥

कृष्णबचन

दोहा

अब हम तुम तीनों चलें वा भूपति के द्वार
राजा ते जाके कहें भोजन हैं दरकार

चौपाई

दोनों ने जब भस्म रमाई ॥ कसि लंगोट जटा लटकाई ॥ साधू कीसी सुरति बनाई ॥ छलन चले भूपति के तांई ॥ चलत फिरत बन में पग दीनो ॥ पकरि बनी को सिंह जो लीनों ॥ चलत चलत नगरी में आये ॥ जाय भूपति घर बचन सुनाये

दोहा

सुनत बचन दरपाल के चले मोरध्वज राय
साधू के पायँन परे हाथ जोरि सिर नाय

कृष्णबचन

दादरा

हम ने सुनें ब्रतधारी रे राजा ॥ टेक ॥ सब नग-री में पूछत २ आये हैं तो द्वारी ॥ भूखे प्यासे तीन दिना के लंघन कीये भारी ॥ पहले फिकर करो तुम या की हमरो सिंह सिकारी ॥ रसिकश्याम ऐसें कहि भाखत हम साधू ब्रह्मचारी

मोरध्वजबचन

दादरा

तुम्हें अब पूछत हूं एक बात ॥ टेक ॥ कौन शिकार खायगो केहरि कहिये मोसें नाय ॥ अब ही भेजि देउं मैं सेवक दाम जो देहउं हाथ ॥ पीछे कहो भोजन अपने को रसिक स्याम ब-लि जात

कृष्णबचन

दोहा

राजा जो तुमने कही सो नाहीं दरकार ॥
निजसुत आधौ चीरि के देउ केहरि को डार

चौपाई

सुत कूं चीरि डारि देउ आगे ॥ ता पीछें भोजन हम मांगें ॥ आरा लेउ दोऊ नरनारी ॥ जग में नाम होयगो भारी ॥ आंसू गिरन नहीं इक पावै ॥ ऐसी करो साध मन भावै ॥

राजाबचन

चौपाई

आज्ञा होइ सोई करवाऊं ॥ तनक नहीं अब देर लगाऊं ॥ इतनी पूछत हों मैं तुम सों ॥ और चीज सब कहिये मोसों ॥ तन मन धन सबही ये तिह्मरो ॥ मोय चीरि केहरि कूं डारो ॥ एक पुत्र प्रभु मोको दीनों ॥ सो काहे मांगत रंग भीनों

कृष्णवचन

दादरा

अहो नृप दैदेउ साफ़ जवाब ॥ टेक ॥ फिरि जायं द्वारे ते अबही क्यों तू देर लगावै ॥ व्याकुल भये भूख बस देखौ बात कही ना जावै स्याम रसिक कहै माल खजाने हम कूं नहीं कुछ भावै

राजावचन

चौपाई

रानी को नहिं मोय भरोसो ॥ आज्ञा होय तो पूछों उन सों ॥ देर नहीं कछु मेरे तन की ॥ रानी ते पूछों सब मन की ॥ वा कूं दउं तुरत समझाई ॥ सुफल मनोरथ करि हों आई ॥ यह कहि राजा महलन आयौ ॥ रानी कूं यह बचन सुनायौ

दोहा

हे रानी गुनमंजरी तुम हो चतुर सुजान

साधू आये द्वार पै लीजो उनकी मान

चौपाई

हे रानी कछु कही न जाई ॥ ऐसी बात कठिन बनि आई ॥ दो साधू इक सिंह है आगें ॥ तेरौ सुत केहरि कूं मांगें ॥ ७

रानीबचन

दोहा

माल खजाने बहु घने करौ सबै बकसीस
ऐसो साधू कौन है मांगे सुत कौ सीस

राजाबचन

दोहा

भेष बनायौ साधु कौ मांगन आये द्वार
कपटी हो चाहे शुद्ध मन हमकों सब

इकसार

चौपाई

जो उन कों द्वारे से टारों ॥ होयगो जग में अपयश भारौ ॥ जप तप धर्म सबै घटिजाई

यह तुमरे मन खोटी आई

रानीबचन

दोहा

तौ कहा निज सुत मारि के देउगे उनकूं आप
मैं विष खाय मरिजाउंगी तुम कूं होयगो पाप

चौपाई

आज तुमारी बुद्धि बिहानी ॥ मारो पूत बड़े तुम दानी ॥ धन भोजन देवौ अधिकाई ॥ जो नहिं लैयं भले फिरिजाई ॥ बिन संतति या जग के माहीं ॥ धक जीवन है तुमरे ताईं ॥ ७

राजाबचन

दोहा

संग काहू के ना गयौ धन जोबन और माल
संग गयौ हाथन दियौ यही जगत की चाल

दादरा

रानीबचन

सुनि २ फाटै छाती ये बातें ॥ टेक ॥ पुत्र बिछो

यों करो पिया तुम कितनों में समझाती ॥ पूत नहीं दो चार हमारे नहीं भयो कोई नांती ॥ स्याम रसिक बिन कौन सहायक नहीं मेरी पार बसाती

राजावचन

दोहा

इतनी सुनि भूपति कहै नैनों आंसू डार
तुम ते हम को अधिक अति प्यारो रतन कुमार

कुंवरबचन

दोहा

हे माता क्यों रोवती कहा दुख व्याप्यो तोहि
यह क्यों धारयो मौन है बेगि बताइ दे मोहि

माताबचन

दादरा

लाल तेरी आयगयी मौत निमानी ॥ टेक ॥ पिता तुमारे अति समझाये मेरी एक न मानी ॥ अ

ब तुम कूं हम हायन मारें फेरि न सूरति पानी रसिक स्याम बिन कौन सहायक करता नें कहा ठानी

कुंवरबचन

दोहा

जो मैं मांग्यौ साधनें तौ मति रोवै माय ।
कहां हमारे भाग हैं मिंह साधु मोहि खाय

रानीबचन

दोहा

अग्नि बुरी है पेट की सुनों हमारे लाल
जिन के बालक बीछुडे ध्रक जीवन धन माल

कुंवरबचन

दादरा

सोच करो मति मात हमारी ॥ टेक ॥ साधुन के अरपन करि दीजे मानों मेरी बात ॥ ता दिन कछू नहीं बनि आवै यम पकरेंगे हात ॥ रसि

क स्याम कहै मानों मेरी बखत टरयौ अवजा
त॥७॥

मातावचन

दोहा

हाय दई कैसी भई अधिक बढ़ी तन पीर
बेटा तोहि बिसारि के कापै धारूं धीर॥

समाजीबचन

दोहा

रतनकुंवर और मोरध्वज रानी उन के संग
तीनों ने महाराज कूं आय नवायो अंग॥

रानीबचन

दोहा

आज्ञा पाऊं नाथ जी निज तन डारूं चीर
अपनी काया मारकर केहरि कूं दऊं नीर

चौपाई

पांच बरस कौ पुत्र हमारो॥ भूखो रहैगो सिं
ह तुम्हारो॥ मेरो भोजन करै अंघाई॥ सुत तें

पेट भरेगो नाहीं

साधूबचन

दोहा

भूखो रहेन केहरी या को यही अहार
अपने सुत कूं चीर देउ अब क्यों करो अ
वार

दोहा

तुम दोनों मूरख भये हमें करो हैरान
हम उलटे फिर जायंगे छोड़ो तुमरो
दान

रानीबचन

चौपाई

इतनी सुनि के बोली रानी ॥ रिस कूं छांड़ो सा
धु ज्ञानी ॥ अपने सुत कूं मारि गिरावें ॥ करें बे
गि नहीं देर लगावें ॥ इतनी कहि कें लैलयो
आरा ॥ अपने पति सों बचन उचारा

दोहा

एक बात में कहति हों सुनों मेरे भरतार
धीरज मन में राखियो देखत हैं करतार

राजावचन

दोहा

तुम रानी राजी रहो नहीं इसमें कुछ सोच
तुम धीरज मन में धरो तजो सोच संकोच

मातावचन

दोहा

मातपिता के लाडिले प्यारे रतन कुमार
मन में धीरज राखियो तजि सब सोच बि
चार

पुत्रवचन

दोहा

पुत्र कहै माता सुनों मति मन में बिलखाय
धनि २ यह दिन आज को तन साधुन कों जाय

चौपाई

मेरी मुक्ति तुरत है जाई ॥ तुम्हें जगत में मिलै ब
डाई ॥ तेरे पुत्र दूसरो होई ॥ लिखी कर्म मेटैन
हि कोई ॥ करो काम मति देर लगावो ॥ मन ते
शोक दूरि बिसरावो ॥ देखत हैं सब सुर मुनि
ज्ञानी ॥ खैंचत आरा राजा रानी ॥ हमरी लाज
राखि गिरधारी ॥ रोवत हैं यह परजा सारी ॥
सब सों रानी कह समझाई ॥ सिर पै ठाड़ो कुंव
र कन्हाई ॥ गिरी फांक द्वै धरनी आई ॥ ताकी
छबि कछु बरणि न जाई ॥

साधूबचन

दोहा

केहरि कूं देउ दाहिनों अंग कुंवर को खाय
बायें अंग उठाय के धरो महल में जाय

चौपाई

साधू ने यह बचन उचारो ॥ दायें अंग केहरि
कूं डारो ॥ बायें धरो महल में जाई ॥ रसोई की

त्यारी करवाई ॥ रानी ने चौका लगवायो ॥ रा
जा गंगाजल भरिलायो ॥ अर्जुन हरि की तपे
रसोई ॥ रानी बैठि चौकसी होई ॥ मति कोई
नीच वहां चलि आवै ॥ या भोजन में विघ्न म
चावै ॥ बहुत भांति अपनों मन मास्यौ ॥ शोक
पुत्र कौ टरे न टारो ॥ हियो लर्जि के फाटी छा
ती ॥ नैनन सूं आंसू भरिलाती ॥ तब साधू
मन क्रोध उपायो ॥ ये राजा कूं बचन सुना
यौ ॥

समाजीवचन

दोहा

तब साधू चलि उठि परे क्रोधवंत मनमाहिं
राजा बेईमान को भोजन जैमें नाहिं ॥

दोहा

हाय २ राजा कोरे कर्त्ती कैसी कीन ॥ पहलेमा
स्यौ पुत्र कूं लई भक्ति हू छीन

अर्जुनबचन

दादरा

बड़े कों छोटे संत समझावें ॥ मैं सब कहूं बात समझाई क्यों उन्हें त्रास दिखावें ॥ दायें अंग नें कौन पुण्य कियो सिंह साधु को खावे रसिक स्याम फारवाई परी है कोई काम नहिं आवे ॥

कृष्णबचन

दोहा

तुम चतुराई करत हो यह दुख वाकूं नाहिं
याद भई है पुत्र की यों रोई मन माहिं

अर्जुनबचन

दोहा

हम चतुराई ना करें तुमरो हियो कठोर ॥
रानी के मन में नहीं या सिवाय कछु और

कृष्णबचन

दोहा

बड़े संत ने यों कही सुनों साध निरधार
दो हम तुम दो भक्तजन पातर परसो चार

चौपाई

पांचई पातर धरौ बनाई ॥ याके सुत को लेहु बुलाई

साधुबचन

दोहा

साधु कहत हैं भूप ते भोजन भयौ तैयार
अब तुम बेगि बुलाइये निज सुत रतन-कुंवार

राजाबचन

दोहा

हाथ जोरि राजा कहै सुनों गुरु महाराज
सुत सोवै सुखनींद में वो नहीं आवै आज

साधुबचन

चौपाई

क्यों राजा हम कूं बहकावे ॥ गढ़ो २ बात ब-

नावै ॥ जौ लौं पुत्र नहीं तेरो आवै ॥ तब ल गि भोजन को यहां पावै ॥ जो तू कुंवर बुला वै नाहीं ॥ हम यहां ते भूखे फिरि जाहीं ॥ इ तनी सुनि के दीयौ हेला ॥ पुत्र शोक यों कीर मन मैला ॥ रतनकुंवार पुत्र तुम आवौ ॥ इ न साधुन को आनि जिमावौ ॥ जो बेटा तुम आवौ नाहीं ॥ तो साधू भूखे फिरिजाहीं ॥ ७

समाजीबचन

दोहा

सुनि के हेला पिता को आये रतनकुमार
पट आभूषण सोहने सुन्दर सब सिंगार

चौपाई

जब राजा ने पुत्र पहिचान्यौं ॥ सूरत देखि अ धिक भय मान्यौं ॥ मेरो पुत्र कहां ते आयौ ॥ या कूं मैं ने मारि गिरायौ ॥ ना जानूं कछु ऐसा होई ॥ मोहि छलन आयो है कोई ॥ महल न में पहुंचे नर राई ॥ लोय पुत्र की कहूं न पा

ई ॥ राजा कूं साधू ललकारे ॥ आवौ राजा पा-
स हमारे ॥ सब मिलि के तुम भोग लगावौ ॥
अपने सुत को संग जिमावौ ॥ इतनी सुनि आ-
ये भूपाला ॥ मन में हर्षित हिये उजाला ॥ बो
ले राजा मीठी बानी ॥ बात हमारी मानों रानी
मेरे भागि कहां हैं प्यारी ॥ जो घर आवें आपमु
रारी ॥ तेरे घर में भोजन पावें ॥ बड़े भाग ऐसे
फल पावें ॥ पवन करे भूपति की नारी ॥ जें
वत हैं अर्जुन गिरधारी ॥ जैमनझूठ के हैगये ऐ
से ॥ सूरज और निशापति जैसे ॥ सुन्दररूप
स्वरूप विशाला ॥ पायं पदम गल मोहन मा-
ला ॥ सुनों मोरध्वज मेरे प्यारे ॥ तुमतेराजी चि-
त्त हमारे ॥

कृष्णबचन

दोहा

बिष्णु कहें भूपाल ते सुनों भक्तजन बात
चाहो सो बर मांगिये रहो प्रसन्न दिनरात

राजावचन

दोहा

कहा मागूं मैं नाथजी सब कछु दीयो आप
दरसन करते ही गये जन्मजन्म के पाप

बिष्णुबचन

चौपाई

जो नहिं मांगत हौ नरराई ॥ तो अब आप देहुं मन भाई ॥ अर्जुन ने राजा समझायो ॥ तब राजा ये बचन सुनायो

राजावचन

दोहा

अपने श्रीमुख ते प्रभू कीजे कौल करार
जब मागूं बरदान मैं अपनो हाथ पसार

छन्द

अब कहा मांगूं नाथ मैं प्रभु आप नें सब कुछ दियौ ॥ धन्य यह दिन आज को करि के दरस उमग्यो हियो ॥ तुम ने प्रभु मोहि बहुत जांचो

भक्त अपनों जान के ॥ आपने ही लाज राखी द
या उर बिच आन के ॥ यही मांगत नाथ मैं बर
दान प्रभुजी दीजिये ॥ या कलि के बीच में अ
ब ऐसो भक्त न लीजिये ॥ रसिक स्याम यह क
रत बिनती चरण सीस नवाय के ॥ सदां भक्ती
चित रहे अब दास लेउ अपनाय के

सभाजीबचन

दोहा

यह लीला अति प्रेम की कही स्यामजन गाय
जो नर यह रस चाखि है भवसागर तरिजाय।

इति श्रीमोरध्वज लीला श्रीजगत
नारायणजी संग्रहीत
समाप्तम्

अथ श्रीमालिन लीला श्रीजगत नारायणजी संग्रहीत लिख्यते

समाजीबचन

दोहा

एक समें नंदलाड़िले कीनों मन अभिलास
मालिन रूप बनाय कें चलिये प्यारीपास
रूप अनूप बनाय कें डलिया अधिक सजाय
बरषाने में आय कें बोली अति हरषाय

श्रीकृष्णबचन

पद

कोई फुलवा लेउरी फुलवा ॥ नील बरन पीरे पचरंगी बरन २ के हरवा ॥ कोई चुन २ कली चमेली चटको दोना मरुवा ॥ कोई फुलवा० ॥ ललित किशोरी बिमल २ भई । पर्यो पियरवा गरवा ॥ कोई०

सखीबचन

पद

एरी एक मालिन पौरी आई ॥ टेक ॥ नानावि
धि के फूल बतावै तुमरे कारन लाई ॥ रंग सा
मरो वा मालिन को नीलमणी की गांई ॥ एरी
एक मालिन० ॥ हीरा लाल जवाहिर पहरें बड़े
गोप की जाई ॥ तुमरी रुची होय तो प्यारी अब
ही लेहुं बुलाई ॥ एरी एक० ॥ सूरस्याम कह
त सब ग्वालिन ऐसी देखी नाईं ॥ एरी एकमा
लिन पौरी आई ॥

वार्ता

अरी सखी बेगी बुलाय ले

प्रियाजीबचन

मालिन मद भरे नैन रसीले ॥ कहो कौन है ता
त तिहारो कौन तिहारी माई ॥ कहा सुन्दरी
नाम तिहारो कौन गाम ते आई ॥ मालिन
मद भरे नैन

कृष्णबचन

पद

अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई।
स्यामसखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई
मालिन मद०॥

प्रियाजीबचन

पद

तुमरो रूप देखि मन उमग्यो सुनि मालिन की
जाई॥हम लेंगी सब वस्तु तिहारी कहो कहा
कहा सौदा लाई॥मा०

कृष्णबचन

पद

चम्पाकली चमेली मालती फूल बहार बनाई
सेवती गुलाब सुमन के झुमका तुमरे कारन ला
ई॥मालि०

प्रियाजीबचन

पद

कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित बरसानें आई ॥ कौन बतायो नाम हमारो किन यह गैर बताई ॥ मालि०

कृष्णबचन

पद

तीन भवन में सुजस प्रगट है और तुमरी ठकुराई ॥ राधा नाम रूप की रासी सो वृषभान की जाई ॥ मालि०

प्रियाजीबचन

पद

चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई ॥ फूलन हार बन्यौं अति सुन्दर और कहा तू लाई ॥ मालि०

कृष्णबचन

पद

सुन्दर तेल फुलेल उबटनों अतर सुगंधि मिलाई ॥ जो रुचि होय सो लेउ मेरी प्यारी बेरभ

ई मोय आई॥मालि०

प्रियाजीबचन

पद

बेर २ तू मति कीरे मालिन देहों माल अघाई हीरा लाल रतन मणि माणिक भूषण बसन मंगाई॥मालि०

कृष्णबचन

पद

बड़े घरन की मालिन हूं मैं धन की रुचि मोहि नाहीं॥ हम सौदागर प्रेम रतन की और न कछू सुहाई॥मा०

प्रियाजीबचन

पद

फूल फूल की बेचन हारी कहा अधिक इतराई॥ लेउ २ फूल कहत कुंजन में हम सों करत बडाई॥मालि०

कृष्णवचन

पद

सुकृत जन्मफल तेरो भामिनि हमरे फूल सुहाई पचि २ हारिगये सुर नर मुनि ऐसे फूल न पाई ॥

मालिन॰

प्रियाजीवचन

पद

इन फूलन कों खोजि थकित भये सुरनर मुनि प ति राई ॥ ऐसे फूल कहो मृगनैनी कौन बाग ते लाई ॥ मा॰

कृष्णवचन

पद

त्रिभुवन पति जगदीश दयानिधि नंदसुमन य दु राई ॥ वा मोहन के बाग ते प्यारी नवल फूल चुनिलाई ॥ मालि॰

प्रियाजीवचन

पद

सुनतहि नाम मदन मोहन को बेस बदन मुसिकयाई ॥ आज की रैन रहो घर मेरे भोर भये उठि जाई ॥ मालिनि०

कृष्णवचन

पद

सांची प्रीति देखि प्यारी की मंद २ मुसिकयाई । यह छबि देखि मगन भये सुरमुनि सूर सरन बलि जाई ॥ मालि०

दादरा

मेरी फुलबगिया में तुम चलो प्यारी ॥ टेक ॥ गैंदा गुलाब गुलडोरी की कयारी ॥ केशर की फूली बहारी ॥ चम्पा चमेली गुलाब केवरो फूल रही फुलवारी ॥ सबही सिंगार कियो फूलन को ललित किशोरी पर बलिहारी ॥

रागकालिंगडा

राधा तेरे अंग मे फूलन की बहार है ॥ टेक ॥ फूलन के बाजूबंद फूलन के गजरे फूलन को हार

है ॥ दोनामरुआ रायचमेली मब फूलन में गु
लाब है ॥ सूर ही श्याम कहें मनमोहन सबगो
पिन में गुपाल हैं ॥ राधा तेरे अंग में फूलन
की बहार है ॥

दादरा

मालिन आज लाई हार बनाय के ॥ रमे मा
लिन सुघड़ बहुत है तू तो आज लाई हार ब
नाय के ॥ मबही सिंगार कियौ फूलनकैं अरु क
हा कहूं तेरो वृत्तान्त आज लाई हार बनाय के
बांह बरा बजूबंद सोहै करनफूल की जोरी
चूम २ छननन और कहा कहूं तेरो वृत्तान्त
आज लाई हार बनाय के

बार्त्ता

हे प्यारे बड़ो छल कियो · हे प्यारी तुमनें हूं
तो छल कियो

मालिन बचन

पद

प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियां ॥ मेरी फुल ब
गिया में तुम चलो प्यारी बहुत दिनन से आस ल
गी है ॥ सींच २ भई भामिनियां ॥
सुफल करौ पद पद अंकुश दे आली किशोरी
भामिनियां ॥ २

सांची प्रीति देखि प्यारी की मैनकी रैन ठहराई
यह छबि देखि मगन भये सुर नर मुनि स्वरदा
स बलिजाई ॥

रेखता

मन हीर लियो है मेरो वा नन्द के दुलारे ॥ मु-
सिक्याय के अदां मों नैनों के करि इसारे ॥
मन० १॥
इक दृष्टि ही में वा नें जानें कहा कियो है ॥ नहिं
रैन चैन दिन में वा के बिना निहारे
मन० २॥
चीरा के पेच बां के सिर मुकट झुकि रह्यो है ॥
कटि किंकिनी रतन की नूपुर बजा रह्यो है ॥

मन०॥

बेसरि बुलाक सो हैं गल मोतियों की माला॥ कं
कन जड़ाऊ कर में नख चंद सो उजारा॥

मन०॥

छवि देत आरसी में सुन्दर कपोल दोऊ॥ बर
छी समान लोचन नई मान पै संवारे॥

मन०॥

फूलों के हाथ गजरे मुख पान की ललाई॥
कानों में मोती वाले कुंडल हू झलकें न्यारे

मन०॥

लखि स्याम की निकाई सुधिबुधि सकल गं
वाई॥ बौरी बनाय मोकों कित गयौ बंसीवारे

मन०॥

जंतर अनेक मंतर गंडा तबीज टोना॥ स्याने
तबीब पंडित करि कोटिजतन हारे॥

मन०॥

नारायण इन दृगन ने जब सों वह रूप देखा

तब सों भये हैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥

मन० ॥

इति श्रीमालिन लीला

समाप्तम

अथ प्रह्लाद लीला

दोहा

श्रीगणपति को सुमरि के गुरु को सीस नवा
य ॥ प्रह्लाद लीला कहूं सकल सभा में गाय

सभाजीबचन

कंबित्त

राम गुन गायो ना गमाये तेनें तीनों पन । होयगो
सहाय तेरो कौन पुन्य आय के ॥ साधुन की संग
ति सों मान्यों तैनें बैर भाव कियो है कुसंग सदा
चित्तसों लगायकें ॥ धायो ना धमक वृन्दा
बिपिन की गलियन में पायो ना प्रसाद जायकें । कह
त हरिदास तोय लाजहू न आई मन गयो ना सरन
त श्री बिट्ठलेश रायकें

सरस्वतीबचन

दोहा

सुमिरन कीनों कौन हित तुम मोकों करि ध्यान
यथाअर्थ मुख सों कहो स्वास्थ प्रगट बखान
मांगो सोई देउंगी मन भावत बरदान ॥
अति प्रसन्न मो चित भयौ देखि भक्ति सन्मान

दादरा

सुनि लेउ नगर निवासी अरे तुम ॥ पढ़न जाओ प्रहलाद संग सब राम नाम लेउ धारी ॥ नग्र० हिरनाकुश के मारन कारन होंगे नरसिंह अवतारी ॥ माखन चोर दास यों भाखत यह कहि भवन सिधारी ॥ नग्र सब सुनिलेउ बात हमारी ॥

वार्त्ता

अरे नगर निवासियो तुम सब प्रहलाद के संग राम नाम उच्चारण करो· यासों हिरनाकुशके

मारिवे के लिये श्रीन्रसिंहजी अवतार लें तुमारी मनोकामना पूरी होय

समाजीवचन

पद

शिव पूजत हिरनाकुश राजा ॥ पान सुपारी पुष्प फूल कर मांगत वर निज आपने काजा ॥ शिव० ॥

वार्त्ता

हे शिम्भू भोलेनाथ कैलाश के वासी हे विश्वनाथ· आप सूं यही बर मांगूं हूं के दिन में मरूं न रात में मरूं· घर मरूं न बाहर मरूं· धरती में मरूं न आकाश में मरूं· तीर सूं मरूं न तरवार सूं मरूं· अस्त्र सूं मरूं न शस्त्र सूं मरूं· आप की पैदा करी भई काहू चीज सूं न मरूं

शिवजी । राजन तथास्तु

हिरनाकुशवचन

पद

बैठि सभा राजा सुख पायौ ॥ मंत्रिन कों हिरनाकुश राजा या बिधि बचन सुनायौ ॥ बोलि ल्येउ सुत बेगि भवन ते मति कहुं देर लगाओ ॥ आज्ञा पाय चल्यौ जब मंत्री नृप सुत टेरि बुलायौ ॥ सुनत बचन प्रहलाद ताही छिन राउ निकट चलि आयौ ॥ कुमर प्रमोद महासुख मान्यों आनंद उर न समायौ ॥ बिबिधि भांति दुलराय प्यार सों अपने ढिंग बैठायौ ॥ कुमर प्रमोद मनोहर बानी गुरु संग पढ़न पठायौ

वार्त्ता

पिता मैं नैक खेलि आऊं· तब पढ़िबे जाऊंगो अच्छो पुत्र खेलि के जल्दी आय जा· प्रहलाद· अरी कुम्हारी ये बिल्ली क्यों बिल्लाप करि रही है ॥

कुम्हारीबचन

दादरा

अर्ज मेरी सुनि लेउ राजकुमार ॥ याके पुत्र च ढे अरनी में राम बचावन हार ॥ अर्ज मेरी सु० राम नाम है सत्य कुमर जी भूंगे सब संसार ॥ अर्ज मेरी० ॥ माखनचोर दास यों भाखै मेरे रा म नाम आधार ॥ अर्ज मेरी सुनिलेउ राजकु मार

प्रहलादबचन

दादरा

रामनाम मति लेउ मौति ने घेरी कुम्हारी ॥ का लजो तुमरे सिर पर आयो आय गयी दशा तिह्रा री ॥ मौति ने० ॥ रामनाम को बाद न कीजै ली जै समझि बिचारी ॥ मौति ने घेरी कुम्हारी ॥ सूरश्याम प्रभु रसिक शिरोमणि मेरौ पिता ब लधारी ॥ मौति०

वार्त्ता

अरी कुम्हारी तू राम कौ नाम भूलि कें हूं मति लीजो जो कहूं पिता सुनि पावेंगे तौ तो कूं जान सूं मरवाय डरवावेंगे। कुम्हारी। अजी कुमरजी महाराज मेरें तौ श्रीरामनाम कौ ही आधार है। प्रह्लाद। अरी जब तेरौ अवा उतरै तब हम कूं बुलवाय लीजो हम हूं देखेंगे तेरौ राम कैसौ है॥

कुम्हारीवचन

पद

कुम्हारी मन में अति संकोच चली प्रहलाद बुलावन आई॥ड्यौढ़ी पै ठाडी भई अर्ज वानें रगसी जो लगाई॥ तुम सुनिये राजकुमार मेरौ अवा उतरत है आज चलौ वेगि मति करौ देखरभ ईभर्ग। कुम्हरी मन में अति शोच चली प्रहलाद वुलाबन आई॥

वार्त्ता

अरी कुम्हारी अब तू बताय वो बच्चा कहां है

कुम्हारी। अजी महाराज ये रहे अपनी मैया को दूध पीरहे हैं॥

प्रहलाद- अरी कुम्हारी तेरौ रामनाम निश्चें मां चौ है॥

प्रहलाद- पिताजी नमस्कार।

हिरनाकुश - कहो प्रहलाद खेलि आये

प्रहलाद- हां पिताजी।

हिरनाकुश- अरे द्वारपाल यहां आ।

द्वारपाल- जो आज्ञा श्रीमहाराज।

हिरनाकुश- अरे हमारे गुरूजी के संडा मर्कट पुत्रन कूं बुलाय ला।

द्वारपाल- अजी संडा मर्कटजी तुम कूं श्रीम-हाराज नें याद कियो है

संडा मर्कट- अच्छौ भैया चलौ

द्वारपाल- अजी महाराज संडा मर्कट दौनों आयं गये

संडा मर्कट- महाराज की जै होय

हिरनाकुश-अरे मंडा मर्कट भैय्या हो प्रह्लाद पढ़िवे योग्य हैगयौ या कूं पढ़ावे को लिये चट शाल कूं लिवाय जाओ ॥

मंडा मर्कट-बहुत अच्छौ महाराज या कूं कहा पढ़ावें

राजाबचन

पद

धर्म्म कौ खंडन पाप कौ मंडन हत्या हृदय बसावौजी ॥ सूरस्याम यों कहते राजा याहि लै चटसारहि जावौ जी ॥ याहि कुल की रीति पढ़ावौ जी

वार्त्ता

अरे भैया प्रह्लाद पढ़ि वे कूं चलो-प्रह्लाद अच्छौ महाराज

गुरुवचन

छन्द

सुनिये सुत वेद पुराण कहें ॥ विद्यासम ना धन

और अहैं ॥ नहिं चोर चुराय सकै न जरै ॥ देश प्रदेश न भूप हरैं ॥ गुण रूप पराक्रम बुद्धि घनी ॥ सुत सेवक बंधु अनेक धनी ॥ बिनु विद्या सो नर सोहत यों ॥ बहु हंसन में इक कागल ज्यौं ॥ तिहि ते सुत विद्या नित्य पढ़ौ ॥ जिहि पावहु राज गयंद चढ़ौ ॥ अस बैन सुने द्विज के जब हीं ॥ प्रहलाद जु बोलि कह्यौ तबहीं

प्रहलादवचन

दोहा

विद्याधन कुल रूप मद प्रभुता यौवन नारि
ये बाधक हरिभक्ति के कह बुध वेद विचारि

पद

कौन सौ शास्त्र पढ़ावै तू पांडे मोय ॥ रामनाम लिखि दे पाटी में वृथा मोहि भटकावै ॥ नीकौ लगै न और मोहि पढ़िवौ रामनाम मोहि भावै ॥ है झूठौ जंजाल और सब सांचौ राम सु-

हावै ॥ रामनाम है मंत्र मनोहर जो सुमिरैं सुख
पावै

मांढ

सुनिये विनय हमारी गुरु कान कान कान ॥ मो
हि राम ही पढ़ावो कह्यो मान मान मान ॥ गुण
शेष कहे शारद कर गान गान गान ॥ सुनि राम
सुयश गावें लै तान तान तान ॥

दोहा

श्रीगुरुदेव कृपा करो सुनों विनय मम
कान ॥ रामनाम जग सार है गावत वे
द पुरान

कहो मान मान मान ॥ मैं निज नाम लियो मन
ठान ठान ठान ॥ छवि राम की मनोहर करि ध्या
न ध्यान ध्यान

दोहा

रामनाम लीयो नहीं कियो न हरि सों हेत
वे नर योंही जायंगे ज्यो मूरी को खेत।

कह्यौ मान मान मान ॥ करौ कोटि जतन कोऊ कहूं आन आन आन ॥ मुख राम कों न तजिहूं यही बान बान बान

दोहा

रामरमा जग सार है सो मन राम सुजान
रामनाम बिसरों नहीं जब लग घट में प्रान
कह्यौ मान मान मान

दोहा

रामनाम की लूट है लूटी जाय तौ लूट
अन्तकाल पछितायगौ प्रान जायंगे छूटि
कह्यौ मान मान मान

पद

सांचो इक रामनाम झूंठो है जगत सब रामगुण पावन पुनीत नित गाइये ॥ आदि राम मध्य राम अन्त हू में राम २ पढ़ि सोई राम नाम-लिखि दरसाइये ॥ राम नाम भिन्न कोई बा

तौ न आवै चित्त मेरे मन राम मोको रामही पढ़ाइये ॥ रामनाम मूरति बसी है मनोहर चित्त पढि सोई रामनाम लिखि दरसाइये

वचनपांडेका

पद

क्यों मन रोस बढावै· कुमरजी पढ़त नहीं जो तोहि पढाऊं ॥ राम नाम नित गावै ॥ बालबुद्धि नहीं कछु तो कीं क्यों नृप कों रिसि आवै ॥ चलौ खैंचि लै चलूं राव पै मनों दुःख अब पावै ॥ परम मनोहर बैन मान तू रिस मति मोहि छुडावै ॥ क्यों०

वार्त्ता

पांडे- अरे प्रहलाद जो तू न मानैंगो तौ तोहि राजा के पास खैंचि लै चलूंगो

प्रहलाद- भलें ही लै चलौ महाराज

पांडे- प्रहलाद कूं लेजाय कें· अजीमहाराज प्रहलाद हमारो पढ़ायो नायं पढ़ै·

राजा- अरे प्रह्लाद गुरुजी पढावैं सो क्यों ना यैं पढ़ै· प्रह्लाद-अजी पिताजी पढूं तोहूं हिरनाकुश- का पढ़ै है - प्रह्लाद-सुनों पिताजी

प्रह्लादबचन

पद

राम नाम उर धार्यौ पिताजी मैनें ॥ कोटि कहौ मैं एक न मानूं जब लग प्राण हमारौ ॥ पिताजी मैं नें राम नाम उर धार्यौ ॥ राजनीति मुख सों नहिं बांचू निस दिन राम उचारों ॥ पिताजी०॥ वाकों दंड नेक नांहि व्यापै जाकों राम सहारौ परम मनोहर नाम राम कौ पल भरि नाहिं बिसारौ ॥ पिता०॥

वार्त्ता

राजा- अरे प्रह्लाद यह दुष्टमति तोकों कौनें सिखायी है· अरे जाको तू नाम लेय है सो तो हमारो परम बैरी है।

प्रह्लाद - पिताजी मेरें तो केवल राम को ना-

म ही आधार है· आप की बड़ी भूल है जो आप राम सों द्रोह करौ हौ।

राजा- अजी गुरूजी या कों रनवास में लिवाय लै जाओ और या की माता सों कहौ याहि समझावै और जो वाहू को कह्यो न मानें तो या कूं विष घोरि के पिवाय दे·

पांडे- अच्छो महाराज· अजी रानीजी महाराज राजा नें प्रहलाद कूं आप के पास भज्यो है और यह कही है कै कैतौ या ते राम को नाम लैवो छुड़ाय देउ और यह आप कौ हू कह्यो न मानें तो या कूं विष घोरि के प्याय देउ·

रानी- अजी पांडेजी यह आप नें कहा कही·

पांड़े- अजी महाराज की यही आज्ञा है

रानी- अरे बेटा प्रहलाद राम हमारो परम बैरी है वा को नाम लैवौ तू छोड़ि दे नहीं तौ तेरे पिता तो कूं मरवाय डारवेंगे

प्रहलाद- माता श्रीराम काहू के बैरी नायं तु

म हू श्रीराम जयराम हरेराम राम राम बार२ कहौं

गनीबचन

पद

अब करूं कौन विधि मैं उपाय - राजा के हिरदें गयी कुमति भाय ॥ मो ते कहत देउ विषसुत कूं पिवाय ॥ सुत के मन राम रह्यौ समाय ॥ याही ते कहौ मो ते न्टप रिसाय ॥ विष देउरी प्याय सुत कूं बुलाय ॥ एक बचन मनोहर न्टप रिसाय

प्रहलाद कूं जहर मो पै दियौ न जाय

प्रहलादबचन

पद

दियौ क्यों अब त्रास जन्म ते दियौ नहींरी ॥ विष भरि कठिनरी घोर फास ॥ माता कियो मन नेक हू न उदास प्याय दीनों ॥ गरल तैंनें बोलि हित सों पास ॥ दाव मो सों लियो कबको कियो बैर प्रकाश ॥ दि

योविष मोकूं इलाहल डरी ना जग हांस ॥ जहर प्याला पियो पय सम राम की निज आस ॥ भयो मन आनंद माता लीना कहु फांस ॥ रामगुन पावन मनोहर करत जो उर बास ॥ ताहि नहिं व्यापत कभू डर मानि मन विश्वास

प्रहलाद बचन

पद

सृष्टि राम को नाम बिमल यश है त्रिभुवन में छायो ॥ सुनिये पिता रामगुन पावन निगम २ निज गायौ ॥ जपत राम शिवजी निसबासर राम नाम मनभायौ ॥ गावत शेष सुरेश राम गुन निज २ ध्यान लगायौ ॥ नित जा के चित रामनाम है सो सुख सहज सुहायौ ॥ राम प्रभाव धारि उर बिधिना सहस राम उपजायो ॥ मन मेरे इ राम रह्यो है घट २ मांहिं समायौ ॥ धावत नित्य मनोहर ना कबहू दुःख पायो

ॐ

वार्त्ता

हिरनाकुश - अरे प्रह्लाद तू न मानेंगो निश्चेआ
ज तेरी मृत्यु आय गयी ॥

पद

अति रिसाय हिरनाकुश राजा ठडो है खड्ग समारो
बोल्यो बचन भृकुटि चढ़ाय पुत्र सों सुनि सुत ब-
चन हमारो ॥ बहुत अनीती करी है तैनें रिपु कौ
नाम उचारो ॥ को है राम प्रगट करि नहिं तो की
हो शीश धर न्यारो ॥ आनि छुडावे लेय तोय है
देखूं कैसो राम तिहारो ॥

पद

मैं देखूं तेरो का बिधि राम बचावै ॥ बांधि ख
म्भ सों ताहि रुजन करै रक्षक क्यों न बुलावै ॥
टूक२ करि डारों खड्ग सों खोज न ढूंढ़े पावै
परम मनोहर नायं कछु बिगरै क्यों जग लो
ग हंसावै ॥

वार्त्ता

राजा - अरे प्रहलाद अबहू मानिजा मेरे रिपु कौ नाम मति ले· नहीं तो या खड्ग ते तेरे टूक २ करिडारूंगो·

प्रहलाद· पितृजी आप हू श्रीराम हरेराम राम राम कहिये·

राजा- अच्छो तो बुलाय तेरो राम कहां है न· हीं तो या खड्ग ते तेरे टूक टूक अबही करें डारूं हूं

प्रहलादबचन

रागमारू

आज मेरी बिपता कौन हरै ॥ लै प्रहलाद ख म्भ ते बांध्यो हरि हरि हरि हरि हरि सुमिरै ॥ संकट कठिन बिपति है भारी नैनन नीर ढरै ॥ मेरो पिता है जन्म कौ बैरी मारहि मार करै ॥ सूंति खड्ग मेरे सिर पर ठाडो मो मन देखि ड रै ॥ कर जोरे प्रहलाद पुकारे धीरज नाहिं ध

रे ॥ आये नहीं प्रभु अंतरयामी यह दुख कौन हरे ॥ भक्तन के प्रतिपालक हरिजी जहां २ भीर परे ॥ लछमण राम सदा चरणन की तुमही सों काम सरे ॥ आज०

दोहा

बसमेरो नाहीं चलै सिंह गाय लई घेर
सभी ठौर रक्षा करी अब क्यों करते देर

पद

लेओ सुध भगवान देत त्रास पिता कठिन अब खड़ग लियौ तान ॥ प्रगट बेगि सहाय करो प्रभु राखो जन के प्रान ॥ संत काज कियौ सदा तुम हरे खल अभिमान ॥ बेगि संकट हरो स्वामी दास अपनों जान ॥ दास की बिनती मनोहर सुनी राम सुजान ॥

दोहा

कह्यो फेर प्रहलाद पितु तुम आखि उघारि
निहारो ॥ मो में तो में खड़ग खम्भ में हर

घट राम उजारो

वार्त्ता

इतने ही में प्रभु नें अति बिक्राल सिंह को रूप धरि खम्भ सों निकसि हिरनाकुश को गोदी में धरि अत्यन्त पैने नखन सों वा को पेट चीरि डारो

प्रह्लाद बचन

स्तुति

करत स्तुति जोरि कर प्रहलाद प्रभुगुन गावही
राम चरित अनन्त तुमरो अन्त भेद न पावहीं॥
हे दीनबन्धु दयाल प्रभुजी दास अपनों जानियें
अपराध मेरो क्षमा कीजे प्रीति उर पहिंचानिये
जय खम्भ फार प्रगट भये नरसिंह रूप कृपाकरी॥ असुर हिरनाकुश हन्यों छिन में बिपति जन की हरी॥जय भक्त हित अवतार लीनों लीला मनोहर करत हौ॥ दास अपने पै कृपा करि सकल दुख प्रभु हरत हौ

वार्त्ता

हे प्रहलाद तो पै मैं अति प्रसन्न भयो जो इच्छा होय सो बर मांग.

प्रहलाद- हे दीनबन्धु हे दयासिन्धु हे पतित पावन आप के दर्शन मात्र सों मेरी सकल कामना पूर्ण भई अब आप सूं यही बर मांगूं हूं के पिता हिरनाकुश कूं आप बैकुंठ धाम दीजिये

न्रसिंहजी- अरे प्रहलाद और कछू मांग मैं तो पै अत्यन्त प्रसन्न हूं तू मेरो परम भक्त प्रगट भयो है

प्रहलाद- हे क्रपानिधे आप की भक्ति सदैव मेरे हृदय में बनी रहे

न्रसिंहजी तथास्तु

इति श्रीप्रहलाद लीला

समाप्तम्

अथ श्रीगोवर्द्धन लीला

लिख्यते

ब्रजबासीबचन

रागमल्हार

देखो माई बादर की बरआई ॥ मदनगोपाल धर्यो कर गिरवर इन्द्र ढीठ झर लाई ॥ जाके राज्य सदां सुख कीनों ता कों शमन बड़ाई ॥ सेवक करे स्वामि सों झगरे इन बातन पतिजाई ॥ इन्द्र ढीठ बलि खात हमारो देखो अकिल गंवाई ॥ सूरदास तिन कों का को डर जिहिं बन सिंह कन्हाई

रागबिलावल

राखि लेहु गोकुल के नायक ॥ भीजत ग्वाल गाय गोसुत सब विषम बूंद लागत जनु सायक ॥ बर्षत मूसरधार सेनापति महामेघ मघवा के पायक ॥ तुम बिन ऐसो कौन नन्दसुत यह दुख दुसह मेटिबे लायक ॥ अघ मर्दन

बक बदन बिदारन बकी बिनासन सब सुख दायक ॥ सूरदास तिन को कावौ डर जिनके तुम से सदां सहायक

रागलावनी

सांवरे शरणागति तेरी ॥ इन्द्र ने आय ब्रज घेरी देखोजी यह बादर मिलि आये ॥ दामिनी दमकत झरलाये ॥ मेघ भरि जल कों बरसावें ॥ भाग अब कहां किते जावें ॥

दोहा

कहोजी अब कैसे बने पर्यौ इन्द्र सों बैर
कोप्यो है पृथ्वी को पालक होगी का बिधि खैर ॥

जुगत हम बहुतेरी हेरी ॥ सांवरे शरणागत तेरी

कही हम तुमरी सब मानी ॥ भेट गिरवर की मन ठानी ॥ इन्द्र की झूंट सभी जानी ॥ लखी हम तुमरी नादानी ॥

गोकुल राजा नन्दजू तिन घर कुवर कन्हाइ
मिथ्या वचन अब होत तिहारो जन की करी सहाय ॥
जतन में नहिं लाओ देरी ॥ सांवरे शरणागत तेरी ॥ २
कहत हम तुमरे गुण भारी ॥ पूतना बालकपन मारी ॥ दुष्टनी माया विस्तारी ॥ आप बनी सुंदर ब्रजनारी

दोहा

कुच में जहर लगाय के दियौ आप मुख माहि
रूप मांस को रूप तिहारो जीवत छोड़ी नाहि
मारकर मारग में डारी ॥ सांवरे शरणागत तेरी
निर्मल जल जमुना को कियौ ॥ तुरत ही दावानल पीयो ॥ अभय ब्रजवासिन को कीयो ॥ खैंचि मन सब को हरिलीयो

दोहा

ब्रज तेरे को सांवरे करे इन्द्र बेहाल

अब के सहाय करो नंद नन्दन करुणा
सिंधु गुपाल
शरण यह व्रजमंडल तेरी ॥ सांवरे शरणागत
तेरी
अधर हरि आपन मुसिक्याये ॥ बचन यह मुख
ते बतराये ॥ कहो तुम यहां कैसे आये ॥ सभी मि
लि गिरिवर पै धाये ॥

दोहा

नख पर गिरवर धारि के कियो कृष्ण ने खे
ल ॥ गोवर्द्धन के शीश पै दियो सुदर्शन
मेल ॥
अधर धर बंशी को टेरी ॥ सांवरे शरणागत तेरी
सोहे सिर पचरंगी चीरा ॥ रचे मुख पानन के बी
रा ॥ गले मोतिन की माल हीरा ॥ सोहे कटि पी
ताम्बर पीरा

दोहा

सात कोस के बीच में गोवर्द्धन बिस्तार

सात वर्ष को रूप हरि लियो पुष्पसम धार ॥
असीसें देरह्यौव्रज टेरी ॥ सांवरे शरणागत तेरी
इन्द्र करि २ के कोप गरजै ॥ नहीं जल में गिरवर
लरजै

दोहा

वर्षवर्ष के हार्यो सुरपति तबजान्यो जगदीश
दोनों हाथ पसारि के धर्यो चरण में शीस
मेरी बुधि माया ने फेरी ॥ सांवरे शरणागत तेरी
अचंभो माया को कछु नाहीं ॥ इन्द्र तो लाख को
टि ताईं ॥ बनावत पल छिन के माहीं ॥ विगारत
वेर कछु नाहीं

दोहा

उत्पति परलै जगत की गिरधारी को खेल
ब्रह्मा गंगधर शिव ध्यावें इन्द्र बिचारो
कौन
नाम ते काटें जम वेरी॥ सांवरे शरणागति तेरी
इति श्रीगोवर्द्धन लीला समाप्तम

अथ श्रीदानलीला प्रारम्भ

अहो प्यारी वृन्दा विपन सुहावनों और बंशीवट की छांह हो ॥ श्रीराधा दधि लै नीकसी श्रीकृष्ण जु रोकी राह हो ॥ वृषभान लड़ैंती दान दे ॥१॥

अहो लाला सब ही सियाने संग के और तुमहू सियाने लाल हो ॥ प्यारे लिख्यो दिखाओ सांवरे कब दान लियो परतपाल हो ॥ नन्दलाल लला घर जान दे

प्यारी लै आये सो लैयंगे और नैक न करि हैं रार हो ॥ मोहि नित पहराय पठावही देवीरी व्रजराज हो ॥ वृ०

अहो लाला देश हमारे बाप को जाकी बांह बसै नंदगाम हो ॥ तुम घास रखावौ सांवरो ताहि सुख सों चरती गाय हो ॥ नन्दलाल लला घर जान दे

अहो प्यारी देश तिहारे बाप कौ तुम सांची कहत हो बात हो ॥ प्यारी सब संकल्यौ वा दिना ता दिन पियरे कीने हाथ हो ॥ वृषभान लडैंती दान दै ॥५॥

अहो लाला कै तुम लादी लादनी और कै जु भरे हैं बैल हो ॥ तुम टेढ़े ह्वै ठाड़े भये और रोकि इ मारी गैल हो ॥ नंदलाल लला घर जान दै ॥ ॥६॥

अहो प्यारी अंग २ रूप सुहावनों और भरे हैं रतन के भार हो ॥ प्यारी हमें बताओ लडैंनियां कछु सोचि समझि करौ बात हो ॥ वृषभान लडैंती दान दै

अहो प्यारे गुजराती डांकोतिया और लेत महन में दान हो ॥ लाला जो तुम उन में सांमरे वृषभान बबा मेरे देयं हो ॥ नन्दलाल लला घर जान दै

प्यारी है जु दान बहु भांति कौ कोई कैसे ही

दान जु देहि हो ॥ प्यारी तैसी विधि करि देहि
जो हम वैसेही दान जो लेहिं हो ॥ वृषभान लड़ै
ती दान दै

अहो प्यारे याही ते कारे भये तुम लैलै ऐसो दा
न हो ॥ प्यारे कब छूटोगे भार ते काहू तीरथहू
नहिं न्हान हो ॥ नन्दलाल लला घर जान दै
॥१०॥

अहो प्यारी गोरज गंगा न्हात हैं और लेत गौन
को नाम हो ॥ प्यारी परसत है कछु लेत नाहिं
तुम काहे कूं सकुचात हो ॥ वृषभान लड़ैती दा
न दै ॥

अहो प्यारे दान लै दान लै दान लै कछु गाय ब
जाय रिझाय हो ॥ प्यारे जैसी विधि हम देखि है
तैसो दान जो देयं हो ॥ नन्दलाल लला घर
जान दै

अहो प्यारी नट है नांचे सांमरे और बिरद पढ़ो
ज्यों भाट हो ॥ प्यारे कबहू न वर मुरली सुनी

तुमसब जानत हौ घात हो ॥ वृषभान लड़ैतीदा
न दै ॥

अहो प्यारे मिस ही मिस झगरो भयो श्रीवृदावन
के मांहि हो ॥ रसिकन मन आनंद भयो स्वामी
नन्ददास बलि जाय हो ॥ नन्दलाल लला घर
जान दै ॥

इति श्रीदानलीला संपूर्णम्

शुभम

अथ अन्तर्ध्यानलीला

प्रारम्भ

तालतिताला

तब हरि भये अन्तर्ध्यान ॥ जब कियौ मन गर्ब
प्यारी कौन मोसी आन ॥ अति थकित भइ च
लत मोहन चलिन न मो पै जाय ॥ कंठ भुज
गहि रही यह कहि लेहु जबहिं चढ़ाय ॥ गये
संग बिसारि रस में बिरस कीन्ही बाल ॥ सूरप्र
भु दुरि चलि देखत तुरत भई बेहाल ॥

रागिनीदेश

मोहन मोहन को टेरें ॥ हो कान्ह यही संग यही मन मेरे ॥ ऐसो संग तजि दूरि भये क्यों समुझि परी हरि गैयन घेरें ॥ चूक मानिलीनी हम अपनी कैसेहु लाल बहुरि फिरि हेरें ॥ कहियत हो तुम अन्तर्जामी पूरन काम सब केरे ॥ ढूंढत हैं द्रुम बेली बाला भईं बहाल करत ओफेरें ॥ सूरदास प्रभु रास विहारजी बनवारी दया करत काहे फेरें

रागिनीसोरठ

करत हैं रुचिर चरित ब्रजनारी ॥ देखि अतिही बिकल राधा यहै बुद्धि बिचारी ॥ एक भई गोपाल की वपु एक भई बनवारी ॥ एक भई गिरिधरन समरथ एक भई दैत्यारी ॥ इक एक भईं धेनु बछरा एक भई नंदलाल ॥ एक भईं यमला उधारण एक त्रिभंगी रसाल ॥ एक भई छबि रास मोहन कहत राधा नारि ॥ स

क कहति उठि मिलहु भुज भरि सूर प्रभु की प्यारि

सोरठ

राधे भूलिरही अनुराग ॥ तरु तरु रुदन करत अलसानी ढूंढि फिरी बन बाग ॥ कबरी ग्रसित शिखंडी यह भ्रम चरणशिली मुख लाग ॥ बंसी मधुर जानि पिय बोलत कदन करेरत का ग ॥ कर पल्लव किसिलय कुसुमाकर जानि ग्रसित भइ कीर ॥ राका चन्द्र चकोर जानि कें पिवत मैन को नीर ॥ विह्वल बिकल जानि नंद नन्दन प्रगट भये तिहि काल ॥ सूरस्याम हित प्रेमांकुर उर लाय भई भुज माल

इति अन्तर्ध्यान लीला

समाप्तम्

अथ पुनर्मिलन लीला

प्रारम्भ

रागिनी दक्षिणी देस

बहुरि स्याम सुखरास कियो ॥ भुज भुज जोरि जुरी ब्रजबाला वैसेही रस उमगि हियो ॥ वैसेहि मुरली नाद प्रकास्यो वैसेहि सुर नर वस्य भये ॥ वैसेहि उडगन सहित निशापति मारग भूलि गये ॥ वैसेहि दसा भई यमुना की वैसेहि गति तजि पवन थक्यो ॥ वैसेहि नृत्तत रंग बढ़ायो वैसेहि बहुरिहु काम जग्यो ॥ वैसेहि निसा वैसेहि मन युवती वैसेहि हरि हू सबन भजे ॥ सूरस्याम वैसेही मनोहर वैसेहि प्यारी निरखि लजे

रागिनी दक्षिणी देस

मोहन रचेउ अद्भुत रास ॥ संग मिलि वृषभान तनया गोपिका चहु पास ॥ एक ही सुर सकल मोहे मुरलि सुधा प्रकास ॥ जलहु थल के जीव थकि रहे मुनिन मनहिं उदास ॥ थकित भयो समीर सुनि के यमुन उलटी धार ॥ सूरप्रभु ब्रजबाम मिलि बन निशा करत बिहार
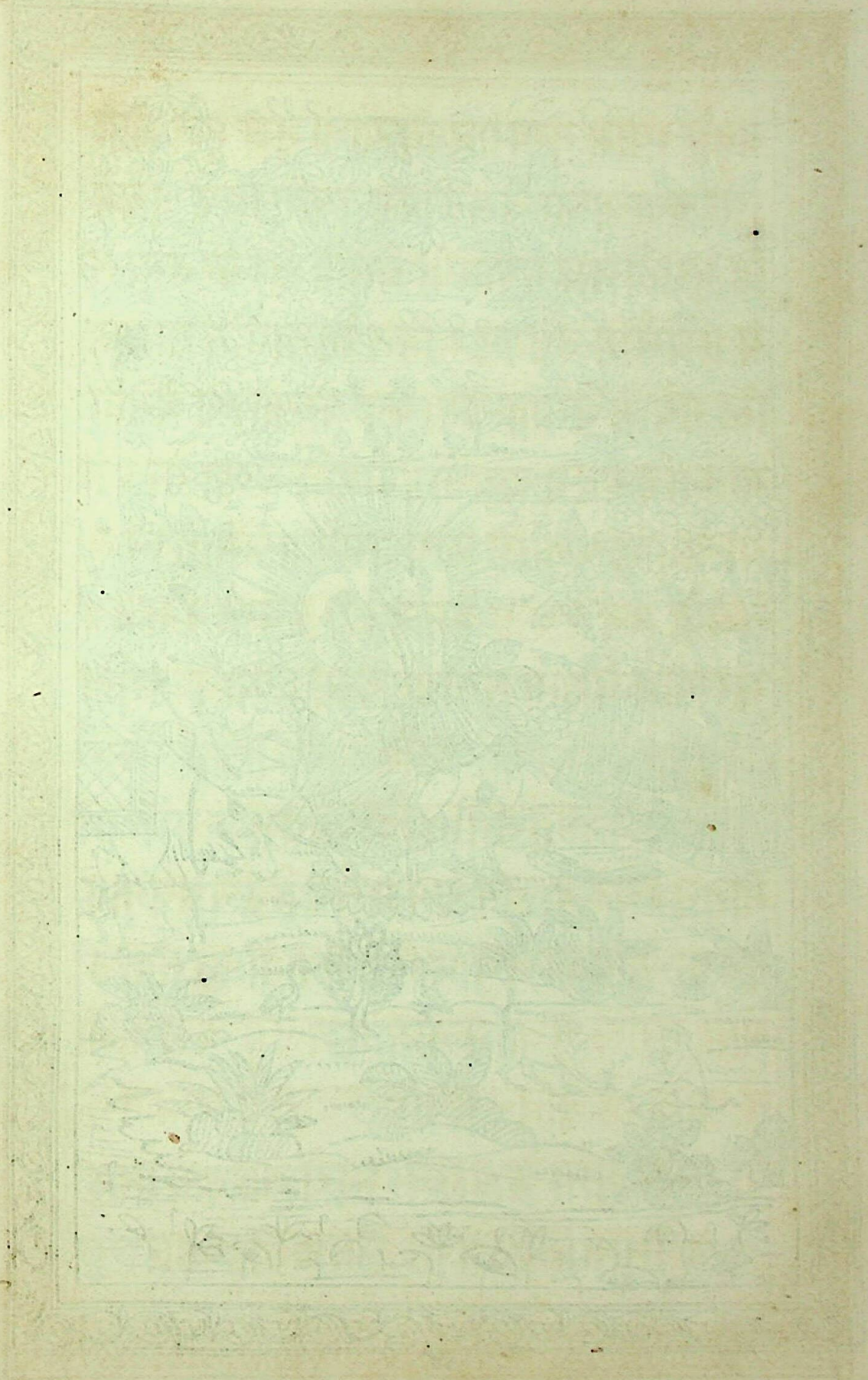
रागमालकौस

बिहरत रंगरस गोपाल ॥ नवल स्याम संग सोह-
त नवल सब ब्रजबाल ॥ शरद निशि अति नव
ल उज्वल सब लता बन धाम ॥ परम निर्मल
पुलिन जमुना कल्पतरु बिश्राम ॥ कोश द्वाद
श रास परिमित रचेउ नंद कुमार ॥ सूरप्रभु सु
खदियौ निशिरमि काम कौतुक हार

कबित्त

साजि कें साज समाज सबै सजनी सुख सों सर
साबे लगीं ॥ अंग अंग अनंग उमंग महा सुख
रंग तरंग बढ़ावे लगीं ॥ तिरछी अब नैनन मै
न तुकें झुकि झूमि झुकें छबि छावे लगीं ॥ दु
रि जावे लगीं तरसावे लगीं दरसाय के लाल
छकावे लगीं

कबित्त

लाल लाल लोचन संकोचन सकाती रहौ
घूंघट उघारि आली शशि कों उगन दै ॥ क-

चुकी उतारि गजमोतिन के हार डारि बेसरि उ-
तारि होठ होठ मों मिलन दै ॥ कहै कबि बाबू
राम दोऊ कुच कंठ लाय बिरह की अगिनि त-
न तपन कों बुझन दै ॥ बतियां ना बनावौ प्या
री रतियां व्यतीत भई हथियां ना लगावौ छैल
छातियां छुवन दै

कबित्त

त्रिविधि समीर बहै सीतल सुगंध मंद निरत
त नंदलाल ब्रजबाल साथ हैं ॥ कुंडल ग-
लवान सुख सों अलापै तान नथ की चलन
चो हलन बेंदी मांथ हैं ॥ रंगरंग सारी जामें ज
ड़ी हैं किनारी छबि होत हैं न्यारी न्यारी मानों
जोरें हाय हैं ॥ नूपुर रुनक कर कंकन खन
क बनमाली कीभनक केलि करत श्रीयदु
नाय हैं

इति श्रीमिलन लीला
समाप्तम्

अथ श्रीजमुनाजलबिहार लीला प्रारम्भ

रागमालकौस

रैनि रास सुख करते बीती ॥ भोर भये गये पाव न जमुना के सलिल न्हान सुख करत अति बढ़ी प्रीती ॥ एक एक मिलि हंसति एक हरि संग हंस एक जलमध्य एक तीर ठाड़ी ॥ एक एक डरति एक अंक भरि के चलति एक सुख लरति अति नेह बाढ़ी ॥ काहु नहिं डरति जल थलहु क्रीड़ा करति डरति मन निदरि ज्यों कंत नारी ॥ सूरप्रभु स्यामस्यामा संग गोपिका मिटी तनु साध भई मगन भारी

रागमालकौस

साधु नहीं युवतीन मन राखी ॥ मन वांछना सबन फल पायो वेद उपनिषद साखी ॥ भुज भरि मिली कठिन कुच चापे अधर सुधारस

चाखी ॥ हाव भाव नैननि सैननि दै बचन रचन मुख भाखी ॥ शुक भागवत प्रगट करि गायौ कछून दुविधा राखी ॥ सूरस्याम ब्रजनारि मं ग हरि बाकी रही न कांखी ॥

रागबिहाग

जमुना जल क्रीडत नन्द नंदन ॥ गोपीवृन्द मनोहर चहुं दिश मध्य अरिष्ट निकन्दन ॥ पकरे पाणि परस्पर छिरकत शिथिल सलिल भुज चन्दन ॥ मानहुं युवति यूथ अहिपति को लग्यौ अंक दै बंदन ॥ कच भरि कुटिल सुदेश अंबुकन चुवत अंग गति मंदन ॥ मानहुं भरि गंडूष कमल तें डारत अति आनन्दन ॥ भुज भरि अंक अगाधि चलत लैज्यों लुब्धक खग फंदन ॥ सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेतिनेति श्रुति छंदन

कबित्त

जोरजगी जमुना जल धाम में धाय धसीं ज-

ल केलि की माती ॥ त्यों पद्माकर पैग चलै उछलै जब तुंग तुरंग बिघाती ॥ टूटे हरा छरा छूटे सबै सरबोर भई अंगिया रस राती ॥ को कहतो यह मेरी दशा गहतो न गोबिंद तो मैं बहिजाती

कबित्त

आजु अकेली उतावलि ह्वों पहुंची तट तौलों तुम आइ करार में ॥ बाल मरवीन की हाहा किये मन हूक दियो जल केलि बिहार में ॥ सीतल गात भये सिगरे उछरी तौ मरी कै किते कहूं वार में ॥ कान्ह जो धाय धरै न अली तो बहती भली जमुना जल धार में

रागबिहाग

बिहरति नारि हंसत नंदनंदन ॥ अंकम भरि२ लेत अनन्दन ॥ निर्मल देह छूट तन चन्दन अतिशोभा त्रिभुवन जग बंदन ॥ कंचन पीठि नारि अंग शोभा ॥ वे उन कों वे उन कों लोभा

कबहू अंक भरि चलहिं अगाधहिं ॥ अरस पर
स मेटहिं मन साधहिं ॥ कोऊ भाजे कोऊ पाछें
धावै ॥ युबतिन मों कहि ताहि मंगावै ॥ ताकों
गहि अगाध जल डारें ॥ मुख व्याकुलता रूप
निहारें ॥ कंठ लगाय लेत पुनि ताही ॥ देत अ
लिंगन रीझत जाही ॥ सूरस्याम व्रज युबतिन
भोगी ॥ जाकों धावत शिव मुनि
योगी

रागबिहाग

राधे छिरकत छैल छबीली ॥ कुच कुंकुम
कंचुकि बंद टूटे लटकि रहीं लट गीली ॥ बंद
न शिर ताटंक गंड पर रतन जटित मणि लीली
गति गयंद मृगराज सु कटि पर शोभित किं
किणि ढीली ॥ मचेउ खेल जमुना जल अंतर
प्रेम मुदित रस भीली ॥ नंद सुवन भुज ग्रीव
बिराजत भाग सुहाग भरीली ॥ बरषत सुवन
देवगण हर्षित दुंदुभि सरल बजीली ॥ सूर

स्याम स्यामारस क्रीड़त यमुन तरंग थकीली

राग जैजैवंती

ताल चिवट

ललकत श्याम मन ललचात ॥ कहत हैं घर जाहु सुन्दर मुख न आवति बात ॥ षटसहस्र दश गोपकन्या रैनि भोगहिं राम ॥ एक छन भइ कोउ न न्यारी सबनि पुरई आस ॥ बिहंसि सब घर २ पठाई व्रज गयीं व्रजबाल ॥ सूरप्रभु नंदधाम पहुंचे लख्यौ काहु न ख्याल

रागिनी जैजैवंती

पिय निरखत प्यारी हंसि दीन्हीं ॥ रीझे स्याम अंग २ निरखत हंसि नागरि उर लीन्हीं ॥ आलिंगन दै अधर दसन खंडि कर गहि चिबुक उठावत ॥ नासा सों नासा लै जोरत नयन २ परसावत ॥ यहि अन्तर प्यारी उर निरख्यौ झिझकि भई तब न्यारी ॥ सूरस्याम मोको दिखरावत लाये धरि कें प्यारी

इति श्रीजमुनाजलबिहार
लीला
सम्पूर्णम्

अथ श्रीराधाजू की मानलीला
प्रारम्भ

रागिनी जैजैवंती

अब जानी पिय बात तिहारी ॥ मोसों तुम मुख
की निरखति हौ भावति है वह प्यारी ॥ राखे
रहत हृदय पर जाकों धन्य भागि हैं ताके ॥ रे
सी कहूं लखी नहिं अब हूं बश्य भये यों जाके
भलीकरी यह बात जनाई प्रगट दिखायी मो
हि ॥ सूरस्याम यह प्राण पियारी उर में राखी
पोहि

जैजैवंती

मोहि छुवौ जनि दूरि रहौ जू ॥ जा कों हृदय
लगाय लई है ता की बांह गहौ जू ॥ तुम सर्व
ज्ञ और सब मूरख सो रानी और दासी ॥ मैं दे-

रवत हृदय वह बैठी हम तुम कों भई हांसी ॥ बांह गहत कछु लाज न आवत सुरव पावत मन माहीं ॥ सुनहुं सूर मो तन वह इकटक चितवति डरपति नाहीं

रागिनीबिहाग

कहति दूतिका सरिवन बुलाई ॥ आजु राधिका मान कियो है स्याम गये कुम्हिलाई ॥ कर सों कर गहि बाल गई लै सरिवन सहित बनधाम ॥ सुरव दै कह्यौ लिये आवति हों संग बिलसाउं बाम ॥ मो आगें की महरि बिटिहिनी कहा करै वह मान ॥ सुनहुं सूरप्रभु कितिक बात यह करौं न पूरण काम ॥

कबित्त

बतियान सुनाय के सौतिन की छतियान में शाल शलाय लै री ॥ सपनेहू न कीजिये मान अरा अपने योवन की बलाय लै री ॥ परमेशजू रूप तरंगन मों अंग अंगन रूप रलाइ

लै री ॥ दिन चारिक द्वै पिय प्यारे कों प्यार सों चाम के दाम चलायलैरी

सवैया

बैन सुधा से सुधा सी हंसी बसुधा में सुधा की सदा करती है ॥ बीर बिचारे बटोहिन पै इक काज हो तो यों लटा करती है॥ त्यों पदमाकर बार हि बार सुबार बगार घटा करती है ॥ बिज्जु छटासी अटा पै चढ़ी सु कटाछन घालि कटा करती है

सवैया

येहै न फेरि गयी जो निशा तन यौवन है घन की परछाहीं ॥ त्यौं पदमाकर क्यों न मिले उठि यों निबहैगो न नेह सदांहीं ॥ कौन सयान जो कान्ह सुजान सों ठानि जु मान रही मन माहीं ॥ एक जु कंज कली न खिली तो कहो कहुं भौंर कों ठौर है नाहीं

सवैया

रूप की चाल अनूप चढ़ी यह प्रेम मिठास प
गाय लै जी कों ॥ नैनन मैन सलौनी बढ़ी मु-
ख बैन रसाल कढ़े अति नीकौ ॥ तेरे अधीन
भयौ रसिया बिधि क्यौं न बनाय रिझायलैपीकौ
साजि कें ऊंची दुकान अरी फिरि राख्यौ कहा
पकवान है फीकौ

राग बिहाग

चलहि किन मानिनि कुंज कुटीर ॥ तुव बिन
कुंवरि कोटि बनितन युत मथत मदन की पीर
गदगदस्वर बिरहाकुल पुलकित श्रवत बिलोचन
नीर ॥ कासि २ वृषभान नंदनी बिलपत बिपिन
अधीर ॥ बंशी बिशिष ब्यालमाला बलि पंचान
न पिक कीर ॥ मलयज गरल हुतासन मारुत
साखा मृगरिपु चीर ॥ श्रीहरिबंश परमकोमल
चित चपल चली पिय तीर ॥ सुनि भयभीत
बज्र कौ पंजर सुरत सूर रणबीर ॥

७

कवित्त

तासन की गिलमें गलीचा मखमलन के झर फैं झुमाउ रहीं भूमि रंगद्वारी में ॥ कहैं पदमा कर सुदीप मणि मालिनि के लालन की सेज फूल जालन संवारी में ॥ जैसे तैसे तित छल बल सों छबीली वह छिनक छबीले को मि लाय दई प्यारी में ॥ छूटि भाजी करतें सुकारि के बिचित्र गति चित्र कैसी पूतरी न पाई चि त्रसारी में

रागबिहाग

मानों गिरिवर ते आवति गंगा ॥ राजति अति रमणीक राधिका यहि बिधि अधिक अनूपम अंगा ॥ गौर गात अति बिमल बारि विधि कटि तट त्रिवली तरल तरंगा ॥ रोमराजि मनुजमुन मिली अध भँवर परत मानों भ्रुव भंगा ॥ मणि गण भूषण रुचिर तीर वर मध्यधार मोतिन मय मंगा ॥ सूरदास मानों चली सुरसरी श्रीगोपाल

मगर मों मंगा

रागबिहाग

आजु रंग फूले कुँवर कन्हाई ॥ कबहुक अधर दशन भरि खंडत चाखत सुधा मिठाई ॥ कबहुक कुच कर परसि कठिन अति तहां बदन परसावत ॥ मुख निरखति सकुचात कुमारी मन ही मन अति भावत ॥ तब प्यारी करगहि मुख टारति नैक लाज नहिं आवति ॥ सूरदास प्रभु काम शिरोमणि कोक कला दिखराव त॥

राग-बिहाग

पिय भावती राधा नारि ॥ उलटि चुम्बन देत रसिकन सकुचि दीन्ही डारि ॥ दोउ परस्पर भिरे श्रमजल फूंकि २ रुरात ॥ मनों बुझी अनंगज्वाला प्रगट करत लजात ॥ बहुरि उठे संभारि भट ज्यों अंग अनंग संभारि ॥ सूर प्रभु बन धाम बिहरत बने दोउ बर नारि ॥

रागिनीयोग

बिहरत दोउ मन राक करे ॥ राक भाव राकभये लिपटि के उर उरजोरि धरे ॥ मनों सुभट रण राक संग जुरि करिवर नहीं डरे ॥ अधर दशन छत नख छत ऊपर घायन फरहिं फरे ॥ यह सुख यह उपमा पटतरि को रति संग्राम लरे ॥ सूरसखी निरखति अंतर भइ रतिपति काज सरे॥

कबित्त

प्राणप्रिया पिय आनन्द सों बिपरीति रची रति रंग रह्यो है ॥ काम कलोलनि में मतिराम रह्यो धनि यों कल किंकिणी को है ॥ आनन की उजियारी परी श्रम बिन्दु मरोज उरोजन सो है चन्द कि चांदनि के परसे मनों चन्द्र परवान पहार चलो है

कबित्त

मारी जरतारी लगी मानिनि किनारी दुति दा-

मिनि कहारी गात जातरूप कंद है ॥ हार हियें भूषण जड़ाज भाल बेंदी लास अधर प्रवलबि म्ब बसे जीव बन्द है ॥ उमाँ की रमाँ की मुरव माँ की देवसाँ की हठी रम्भा इंदु उपमाँसी ग ति मंद है ॥ तारापति कैसे मुरव लहत गुविंद चारी तरवत पै बैठी राधे बरवत बिलम्ब है

कबित्त

चामी करि चौकी पर चंपक बरन हठी अंग की चमकै चारु चंचलै चलावती ॥ तारासी तरंग नासी अतर लगावै रति मुकुर दिरवावै बिजै बीजन डुलावती ॥ कमला कर जोरै ठा डी बिमला सु त्रन तोरै नवला लै मरजी को अरजी सुनावती ॥ सुरन की रानी सुर पालन की रानी दिकपालन की रानी द्वार सुजरा न पावती

कबित्त

सीस के महल बैठी फैलत प्रभा के पुंज मा

नों चन्द्रमंडल उठाय आनि राख्यौ है ॥ ज
रीपोस अम्बर जलमदार झुलझुलात झालरें
झलक झूल रूपमान राख्यौ है ॥ अतर उ-
सीर अंग अंगन लगाय हदी सकल सुगंध
न मों ब्रज सानि राख्यौ है ॥ देखौ भरि नैन
जासों पूजै मनासाधा हरि राधा आजु छबि
को बितान तानि राख्यौ है ॥

कबित्त

केसरि से अंग पट केसरि के रंग जसे मोती
गुहे मांग हैं अनंग हू की बालका ॥ रम्भा
सी रमासी मैनकासी मुंज घोषासम सची-
सी उमासी सुखमासी ज्योति जालका ॥ सां
झसमें आनि वृषभान की कुमारी राधा ठाडे
दरवाजे हठी मानन की पालका ॥ भाग भरे
नैनन निहारी नन्दलाल चलि रैनि गुजरी
सी उजरीसी दीपमालिका

कबित्त

सांझ होगई ती बीर भौन वृषभानज्‌ के अति सुकमार राक रूप कीसी रासी है ॥ दाड़िमद मन बिम्ब अधर प्रवाल वारौ सुधासौ झरत चारु मंदमंद हांसी है ॥ देखौ हो गुपाल ग्वाल आज गरबीली हठी राधे काहि टेरें जानी रम्भा रमा दासी है ॥ हिमकर कलासी चमक चपलासी है सो शंभु अबलासी खासी दीपमालकासी है

कबित्त

मोरपखा गरे गुंज की माल करे नवभेष भली छबि छाई ॥ पीतपटी दुपटी कटि में लपटील कुटी हठि सो मन भाई ॥ छूटी लटें डुलैं कुंडल कान बजै मुरली धुनि मंद सुहाई ॥ कोटिन काम गुलाम भये जब कान्ह है भानुलली बनि आई

कवित्त

कामकर मीसी मोह रमा उमा दरसीसी पटफूल अरसीसी घन दामिनि उसीसी है ॥ प्रेम रुरसी सी मोह कसन कसीसी लोक लज्जा उकसी सी कान्ह रूप में रसीसी है ॥ लरी लरसीसी कटि राजै हरिसीसी हठी उर में बसीसी दुति जग में जसीसी है ॥ सिद्धि करसीसी हिय अंगन मसीसी करै रति की हंसीसी दीसी उर में बसीसी है

कवित्त

अतर पुतायौ मढ्यौ महल सुगंधन सों द्वारग जमोतिन की तोर नें तनी रहें ॥ चंदन चहल चारु चांदनी चंदोवा लाल गोपमाल मनीक नी कोर नें घनी रहें ॥ उमा चौंर ढोरें रमा आरती उतारठाडी रम्भा रति मैनकासी कोटिनज नी रहें ॥ हठी देवतान की दिमाकदार रानी तेऊ राधे महरानी जू के हाजिर बनी रहें ॥

कबित्त

अतर पुतायौ चौक चंदन लिपायौ बिछी गिरम
गलीचन की पंगति प्रमान की ॥ कारी हरी पी
री लाल झालरें झलकि रहीं जैसी छबि छाई
चारु चांदनी बितान की ॥ झीनी श्वेत सारी
जड़ी मोतिन किनारीदार फैली मुख आभा इ
ठी राधे सुखदान की ॥ नाह नेह नद्दी झर रमा
रूप रही कर बैठी आन गद्दी पर बेटी वृषभा
न की ॥

कबित्त

कंचन महल चौक चांदनी बिछौना तामें ज-
री कौ बितान तान भान जोति मंद की ॥ लाल
न की मालें लालसारी कोरदार अंग ओठन की
लाल जिमी लाली जीव बंद की ॥ रम्भासी र
मासी रवासी दासी मैनकासी इठी ठाडी करजो
रें तेज छीने जोति चंद की ॥ गावे वेदबानी
चौर ढारत भवानी राधे बैठी सुखदानी महा

रानी नंदनंदकी

रागिनीयोग

वह छवि अंग निहारत स्याम ॥ कबहुंक चु-
म्बन लेत उरज धरि अति सकुचाति तन बाम
सन्मुख नयन न जोरति प्यारी निलज भये पि
य रेसे ॥ हाहा करति चर्ण कर टारति कहा क-
रत ढंग नैसे ॥ बहुरि कामरस भरे परस्पर रति
बिपरीति बढाई ॥ सूरस्याम रतिपति बिह्वल
करि नारि रही मुरझाई ॥

रागिनीयोग

जो सुख स्याम प्रियासंग कीन्हों ॥ सो युवतिन
अपनों करि लीन्हों ॥ दुबिधा हृदय कहूं नहिं
राख्यो ॥ अति आनंद बचन मुख भाख्यो ॥
यहै कहत तबकी अब नीके ॥ सकुचि हंसी
नागरि संग पीके ॥ नयन कोर पिय हृदय निहा
रेउ ॥ उन पहिलें पीताम्बर धारेउ ॥ सूरदास
यह लीला गावै ॥ हरिपद शरण अक्षय फल

पावे
इति श्रीमानलीला
संपूर्णम
अथ रासलीला
लिख्यते
रागगौडमल्हार

शरद निशि देखि हरि हर्ष पायो ॥ बिपिन वृ न्दाबनहि सुभग फूले सुमन रास रुचि श्याम के मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वलि रैन चमाकि रही भूमि पर सदा फल तरुनप्रति शुभग लागहिं ॥ तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविधि बहै पवन अनन्द जागहिं॥ राधिका रमण बन भवन सुख देखि कै अधर धर बेणु सुर ललित गाई ॥ नाम लै लै सकल गोप कन्यान के सबन के श्रवण यह धुनि समाई ॥ सुनत उपज्यौ मयन परत ना काहु चैन शब्द सुनि श्रवण भईं बिकल

भारी ॥ सूरप्रभु ध्यान धरि के चलीं उठि सभी भवन जननेह तजि घोष नारी

राग कल्याण

जब हरि मुरली नाद प्रकास्यो ॥ स्वर्ग पाताल दशों दिश पूरण धुनि अच्छादित कीनों ॥ निशि हरि कल्प समान बढ़ायी गोपिन कों सुख दीनें ॥ भ्रमत भये जीव जल थल के तनकी सुधि ना संम्हार ॥ सूरस्याम मुख बेणु बिराजत उलटे सब व्यवहार

राग झिंझोटी

बंसी जमुना पै बाजि रही रे लाल छबि निरखन कैसे जाऊंरी आज ॥ बंसी की टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुधि बिसरी रे लाल ॥ मोरमुकट पीताम्बर सोहे चंदन खोर लगी रे लाल ॥ चन्द्रसखी भजि बालकृष्ण छबि चरनन चेरी भई रे लाल

रागयमन

वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तरे यमु
ना पुलिन में मधुर बाजी बांसुरी ॥ जब से धुनि
परी कान मानों लगे यमन बान प्राणन की क
हा चलै पीर होत पांसुरी ॥ व्याप्यो जो अनंग
तामें अंग सुधि भूलि गई कोई कछू कहो
कोई करो उपहारी ॥ रसिक ब्रजाधीशजी सों
प्रीति नयी रीति बाढ़ी जा के उर बसि गयी प्रेम
पुंज गांसरी

कबित्त

एक उठि दौरी एक भूलि गयी पौरी एक राख
भरि कौरी सुधि रही नाहिं तन में ॥ एक खुले
बार एक छतियां उघार एक भूषण डारि चली
दामिनी ज्यों घन में ॥ एक उजियारी गोपीना
थ नें निहारी एक भई बौरी डोलै मदन की उ
मंग में ॥ ऊधम भयो है घरी चार ब्रजमंडल
में बांसुरी बजाई कान्ह जबी वृन्दावन में

बाजी घर आई बाजी देखिवे कों धाई बाजी मुरझाई तान सुनि गिरधर की ॥ बाजी हंसि बोलें बाजी करत कलोलें बाजी संग लागि डोलें सुधि बिसरी सब घर की ॥ बाजी ना धरें धीर बाजी ना संभारें चीर बाजिन उठी पीर दावानल भरकी ॥ बाजी कहें बाजी बाजी कहें कहां बाजी बाजी कहें बाजी बंसी सामरे सुघर की

रागभैरव

बांसुरी बजाई आज रंग सों मुरारी ॥ शिव समाधि भूलिगये मुनिजन की तारी ॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी ॥ सुनत ही आनंद भयो लगी है करारी ॥ रम्भा सब तालचूकी भूली नृत्यकारी ॥ यमुना जल उलटि बह्यो सुधि ना समारी ॥ श्रीवृन्दाबन बंसी बजी तीन लोक प्यारी ॥ ग्वालबाल मगन भये ब्रज की सब नारी ॥ सुन्दरस्याम मोहनी मू-

गति नटवर बपुधारी ॥ सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥
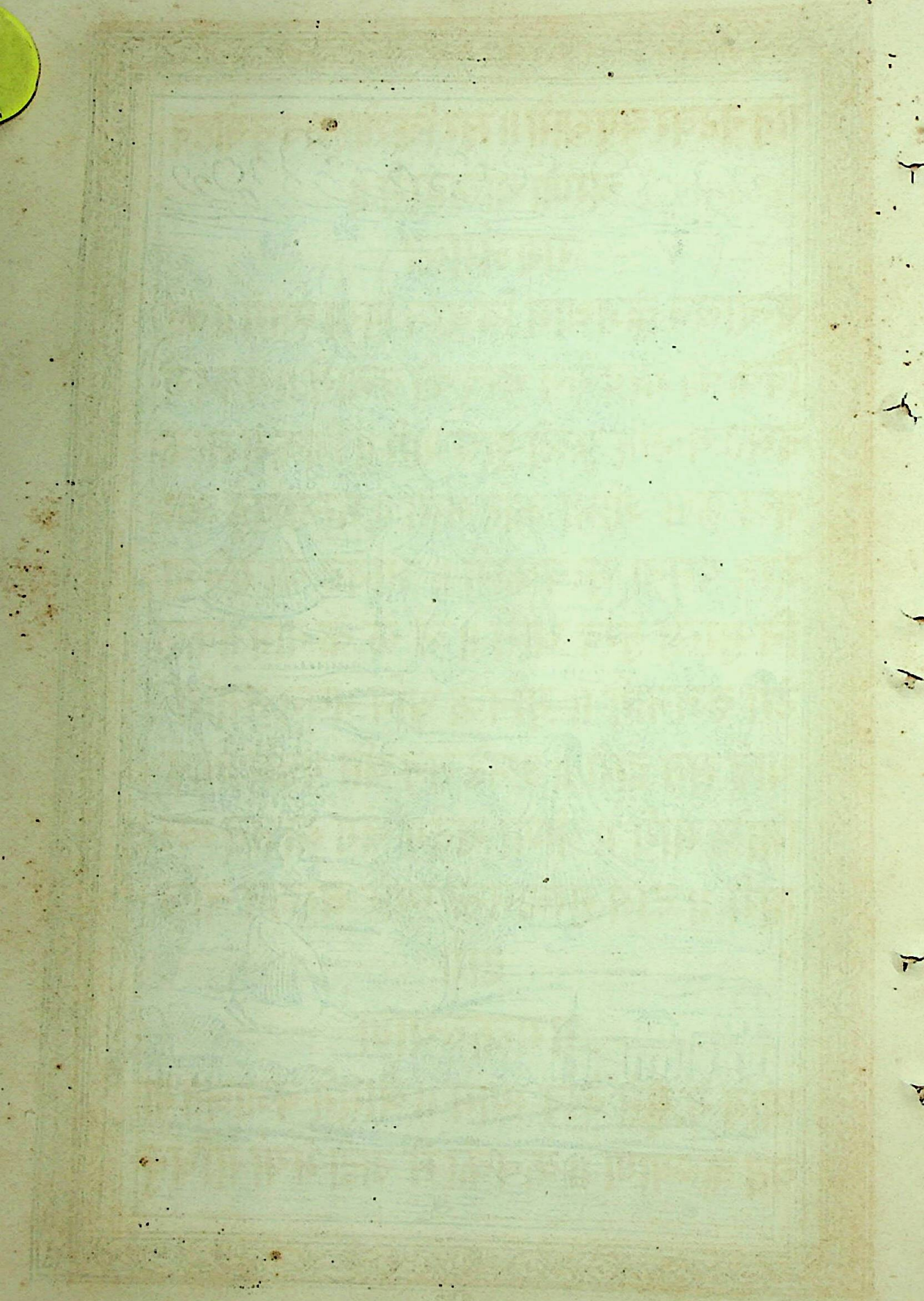
रागजंगला

वृन्दाबन कुंजधाम बिचरत पिया प्यारी ॥ कातिक की शरद रैनि चन्द की उजारी ॥ पवन मंदमंद चलति फूली फुलवारी ॥ बिकसे सर कमल फूल शोभा अति भारी ॥ झरना चहुं ओर झरत यमुना सुखकारी ॥ आनंद की रैनि जानि मुरली मुख धारी ॥ ले ले के नाम सकल टेरीं ब्रजनारी ॥ सुनिके धुनि भवन त्यागि धाईं सुत डारी ॥ उलटे तन चीर पहीर आईं मिलि सारी ॥ बीणा मृदंग चंग बाजत खटतारी ॥ दास सुखानन्द प्यारे चरणन बलिहारी

रागकल्याण

प्यारी में रीमे देखे स्याम ॥ बाँसुरी बजावत गावत कल्याण ॥ कबकी में गड़ी भैयां सुधिबु

धि सब भूलि गैयां छौने जैसे जादू डारा भूले मोसे काम ॥ जब धुनि कान पैयां देह सुधि नां रहियां तन मन हरि लीनां बिरहां वाले कान॥ मीरांबाई प्रेम पाया गिरधरलाल गाया देह मां बिदेह भैयां लागो पग ध्यान

रागबिहाग

निशि काहे को बन उठि धाई ॥ हंसि २ स्याम कहत हौ सुन्दरि की तुम ब्रजनारि गहि भुलाई गई रही दधि बेचन मथुरा तहां आज अबसेर लगाई ॥ अति भ्रम भयौ बिपिनि कों आई मारग वह कल सबन बताई ॥ जाहु २ ग्रह तुरत युबति गण खोजत गुरुजन लोग लुगाई ॥ कै गोकुल ते गमन कियो तुम इन बातन कछु नाहिं भलाई ॥ यह सुनि के ब्रजबाम चकित भई कहा करत गिरधर चतुराई ॥ सूर नाम लै २ सबहिन कौ मुरली बारम्बार बजाई ॥ ७ ॥

७

रागदेस

रचौ श्रीवृन्दावन में रास गोबिन्द ॥ चलो सखी देखन चलिये नव रास रंग ॥ रास में रसीलो प्यारो सखियन संग ॥ यमुना के नीरे तीरे सीतल सुगंध ॥ महकि पवन चाले अति गति मंद ॥ खंजरी सारंगी बाजे ताल मृदंग ॥ बीन उपंग मुरली मोहर मुरचंग ॥ भाल तिलक सोहे मृगमद रेख ॥ मुरली मनोहर जी की नख र भेख ॥ ब्रह्मा देखें सब नारी नरेश ॥ देखन आये शम्भु गौरी गणेश ॥ वृन्दावन बीच रच्यो रास बिलास ॥ गुण गावै स्वामी माधुरी दास

राग केदारा

सुनि धुनि मुरली बीन बाजे हरि रास रच्यौ। कुंज कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिन रच्यौ ॥ निरतत युगल किशोर युवती जन रास में राग केदार रच्यौ ॥ हरिदास

के स्वामी स्यामा कुंजविहारीजीके ही आज
गोपाल रच्यौ

कबित्त

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै वृंदा
वन बीथिन विहार बंशीबट पै ॥ छत्तन पै
छानन पै छाजत छटानन पै ललित लतान
न पै लाड़िली की लट पै ॥ कहै पदमाकर
अखंड रास मंडल पै मंडत उमंग महा कालिं
दी के तट पै ॥ कैसी छबि छाई आज शरद
जुनाई आली जैसी छबि छाई या कन्हाई के
मुकट पै ॥

कबित्त

सूकर ह्वै कब रास रचौ और बावन ह्वै कब
गोप रचाई ॥ मीन ह्वै कौन के चीर हरे कच्छ
वा ह्वै के कब बीन बजाई ॥ होय नृसिंह क
हौ हरि जू तुम कौन की छातिन रेख लगाई
वृषभान सुता प्रगटी जब ते तब ते तुम कोलि

कलानिधिपाई

रागपीलू

टाड़ी रहरी लाड़ गहेली मैं माला सुरझाउं ॥ नक बेसरि की गूंथि चुटीली ताहू पै सुभग बनाउं ॥ राड़ी टेढ़ी चाल छांड़ि मैं सूधी चल न सिखाउं ॥ वृन्दाबन हित रूप फूल कीमा ल रीझ जो पाउं ॥ प्रीतम रहे प्रिया मन लीये प्रिया रहे मन पिया कौ ॥ सखी रहें दोउअन मन लीये रंग बढ़े नित ही कौ ॥ वृन्दाबन हि त रूप बिहारन सकल तियन शिर टीकौ

कबित्त

सोनजुही की बनी पगिया औ चमेली कौ गु च्छ रह्यौ झुकि न्यारो ॥ दो दल फूल कदंब के कुंडल सेवती कौ जामा घूम घुमारो ॥ नव तुलसी पटुका घनस्याम गुलाब इजा र नवेली कौ नारो ॥ फूलन आजु बिचि- त्र बन्यों देखो कैसो शृंगार रच्यौ है प्यारो

नें प्यारी

कबित्त

मारी संवारी है सौनजुही की जुही की तापै ल-
गाई किनारी ॥ पंकज के दल कौ लहंगा अंगि
या गुलाबांस की शोभित न्यारी ॥ चमेली कौ
हार हमेल गुलाब की मौर की बेंदी दै भालसं
वारी ॥ आज बिचित्र संवारि कें देखौरी कैसी
शृंगारी है प्यारें नें प्यारी

रागपीलू

संग चलीं ब्रजबाल लाल कर तालन लैलै जोरी
लाई गति मृदंग उपजाई छाई बन घन घोरी
ततथेई तुम कित ततथेई यह धुनि सुनि लैजो
री ॥ बल्लभ रसिक बिहारी प्यारी प्यारी तान
झकोरी

कबित्त

मांथे पै मुकट देखि चन्द्रिका चटक देखि छ
बि की लटक देखि रूपरस पीजिये ॥ लोचन

विशाल देरिव गरे गुंजमाल देरिव अधर सुलाल देरिव चित्त चोंप कीजिये ॥ कुंडल हलन देरिव अलकन बलन देरिव पलकन चलन देरिव स-र्वस दीजिये ॥ पीताम्बर की छोर देरिव मुरली की घोर देरिव सांवरे की ओर देरिव देरिववोही कीजिये

रागपीलू

भागवान वृषभान सुतासी को त्रिय त्रिभुवन माहीं ॥ जा कौ पति त्रिभुवन मन मोहन दिये रहत गरबाही ॥ होय अधीन संगहि संग डोलत जहां राधिका जाहीं ॥ रसिक लरव्यो जो सुरव वृंदा बन सो त्रिभुवन में नाहीं

कबित्त

वृन्दाबन धाम नीको व्रज कौ बिश्राम नीको स्यामास्याम नाम नीको मंदिर आनंद को ॥ कालीदह न्हान नीको यमुना पय पान नीको रेणका कौ रवान नीको स्वाद मानों कंद को ॥ राधाकृष्ण कुं

ड नीकौ संतन कौ संग नीकौ गौरस्याम रंग नीकौ रंग जुग चंद कौ ॥ नीलपीत पट नीकौ बंशीबट तट नीकौ ललित किशोरी नीकौ नट नीकौ नन्द कौ

कबित्त

भृकुटी तनी कौ नक बेसरि बनी कौ लटनगन फनी कौ लखि फूल्यौ कंज फीको है ॥ मैन की मनी कौ नैनबान की अनी कौ चोरवो मैन रजनी कौ हास हुलसन ही कौ है ॥ रूप रमनी कौ कै रमा रमनी कौ गजगती गमनी कौ कैधों सिंधु सूरजी कौ है ॥ बैनी बंदनी कौ मृदु हास फंद जौ कौ मुख चन्द हू ते नीको वृषभान नंदनी कौ है

छन्द

जैसी है मृदु पद पटकन चटकन कट तारन की त्रियातन मोरमुकट की लटकन लट कुंडल हारन की ॥ सांवरे पिया संग निर्त्तत ब्रज की चंचल

वाला ॥ मानों घनमंडल मंजुल खेलत दामिनि सीबाला

कबित्त

मंडल रासबिलास महा रस मंडन श्रीवृषभान दुलारी ॥ पंडित कोक संगीत भरी गुण कोटिक राजत गोप कुमारी ॥ प्रीतम के भुज दंड में शोभित संग में अंग अनंगम वारी ॥ तान तरंग न रंग बढ्यो रीसे राधिका माधव की बलिहारी ॥

कबित्त

जामा बन्यों जरी तास को सुन्दर लाल बंद अरु जर्द किनारी ॥ झालरदार बन्यों पटुका अरु मोतिन की छबि जात कहारी ॥ जैसी चालि चले गजराज कहे बलिहारी है मोज तिहारी देखत नैनन तांकि रही झुकि झांकि झरोखन वांके बिहारी

सुन्दर सुजान कान्ह सुन्दर ही पगिया शीश सुं
दर से नैन अधर सुन्दर बसुरिया ॥ सुन्दर भृकुटी
कमान सुन्दर पलकन के बान सुन्दर मुसिक्या
न मंद चितवन चित हरिया ॥ सुंदर बाजू बिराजें
सुन्दर बनमाल साजें सुन्दर गल हार मोती जामा
जो केसरिया ॥ सुन्दर कंकन अमोल सुंदर कुंडल
कपोल सुदर नारायण बोल दीन दरद हरिया ॥

कवित्त

वारि डारों शरद इंदु मुख छबि गोबिंद पर दिनेश
हू कों वारि नखन छटान पै ॥ कोटि काम वारि
डारों अंग २ स्याम लखि वारि डारों अलिन अली
कुंचित लटान पै ॥ नैनन की कोरन पै कंजहू कों
वारि डारों वारि डारों हंस हू कों चालि लटकान
पै ॥ देखि सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूं
कामधेनु वारि डारों भृकुटी मटकान पै

कवित्त

नयनन चकोर मुखचंद हू कों वारि डारों वारि

डारों चित्त मनमोहन चितचोर पै ॥ प्राण हूं कों वारि डारों हँसन दसन लाल हेरनि कुटिल वाके लोचन की कोर पै ॥ वारि डारों मन्त रंग अंग अंग स्यामास्याम हिलन मिलन रसरास की झकोर पै ॥ अतिही सुघर वर सोहत त्रिभंगी लाल सर्वस वारोंवा की ग्रीवा की मरोर पै

कबित्त

मुकट के रंगन पै इन्द्र को धनुष वारों अमल कमल वारों लोचन विशाल पै ॥ कुंडल प्रभा पै कोटि प्रभाकर वारि डारों कोटिन मदन वारों बदन विशाल पै ॥ तन की तरुण पै नीलज सजल वारों चपला चमक उर मोतिन की माल पै ॥ चाल पै मराल वारों मन हू कों वारि डारों और कहा २ वारों छबि नंद लाल पै

रागजैजैवंती

आजरी वावरी उजरी पाग पै मोलि के बांध्यौ है मंजन चोटा ॥ चंचल लोचन चाल मनोंहर अबही

गहि मान्यौ है खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगौरीसी लगत रेनमैन मानों कमल के जोटा ॥ नंददास र मरास कोटिन वारों आज बन्यों ब्रजराज कौ ढोटा

रागबिलावल

आलीरी रास मंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडिली रूप निधान ॥ चरणचारु हंसत भेद मिलवत गति भांति २ भ्रू बिलास मंद हास लेत नयनन नैनही में मान ॥ दोऊ मिलि राग अलापत गावत होडाहोडी उघटत देकर तारी तान ॥ परमानंद निरखि गोपीजन वारत हैं निज प्रान ॥

रागभैरव

निर्त्तत गोपाल संग राधिका बनी ॥ बाहुदंड भुज मंडल मध्य करत केलि सरस गान स्यामसंग कों भामिनी ॥ मोरमुकट कुंडल छबि काछनी बनी बिचित्र झलकत उपहार बिमल थकित चांदनी परम मुदित सुर नर मुनि बर्षत सब कुसुमन वारत तनमन प्राण कृष्णदास स्वामिनी

रागझिंझोटी

गोपी गोपाललाल रास मंडल माहीं ॥ तता थेईता सुगंध निर्त्तत गहि बाहीं ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छननन नन रूपसंग द्रगता द्रगता तलंग उघस्त सर साईं ॥ बीच लाल बीच बाल प्रति प्रति प्रति द्युति रसाल अविगति गति अति उदार निरस द्रग सराहीं श्रीराधा सुख शरद चंद पूछत जल श्रम अनन्द श्रीव्रजचंद लटक लटक करत मुकट छाईं ॥ त ततत तत सुघर गात सरिगम पद नीके ठाट और प्र दहि मलाद दाप दंपति अति सादहिं ॥ गावत रस भरे अनंद तानतान सुर अभंग उमगति छवि अति अनन्द रीझहिं हरि राधहिं ॥ छाये देवन्न बिमान देखत सुर शक्र भान देवांगना निधान रीझिमा पा वारहिं ॥ चकित थकित जमुना नीर खग मृग जगमग शरीर धन धन नंद के कुमार बलिबलि जाय सूरदास रास सुख निहारहिं

७

रागदेस

लाल कों नचन सिखावत प्यारी ॥ वृंदावन में रास रच्यौ है शरद रैनि उजियारी ॥ मान गुमान लकुट लिये ठाडी डरपत कुंज बिहारी ॥ थेई थेई करत लाल मन मोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥ कोउ मृदंग गहि कोउ बीणा बजावत बिहंसत ग्वारी ॥ छबि सों गावत खड़ी नचावत रीझ २ बलिहारी ॥ देखि २ ब्रह्मादिक नारद अचरज शोच बिचारी ॥ व्यास स्वामिनी सो छबि निरखत रीझि देत करतारी ॥

रागकाफी

देखौरी या लकुट की लटकन ॥ निरतत रास लिये राधा संग बैजंती बेसरि की अटकन ॥ पीतांबर छुटि जात छिनंछिन नूपुर शब्द पगन की पटकन ॥ सूरस्याम या छबि के ऊपर रूठो ज्ञान योग की भटकन

रागबिहाग

आज बनवारी बने मुरारी ॥ सखी कुंजबिहारी संग सोहै राधाप्यारी वृषभानु की दुलारी ॥ दोनों मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी ॥ मोर की मुकटधारी चंदन की खौर न्यारी भृकुटी कुटिल अलकें घूंघर बारी ॥ टेढ़ी चितवन प्यारी नासिका मोती सवारी मुरली अधर सप्त सुरन उचारी ॥ मोहि लीनी ब्रजनारी देह की दशा बिसारी दयासखी पायन परिके लीनी बलिहारी

रेखता

नांचत छबीला छैल नंद का कुमार है ॥ गलबाहीं दे पिया के सुन्दर सिंगार है ॥ इत मंद झीनी नूपुर अवाज है ॥ उत पायजेव पायल घन कीसी गाज है ॥ पगिया लसी कुमर के सिरपेच लाल है ॥ भृकुटी लगी ललेंडी प्यारी के भाल है ॥ कटि काछनी सुचोली पटुका किनार का ॥ दामन सुरंग सेला कीरति कुमार का ॥ कानों जड़ाऊ झुमका गल हीरा हार है ॥ मोतिन की माल सुन्दर शोभा अपार

है ॥ गुंजा गले गुनी के तर गुंजमाल है ॥ छतियांल
गी लला मां वंसी रसाल है ॥ नाशा बुलाक बेसरि
फूलें का मुकट सोहै ॥ प्यारी की नख छटा पर रबि
चंद कोटि मोहे ॥ दोनों रुके परस्पर छबि वेशुमार
है ॥ केशव खड़ा विलोके प्राणन अधार है

इति श्रीरासलीला

सम्पूर्णम

अथ नागलीला

प्रारम्भ

चलि २ सखी तहं जाइये जहां नंद के बालक भये
धनि २ यशोदा भागि तेरे कोकिला के दुख हरे ॥ को
इ गावे कोइ बजावे कोइ नांचे चंदना ॥ कोइ सुहागि
नि सोंठि भूनें कोइ बांधे बंदना ॥ बोलिये ब्रजराज
पंडित आ बिचारें शुभघरी ॥ आगि लावो दियो जालो
मुख जो देखो वंश को ॥ कंस मारण बंस तारण आय
प्रगटे नरहरी ॥ मथुरा में हरि जन्म लीन्हों गोकुल
लाल छिपाइयां ॥ बजे नगारे मधुपुरी में खबरि स-

व असुरन भई ॥ नाग के ढिंग कृष्ण पहुंचे हाथकी दाबन दई ॥ नाग नें फुंकार छोड़ी कृष्ण सामल हो गये ॥ कृष्ण नें जब गरुड हेरयौ गरुड पहुंचे आय के ॥ नाग नें जब गरुड देखे रह गये शीश नवा यके ॥
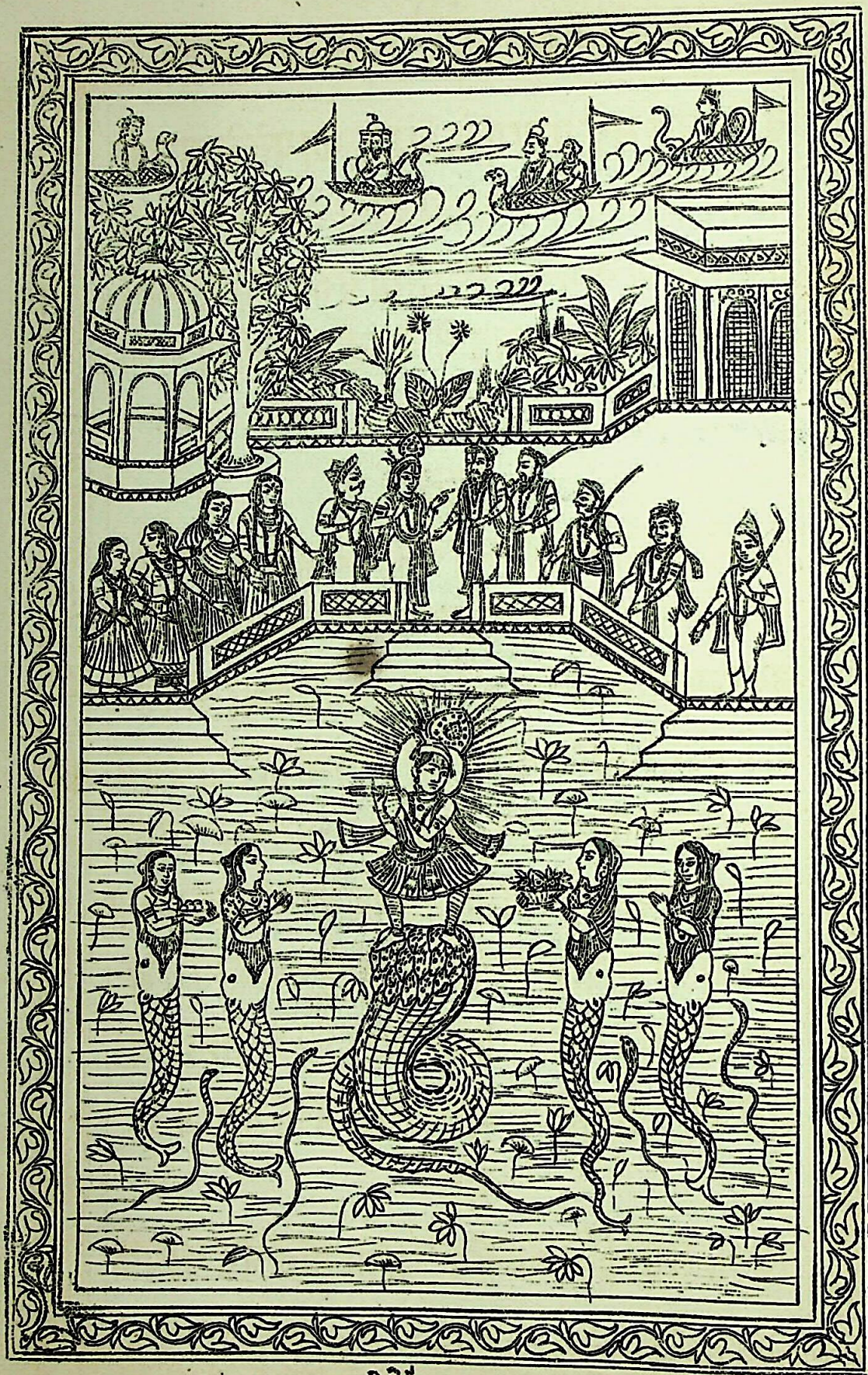
पद

नंद के नें कैसे २ नाथ्यौ नाग ॥ टेक ॥ कदंमवृक्ष तर बैठि सांवरौ नाग नथन के काज ॥ नाग वाको सोवत नागिनि वाकी जागै सोवत विषधर नाग ॥ अति विषियर और बड़ो भुजंगी विष के डारै आग ॥ राक पलक में तोहि डसि डारै जो मेरो जागे नाग ॥ नागिनि नाग जगाय दै अपनों कहु दह कों तजि जाय ॥ तोहिनाथ तेरे नागहि नाथों जब खेलूं व्रज फाग ॥ शंकर उठे सहस फन नीके फन फन फूंकी आग ॥ सूरदास की यही बीनती धनि यशुदा के भाग ॥ ७

पद

गैंद के संग कूदि बालक यमुनाजल पैठे धायके

नाग नागिनि करत क्रीड़ा हरि उतरे तहं जाय के॥
कौन दिश ते आये रे बालक कह तुमारो ग्राम है
कौन सखि के पुत्र हौ तुम कहा तिहारो नाम है ॥
पुरब दिश ते आयेरी नागिन गोकुल हमारो ग्राम
है ॥ मातु यशुदा पिता नंदजू कृष्ण हमारो नाम है
प्रभुजू के सन्मुख कहत नागिनि जा रे बालक भा
जि है ॥ तेरो रूप देखे दया उपजे नाग राजा जागिहै
भजे कुल को दाग लागे अब भजे कैसे बने ॥ होनी
हो सो होरी नागिन नाग तो नाथे बने ॥ असुर राजा
दुखी धरनी न्रपचोर बनि आइयां ॥ कंस सेती द्वं
द कीनों नाग नाथन आइयां ॥ के बालक तुम म
गजु भूले के घर नारि रिसाइयां ॥ के तुमारे मन
क्रोध उपजो बालक जूझन आइयां ॥ ना नागिनि
हम मगजु भूले ना घर नारि रिसाइयां ॥ न हमारे
मन क्रोध उपजो नाग नाथन आइयां ॥ लै बाल-
क गल हार माला सवा लख की बोरियां ॥ सो तो
लै घर जाहु बालक नाग सों देहुं चोरियां ॥ कह

करें गलहार माला कह करों लरव चोरियां ॥ वृं दावन में गढौ हिंडोला नाग की कौंडोरियां ॥ चौं सठ चोप मरोरि नागिन नागराज जगाइयां ॥ जा गियो बलवन्त योधा बालक जूरुन आइयां ॥ जब उठे प्रभु जल के राजा इन्द्र जल घहराइयां प्रभुजी के मुकट कों भपट कीन्हीं शब्द ताल ब जाइयां ॥ दोउन मिलिकें युद्ध कीन्हों शब्द ता ल बजाइयां ॥ सहस फन पर निर्त्त कीन्हों थेई २ शब्द उचारियां

स्तुति

कर जोरि नागिनि करति स्तुति कुटुंब सह उठिधा इयां ॥ करि कृपा अपराध क्षम प्रभु जासु हम पति पाइयां ॥ बावन रूप धस्यौ बलि द्वारे हरि आप अकार बढ़ाइयां ॥ कच्छ मच्छ बराह बपु धरि नरसिंह रूप दिरवाइयां ॥ हमजु दासी प्रभु तिहा री मति मारी छोडो नाग को ॥ प्राणदान तुम देहु हम को गरवो मेरे सुहाग को ॥ नन्द नंदन भयो

राजी कियौ काली त्याग को ॥ गरुड टेरत कौन
है क्यों पचै मेरे भाग को ॥ कालीदह में नाग ना
थ्यौ मथुरा कंस पछारियां ॥ प्रभु मदनमोहन रह
समंडल याहि बिधि सों गाइयां

इति नागलीला स-
माप्तम

अथ माटीखान लीला
प्ररम्भ ॥

रागबिलावल

खेलत स्याम पौरि के बाहर ब्रज लरिका संग सो-
हत जोरी ॥ जैसे आप तैसेही सब बालक अति अ
ज्ञान सब की मति भोरी ॥ गावत हांकदेत किल-
कारत द्युति देखत नंदरानी ॥ अति पुलकित गद
गद मृदुबानी मन२ हरषि सिहानी ॥ माटी लै हरि
मेलि लई मुख तबही यशोदा जानी ॥ सांटी लि
ये दौरि भुज पकरेउ श्याम लंगरेउ गनी ॥ लरि
कन कों तुम सब दिन झुठवत मोसों कहा कहै
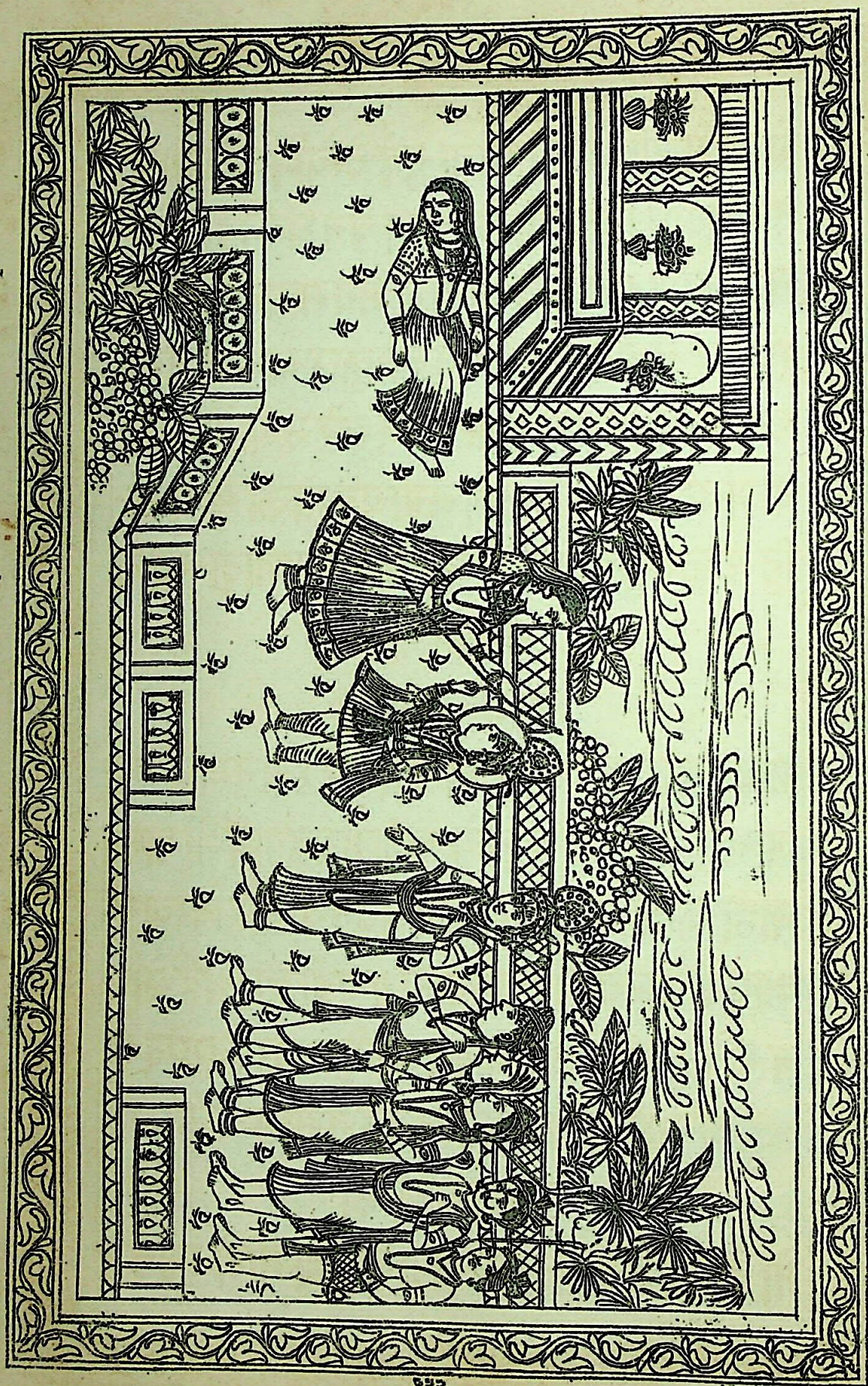
मैं मांटी नहिं खायी मैया मुहं देखेनि चहैगो॥ बदन उघारि दिखायौ त्रिभुबन बन घर नदी सुमेर नभ शशि रबि मुख भीतर हैं सब सागर धरणी फेर॥ यह देखत जननी मन ब्याकुल बालक मुख का आहि॥ नयन उघार बदन हरि मूंद्यो माता मन अबगाहि॥ झूंठे लोग लगाबत मोकों मांटी मोहि न सुहावै॥ सूरदास तब कहति यशोदा ब्रजलोगन यह भावै

रागधनाश्री

मोहन क्यों नहिं उगलै मांटी॥ बार २ अनुरुचि उपजावति महिर हाथ लिये सांटी॥ महंतारी सों मानत नाहीं कपट चतुरई ठाठी॥ बदन उघारि दिखाय आपनों नाटक की परिपाटी॥ बड़ी बार भई लोचन मूंदे भ्रमति जननि मन फाटी॥ सूर निरखि ब्रजनारि थकित भई कहत न मीठी खाटी

रागरामकली

मो॰ देखत जसुमति तेरो ढोटा अबही मांटी खाई॥

यह सुनिकें रिसकरि उठि धाई बांह पकरि लैआ
ई ॥ इक कर सों मुख गहिके गाठौ इककर लीनी
सांटी ॥ मारति हों तोहि अबहीं कन्हैया वेगि न उ-
गलै मांटी ॥ ब्रज लरिका सब तेरे आगे झूंठी कहत
बनाई ॥ मेरे कहें नहिं तू अब मानत दिखरावहुं
मुखवाई ॥ अखिल ब्रह्मंड खंड की महिमां दिख
राई मुख माहीं ॥ सिंधु सुमेर नदी बन पर्वत चक्र
त भई मन माहीं ॥ कर तें सांटि गिरत नहीं जानी
भुजा छांडि अकुलानी ॥ सूर कहै यशमति मुहं
मूंदौ बलिगई सारंगपानी

रागधनाश्री

नंदहि कही यशोदा रानी ॥ मांटी के मिस मुख
दिखरायौ तिन्हूं लोक रजधानी ॥ स्वर्ग पताल ध
रणि बन पर्वत बदन मांझ है आनी ॥ नदी सुमेरु दे
खि चक्रत भई याकी अकथ कहानी ॥ चितै रहे त
ब नंद युवति मुख मन मन करत बिनानी ॥ सू
रदास तब कहति यशोदा गर्ग कही यह बानी

रागबिलाबल

कहत नंद यसुमति सुनि बौरी ॥ ना जानियें कहा तें दे
ख्यौ मेरे कान्हहिं लावत ढोरीं ॥ पांच बरस कौ मेरौ क
न्हैयां अचरति तेरी बात ॥ वे काजहिं सांगीलै धावति
ता पाछें बिललात ॥ कुशल रहैं बलराम स्याम दोउ
खेलत खात अघात ॥ सूरस्याम कों कहा लगावति
बालक कोशल गात

रागबिलाबल

कान्ह नन्द सुधि करी स्याम की लावहु बोलि का
न्ह बलराम ॥ खेलत बड़ी बार कहुं लाई व्रजभीतर
कान्ह कोहि धाम ॥ मेरे संग आय दोउ बैठं उन बिन
भोजन कौनें काम ॥ यसुमति सुनति चली अति आ
तुर ब्रज घर २ टेरत लै नाम ॥ आजु अबेर भई कहुं खे
लत बोलि लेहु हरिकों कोउ बाम
ढूंढि फिरी नहीं पावति हरि कों अति अकुलानी चित
बत धाम ॥ बार २ पछिताति यशोदा बासर बीतिगये
युग याम ॥ सूरस्याम कों कहुं न पावति देखे बहु

बालकयकठाम

रागनट

कोऊ भाई बोलि लेहु गोपालहिं ॥ मैं अपने कों पं
य निहारति खेलत बेर भई नंदलालहिं ॥ टेरत बड़ी
बेर भई मोकों नहि पावति घनस्याम तमालहिं ॥ सि
धि जेंवन सिरात नंद बैठे ल्यावहु कान्ह बोलि तत
कालहिं ॥ भोजन करहिं नंद संग मिलि के भूख ल
गी ह्वैहै मेरे बालहिं ॥ सूरस्याम मग जोवति यसुमति
आयगये सुनि बचन रसालहिं

रागसारंग

नंद बुलावत हैं गोपाल ॥ आवहु बेगि बलैया लैहों
मोहन स्याम तमाल ॥ परसे थार धरेउ मग जोवत बो
लत बचन रसाल ॥ भात सिरात तात दुख पावत क्यों
न चलौ ततकाल ॥ हों वारी इन म्रति पायन पर दौरि
दिखावत चाल ॥ छांडि देहु तुम लाल लटपटी यह ग
ति मंद मराल ॥ सो राजा जो अगम न पहुंचे सरसु भ
वन उताल ॥ जो जै हैं बलराम अगम नें तो हंसि हैं

सबग्वाल

रागबिलावल

हरि कों टेरत है नंदरानी॥ बहुत अबेर भई कहुं खे
लत कहां रहेउ सारंगपानी॥ सुनतहि टेर दौरि तबआ
ये कब के निकसे लाल॥ जेंवत नहीं नंद तुमरे विन
बेगि चलौ गोपाल॥ स्यामहिं लाई महरि यशोदा तुर
तहि पायं पखारे॥ सूरदास प्रभु संग नंद के बैठे हैं दो
उ बारे॥

रागसारंग

जेंबत नंद कान्ह इकठौर॥ कछुक खात लपटात
दुहूं कर बालक हैं अति भोरे॥ बरा कौर मेलत मुख
भीतर मिरचि दशन तकि तोरे॥ तीक्षण लगी नयन
भरि आये रोवत बाहिर दौरे॥ फूंकत बदन रोहिणी
ठाडी लिये लगाय अंकोरे॥ सूरस्याम कों मधुर कौर
दै कीने तात निहोरे॥

सारंग

जेंवत कान्ह नंद की कनियां॥ कछुक खात कछु ध

रणि गिरावत छवि निरखति नंद रनियां ॥ बरी बरा वेसन बहु भांतिन व्यंजन बिबिधि अंगानियां ॥ डारत खात लेत अपने कर रुचि माखन दधि दुनियां ॥ मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छबि धनियां ॥ आपुन खाय नंदमुख नावत सो सुख कहत न बनियां ॥ जो रस नंद यशोदा बिलसत सो नहिं तिहु भुवनियां ॥ भोजन करि नंद अचवन लीन्हो मांगत सूर जुठनियां

इति श्रीमांटीखान लीला

समाप्तम्

अथ खेलन लीला

प्रारम्भ

रागराम कली

खेलत स्याम ग्वालन संग ॥ सुबल हलधर अरु श्रीदामा करत नानारंग ॥ हाथ तारी देत भाजत सबै रुचि करि होड़ ॥ बरजे हलधर स्याम तुम जिन चोट लागे गोड़ ॥ तब कहेउ मैं दौरि जानत बहुत बल मो गात

मेरी जोरि है श्रीदामा हाथ मारे जात ॥ बोलि तबहीं उ
ठे श्रीदामा धरेउ स्याम हंकारि ॥ जानि कें में रह्यों ठाढ़ो
छुवत कहा जु मोहि ॥ सूरस्याम खीजत सखन सौं म
नहिं कीनों कोहि

रागगौरी

सखा कहत हैं स्याम खिसियाने ॥ आपुहि आपु लु-
क भये ठाढ़े अब तुम काह रिसियाने ॥ बीचहिं बोलि उ
ठे हलधर तब इन के माय न बाप ॥ हारिजीत कें नेंक
न समझत लरिकन लावत पाप ॥ आपुनि हारि सखासें
झगरत यह कहि दियौ पठाय ॥ सूरस्याम उठि चले रोय
कें जननी पूछत धाय

रागसारंग

मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायो ॥ मोसों कहत मोल को
लीयौ तू कब यशुदा जायौ ॥ कहा करों यहि रिस के मारे
खेलन हू नहिं पायौ ॥ पुनि २ कहत कवन है माता कवन
है तेरी तात ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत सँवल गात
चुटकी दै दै ग्वाल सुनावत हंसत सबै मुसकात ॥ तूमो

ही कों मारन सीखी दाउहि कबहुं न खीजै ॥ मोहन को
मुख रिस समेत ये बातें सुनि २ रीझै ॥ सुनी कान्ह बल
भद्र चबाई जनमहिं को वह धूत ॥ सूरस्याम मोहि गो
धन की सौं है मैं माता तू पूत

राग बिलाबल

खेलन अब मेरी जाइ बलैया ॥ जबहि मोहि देखत ल
रिकन संग तबहि खिजत बलि भैया ॥ मोसों कहत तात
बसुदेव को देवकी तेरी मैया ॥ मोल लियो कछु दै बसु
देवहिं करि २ यतन बड़ैया ॥ अब बाबा कहि कहत नंद
सों यसुमति सों कहै मैया ॥ ऐसे कहि सब मोहि खिजा
वत तब उठि चल्यो खिसैया ॥ पाछें नंद सुनत हैं ठाढ़े
हंसत २ उर लैया ॥ सूर नंद बलिरामहिं धिरक्यो सुनि
मन हरषि कन्हैया

राग रामकली

खेलन चलौ बाल गोबिंद ॥ सखा प्रिय द्वारे बुलावत
घोष बालक चन्द ॥ तृषित हैं सब दरस कारण चतुर चा
त्रक दास ॥ बरषि छवि नौ बारि घस तन हरत लोचन

प्याम ॥ विनय बचन सुनत कृपानिधि चले मनुहारि बा
ल ॥ ललित लघु २ चरण कर उर बाहु नयन विशाल ॥
अजिर पद प्रतिबिंब राजत चलत उपमा पुंज ॥ प्रति चर
ण मानों हेम बसुधा देत आसन कुंज ॥ सूर प्रभु की निर
खि शोभा रहे सुर अवलोकि ॥ शरद चंद चकोर मानों
रहे थकित बदन विलोकि

राग धनाश्री.

खेलन कों हरि दूरि गयोरी ॥ संग २ धावत डोलत कैधों
बहुत अबेर भयोरी ॥ पलक ओट भावति नहिं मोकों
कहा कहों तोहि बात ॥ नंदहि तात २ कहि बोलत मोहि
कहत है मात ॥ इतनी कहत स्याम घन आये ग्वाल स
खा सब चीन्हों ॥ दौरि जाय उर लाय सूरप्रभु हरषि यशो
दा लीन्हों ॥

राग बिहागरो

खेलन दूरि जात कत कान्हा ॥ आजु सुन्यो मैं हाऊ आ
यो तुम नहिं जानत नान्हा ॥ यक लरिका अबही भजि
आयो रोवत देख्यो ताहि ॥ कान तोरि वह लेत सबन

को लरिका जानति जाइ ॥ चलौ न बेगि सबेरे जैये भा जि आपने धाम ॥ सूरस्याम यह बात सुनतही बोलि लिये बलराम

राग जयतिश्री

दूरि खेलन जिन जाउ ललन मेरे हाऊ आये हैं ॥ तबहंसि बोले कान्ह री मैया इनकों किन्हें पठाये हैं ॥ बैठि पताल ब्याल गहि नाथ्यौ तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरप त सुनि २ ये बातें कहत हंसत बलदाऊ ॥ सप्त रसातल शेषासन रहि तब की सुरति भुलाऊ ॥ चारि वेद लै गयो संखसुर जल में रहेउ लुकाऊ ॥ मीन रूप धरि कें जब मारेऊ तबहि रहे कहं हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरन के हित मंदर जलहिं खसाऊ ॥ कमठ रूप धरि धरणि पीठि पर सुखपायो सुरराऊ ॥ जब हिरण्याक्ष युद्ध अभिलाष्यौ मन में अति गरबाऊ ॥ धरि बराह रूप रिपु मारेउ लै छिति दंत अगाऊ ॥ बिकटरूप अवतार धरेउ जब सो प्रह्लाद बचाऊ ॥ धरि नृसिंह जब असुर बिदारेउ तहां न देख्यौ हाऊ ॥ बामन रूप

धरेऊ बलि छलि करि तीन पैंड बसुधाऊ॥ अमजलब्र
ह्म कमंडल राख्यौ दरशि चरण परसाऊ॥ मारेऊ मुनि
बिनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊ॥ इकइस बार
करी निछत्र छिति तहां न देख्यौ हाऊ॥ रामरूप रावण
जब मारेउ दश शिर बीस भुजाऊ॥ लंक जराय क्षारज
ब कीनी तहां रहे कहुं हाऊ॥ मांटी के मिस बदन बि-
कासेऊ जब जननी डरपाऊ॥ मुखभीतर त्रयलोक
दिखायऊ तबहुं प्रतीत न आऊ॥ नृपति भीम सों यु
द्ध परस्पर तहं वह भाव बताऊ॥ तुरत चीर दुइ टूक
कियो धर गेसे त्रिभुवन राऊ॥ भक्त हेत अवतार धरे
उ सब असुरन मारि बहाऊ॥ सूरदास प्रभु की यह ली
ला निगम नेति कहि गाऊ॥

रागरामकली

यशमति कान्हहिं यह समुझावति॥ सुनहु स्याम
तुम बडे भये अब यह कहि स्तन पान छड़ावति॥ ब्रज
लरिका तोहि पीवत देखें हंसत लाज नहिं आवत॥
जैहैं बिगरि दांत हैं आछे तो तें कहि समुझावति॥ अ

जहं छांडि कही कोरि मेरी ऐसी बात न भावति ॥ सूर स्याम यह सुनि मुसिकाने अंचल मुखहिं लुकावत

रागसारंग

खेलन जाहु ग्वाल तोहि टेरत ॥ यह सुनि कान्ह भयो अति आतुर द्वारे तन फिरि २ जब हेरत ॥ बार २ हरि मातहिं बूझत कहि चौगान कहां है ॥ दधि मथानि के पाछें देखौ लै मैं धरेउ तहां है ॥ लै चौगान बड़ो अपने कर प्रभु आये घर बाहर ॥ सूरस्याम बूझत सब ग्वालन खेलहिंगे केहि गहर ॥

रागनट

खेलत बने घोस निकास सुनहुं स्याम चतुर शिरोमणि यहां है घर पास ॥ कान्ह हलधर बीर दोऊ अति भुजा दुहुं जोर ॥ सबल श्रीदामा सहित अरु सर्व भये यक ओर और सखा बराय लीन्हे गोप बालक वृंद ॥ चले ब्रज की खोरि खेलत अति उमगि नंदनंद ॥ बड़ा धरणी डारि दीन्हो लै चले ढरकाय ॥ आप आपनि घात निरखत खेल जम्यो बनाय ॥ सखा जीतत स्याम जाने तब करी क

कु पेल ॥ सूरदास कहत श्रीदामा कौन रोसो खेल

रागबिलावल

खेलत मैं को काको गुसैयां ॥ जातिपांति हमते बड़ो नाहिन हम बसत तुम्हींरी छैयां ॥ अति अधिकार ज-नावत यांतें गातें अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करै तासों कहा खेलें रहे बैठि जहंतहं सब गोइयां ॥ हरिहारेजी ते श्रीदामा वर सबही कत करत ससैयां ॥ सूरस्याम प्रभु खेलोई चाहत दाव दियो करि नंददुहैयां

इति श्रीखेलन लीला

समाप्तम्

अथ केशीवध लीला

प्रारम्भ

रागमारू

असुरपति आनिअति गर्ज धरेउ ॥ सभामांझ बैठतु गर्जतु है बोलत रोष भरेउ ॥ महामहाजे सुभट दैत्यकुल बैठे सब उमराउ ॥ तिहूं भवन भरि गम्य है मेरो मो सन्मुख को आव ॥ मो समान मेरे सेवक नाही जाय कहें कछु

दाव॥ काहि कहों को ऐसो लायक ताते मोहि पछिताव
नृपतिराज आयुस दे मोको ऐसो कौन बिचार॥ तुम अप
ने मन शोचत जाको असुरन के सरदार॥ जो करि क्रोध
जाहि तन ताको तिनको होत संहार॥ मथुरापति यह सु
नि हर्षित भये मनहिं धरो अति भार॥ श्वेत छत्र फहरा
त शीश पर ध्वज पताक बहु बान॥ ऐसो को जो मोहि
नहिं जानत तिहुं भुवन मेरी आन॥ असुर बंश में महा
बली सब कहो काहि हो जान॥ तनक २ से महरि ढठौना
करि आऊं बिन प्रान॥ यह कहि कंस चितै केशी तन क
हेउ जाहि करि काज॥ तृणावर्त्त शकटासुर पुतना इन
के हत सुनि लाज॥ तोतें कछु है है मैं जानत धरि आ
नहिं ज्यों बाज॥ कलबल छल करि मारि तुरत ही लै
आवहु अब आज॥ अति गर्बित ह्वै कहेउ असुर सुत वि
तक बात यह आहि॥ कहो मारों जीवत धरि ल्याऊं महं
ताहि॥ आज्ञा पाय असुर तब धायो मन में यह अवगा
हि॥ देखों जाय कौन वह ऐसो कंस डरपत है जाहि॥
यशुमति तव अकुलाय परी गिरि तन की सुधि नरहा

य ॥ नंद पुकारत आरत व्याकुल टेरत फिरत कन्हाय ॥ न यौ चरित कछु गोपपुत्र भयौ ब्रज सन्मुख गयौ धाय ॥ ब ल मोहन ग्वालन बालक संग खेलत देखे जाय ॥ धाय मिल्यौ कोउ रूप निशाचर हलधर सेन बताय ॥ मनमो इन मनही मुसकाने खेलत फलनि जनाय ॥ द्वै बालक बैठारि सयाने खेल रच्यौ ब्रज खोरि ॥ और सखा सब जु रिजुरि ठाढ़े आपु दनुज संग जोरि ॥ फल कौ नाम जनाव न लागे हरि कहि दियौ अभोरि ॥ कंध चढ्यौ जिमि सिंह महाबल तुरतहिं बीच निहोरि ॥ तब केशी हयवर बपु काढ्यौ लै गयौ पीठि चढ़ाय ॥ उतरि परे हरि ताऊपर ते कीन्हों युद्ध अघाय ॥ दाउ घाउ सब भांति करतु है तब हरि करत मरोरि ॥ तबहिं असुर कोपकरि पीठधरि धर णी पकर पछोरि ॥ छलबल करि मोहन पकरन कों इ रिजी बुद्धि उपाये ॥ राक हाथ मुख भीतर नायौ पकरि केश धरि दाये ॥ बहुरि यों फेरि असुर गहि पटक्यौ शब द उठ्यौ अघात ॥ चौंकि पर्यौ कंसासुर सुनि के भीतर चल्यौ परात ॥ यह कोउ भलौ नहीं ब्रज जन्म्यों याते ब

डुतडरात ॥ जान्यों कंस असुर गहि पटक्यो नंदमहरि के तात ॥ और सखा सब रोवत धाये आयगये नरनारि ॥ धाये नंद यशोदा धाई नितप्रति कहा गोहारि ॥ ग्वैलरूप यक खेलतहो संग लैगयो कांधे डारि ॥ नाजानिये आय धों को यह कपटरूप बपु धारि ॥ दैत्य संहारि कृष्ण जहां आये ब्रजजन मरत जिवाय ॥ दौरि नंद उरलाय मिले सुत मिली यशोदा माय ॥ खेलत रहेउ संग मिलि मेरे लै उडिगयो अकास ॥ आपुनिही गिरिपरयो धरणि पर मैउँ परेउ तिहि पास ॥ डरडरात जिय बात कहत चहिं आये हैं करि नास ॥ सूरस्याम घर यशमति लैगई ब्रज जनदिये हुलास

रागसरंग

यशमति बूझति है गोपालहिं ॥ सांझहि की बिरियां भइ सखिवरी में डरपति जंजालहिं ॥ जब ते तृणावर्त्त ब्रज आयो तब ते मो जिय शंक ॥ नैनन ओट होय पलकन मों मन२ करत अशंक ॥ यहि अंतर बालक सब आये नंद-हि करत गोहारि ॥ सूरस्याम को आय कबन धों लैगयो

कांधे डारि

सारंग

खेलन दूरि जात कत प्यारे ॥ जब ते जन्म भयो है तेरो तब ही ते यहि भांति लल्लारे ॥ कोऊ आवत युवती मिस करिकें कोऊ लै जात अकास कला रे ॥ अब लगि बचे कृपा देवि न की बहुत गये मरि शत्रु निहारे ॥ हाहा करति पायँ तेरे लगति अब जनि दूरि जाहु मेरे वारे ॥ सुनहु सूर यशमति सुत बोधति विधि के चरित सबै हैं न्यारे

कान्हरा

आज कन्हैया बहुत बच्यौरी ॥ खेलत रहेउ घोष के बाहर कोउ आयो शिशरूप रच्यौरी ॥ धर्म सहाय होत है जहं तहं श्रम करि पूरब पुण्य संच्यौरी ॥ सूरस्याम अब के बचि आये व्रज घर २ सुखसिंधु मच्यौरी

कान्हरा

बड़े भागि हैं महरि महर की ॥ लै गयो पीठि चढ़ाय असुर यक कहा कहों उबरन या हरि की ॥ नंद घरनि कुलदेव मनावति तुमहिं लाज सुत घरी पहर की ॥ जहं

तहं तुमहिं सहाय सदां हौ जीवनि है यह स्याम सहरवी
हरष भरे नंद करत बधाई दान देत कहा कहें अवर की
पंचशब्द धुनि बाजत गावत नांचत मंगलचार चहर-
की ॥ अंकन भरि२ लेत स्याम कों व्रज नरनारि अति हि
य मन हरखी ॥ सूरस्याम संतन सुखदायक दुष्टन के उर
शालत करखी

रागनट

खेलत स्याम अपने रंग नंदलाल निहारि शोभा निरखि
थकित अनंग ॥ चरण की छबि निरखि डरप्यौ अरुण
गगन छुपाय ॥ जानु रम्भा की सबै छबि निदरि लई छु
डाय ॥ युगल जंगधन खंभ रंभा नहिन समसर ताहि ॥
कटि निरखि केहरि लजाने रहे बन घन चाहि ॥ हृदय ह
रिनख अति बिराजत छबि न बरणी जाय ॥ मनों बाल
क बारिघन नव चंद दई दिखाय ॥ मुकत माल विशाल
उरपर कछु कहों उपमाय ॥ मनों तारा गगन वेष्टित निशि
गगन रहे छाय ॥ अधर अरुण अनूप नासा निरखि ज
न सुखदाय ॥ मनों सुक फल बिंब कारण लैन बैठ्यौ

आय ॥ कटि अलक बिनु पवन के मानों अलि शिशु जाल ॥ सूर प्रभु की ललित शोभा निरखि रीझबाल

रामकली

करि स्नान नंद घर आये ॥ लै जल जमुना को झारी भरि कंज सुमन कहुं पाये ॥ पायं धोय मंदिर पग धारे प्रभु पूजा जिय जान ॥ स्थल लीप पात्र सब धोये काज देव के कान ॥ बैठे नंद करत हरि पूजा विधिवत सों बहु भांति ॥ सूरस्याम खेलत ते आये देखत पूजा जात ॥

रागगुर्बरी

नंद करत पूजा हरि देखत घंट बजाय देव अन्हवायौ दल चंदन लेपत ताकों पट अंतर दैके भोग लगायो ॥ अचवन दै बीरा आगें धरि आरति करी बनाई ॥ कहत कान्ह बाबा तुम अरप्यौ देव नहीं कछु खाई ॥ चितै रहे तब नंदमहरि मुख सुनहुं कान्ह की बात ॥ सूरस्याम देवन कर जोरें कुशल रहैं जासों गात ॥

धनाश्री

यशुदा देखत ही ढिंग ठाढ़ी ॥ बाल दशा अवलोकि

स्याम की प्रेममगन चित बाढ़ी ॥ पूजा करत नंद जहं बैठे ध्यान समाधि लगाय ॥ चुपही आनि कान्ह मुख मेल्यौ देखौ देव बड़ाय ॥ देखें नंद शिला नहिं आगें तब मन अचरज आय ॥ कहां गयौ मेरे आगें ही ते को लैगयो उठाय ॥ तब यशुमति सुत बदन दिखावति देखौ बदन कन्हाय ॥ मुख कत मेलि देवता राख्यौ घाले सबै नसाय ॥ बदन पसारि शिला जब दीनी तीनो लोक दिखाये ॥ सूर निरखि मुख नंद चकित भये कहत नहीं कछु आये

राग आसावरी

हंसत गुपाल नंद के आगे नंद स्वरूप न जान्यों री ॥ निर्गुण ब्रह्म सगुण लीला धरे सोई सुत करि मान्यों री ॥ एक समय पूजा के अवसर नंद समाधि लगाई री ॥ सालिग्राम मेलि मुख भीतर बैठि रहे अरगाईरी ॥ ध्यान बिसर्जन कीन्हें नंदजू मूरति आगे नांहीरी ॥ कहो गुपाल देवता कहा भये यह बिसमय मनमाहींरी ॥ मुख ते काढि दयो यदुनंदन तबहिं नंद के हाथ री ॥ सूरदास

स्वामी सुखसागर रवेल रच्यौ व्रजनाथरी
इति श्रीकेशीवधलीला
समाप्तम
अथ श्रीवरुणलीला
प्रारम्भ
रागबिलावल

उत्तम शुक्ल एकादशि आई ॥ बिधिवत व्रत कीन्हों नं दराई ॥ निराहार जलपान बिवर्जित ॥ पापरहित फल धर्महिं अर्जित ॥ नारायण हित ध्यान लगायौ ॥ औरन ही कछु मन बिरमायौ ॥ बासर ध्यान करत सब बीत्यौ निशिजागरण करत मनचीत्यौ ॥ पाटंबर दिवि मंदिर छायौ ॥ पुहपमाल मंडली बनायो ॥ देव महल चंदन हिं लिपायौ ॥ चौक देय बैठकी बनायौ ॥ शालिग्राम तहां बैठायो ॥ धूपदीप नैवेद्य चढायौ ॥ प्रेमसहित कर भोग लगायो ॥ आरति करि सब मांथौ नायो ॥ बहु बिन ती करि देव मनायो ॥ पुजो आस जो २ मन भायौ ॥ सा दर सहित करी नंद पूजा ॥ तुम तजि और न जानूं दूजा

तृतीय पहरजब रैनि बिताई ॥ नंदमहरि सों कहेउ बु
लाई ॥ दंड एक द्वादशी सकारे ॥ पारन की विधि कर
हु सवारे ॥ यह कहि नंदगये यमुना तट । लै धोती झा
री विधिक्रम घट ॥ झारीभरि यमुनाजल लीन्हों ॥ बा
हरजाय देह कृत कीन्हों ॥ लै मृतिका कर चरण परव
री ॥ अति उत्तम सो करी सुखारी ॥ अचवन लेन निहु
रे नंद पानी ॥ जल बाजत दूतन तब जानी ॥ नंद बांधि
लैगये पतालहिं ॥ बरुणपास लाये ततकालहिं ॥ जा
न्यों बरुण कृष्ण के तातहिं ॥ मनही मन हर्षित हिय
चातहिं ॥ भीतर लै राखे नंद नी के ॥ अंतःपुर महल
न रानिन के ॥ रानी सबै नंद कों देख्यौ ॥ धन्यजन्म
अपनों करि लेख्यौ ॥ इन के सुत त्रैलोक गुसाईं ॥
सुरनर मुनि सब के हैं साईं ॥ बरुण कहेउ मन हर्ष ब
ढ़ायौ ॥ बड़ी बात भइ नंदहि ल्यायो ॥ अंतर्यामी जान
हि बाता ॥ अबही आवत है जगत्राता ॥ जाको ब्रह्म
अंत न पायौ ॥ ता को मुनिजन ध्यान लगायौ ॥ जाकों
नेति निगम गावत हैं ॥ जाकों मुनिबर बन ध्यावत हैं

जाको ध्यान धरै शिव योगी ॥ जाकों सेवत सुरपतिभो
गी ॥ जो प्रभु जल थल है सब व्यापक ॥ जो हैं कंसग
रब को दापक ॥ गुण अतीत अविगत अविनाशी ॥
सो ब्रज में खेलत सुखरासी ॥ धन्य मेरे भ्रतनंदहि
ल्याये ॥ करुणामय अब आवत ध्याये ॥ महरि क
ही तब सब ग्वालनि कों ॥ बड़ी बार भई नंदमहर को
गये ग्वाल तब नंद बुलावन ॥ देख्यौ जाय जमुन ज
ल पावन ॥ जहंतहं ढूंढि ग्वाल घर आये ॥ धोती अ
रु झारी तहं पाये ॥ मन२ शोच करत अकुलाये ॥ कही
यशोदहि नंद न पाये ॥ धोती तट हमने यह पाई ॥ सु
नत महरि गयौ मुख सुखाई ॥ निशा अकेले आजु सि
धाये ॥ काहु धों जलचर धरि खाये ॥ यह कहि यश
मति रोय पुकारे ॥ मो बरजत कत रैनि सिधारे ॥ ब्रज
जन लोग सबै उठि धाये ॥ यमुना के तट कहूं न पाये
बन२ ढूंढत गांव मंझारे ॥ नंद२ कहि लोग पुकारे ॥ खे
लत ते हरि हलधर आये ॥ रोवत मातु देखि दुख पा
ये ॥ कत रोवति है यशुदा मैया ॥ बूझत जननीं सों

दोउ भैया ॥ कहत स्याम जनि रोवै माता ॥ अबहीं आव
तहैं नंद ताता ॥ मो ते कहिगये अबही आवन ॥ रोवै ज
नि मैं जात बुलावन ॥ सब के अंतरयामी हैं हरि ॥ लै
गयो बांधि बरुण नंदहि घर ॥ यह कारज वाकों हम दी
न्हों ॥ वाके दूतन नंद न चीन्हों ॥ बरुणलोक तबहीं
प्रभु आये ॥ सुनत बरुण आतुर ह्वै धाये ॥ आनंद कियौ
देखि हरि को मुख ॥ कोटि जन्म के गये सबै दुख ॥ ध-
न्य भाग मेरे बड़ आजू ॥ चरणकमल दर्शन शुभ का
जू ॥ पाटम्बर पांवड़े डराये ॥ मङ्गल बंदन बार बंधा
ये ॥ रतन खचित सिंहासन धारेउ ॥ तेहि पर कृष्णहिं
लै बैठारेउ ॥ अपने कर प्रभु चरण पखारे ॥ जे कमला
उरते नहिं टारे ॥ जे पद परसि सुरसरी आई ॥ तिहुं लोक
है विदित बड़ाई ॥ ते पद बरुण हाथ लै धोये ॥ जन्म
जन्म के पातक खोये ॥ कृपासिंधु अब शरण तिहारी
यहि कारण अपराध बिचारी ॥ आपु चले हरि नंदहि
देखत ॥ बैठे नंदराज बर भेषत ॥ नृपरानी सब आगे
ठाढ़ी ॥ सुखते सब स्तुति करि गाढ़ी ॥ पायन परी कृष्ण
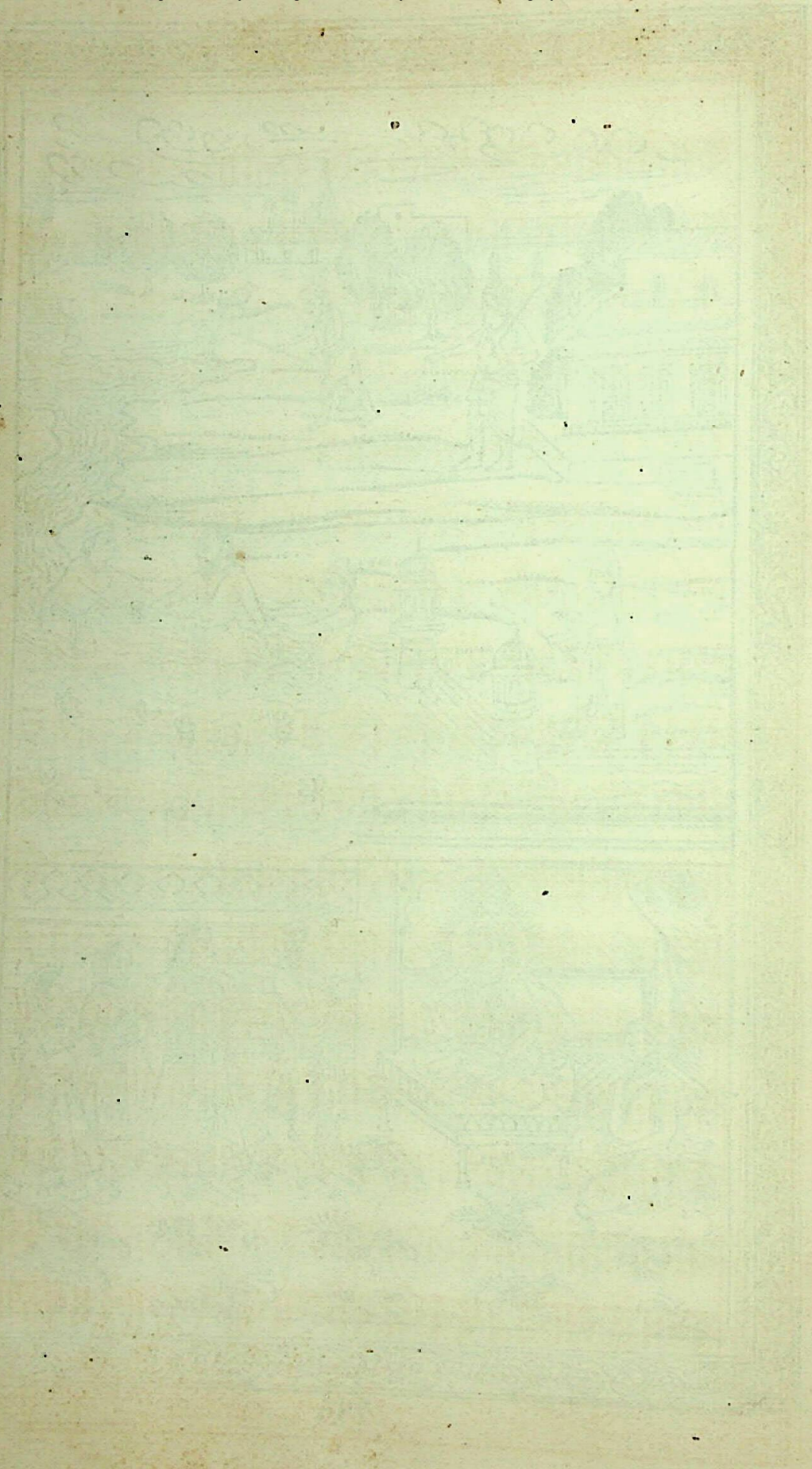
के रानी॥ धन्य जन्म सबही कहि बानी॥ धन्य नंद धनि धन्य यशोदा॥ धनि २ तुमहिं खिलवत गोदा॥ धनि व्रज धनि गोकुल की नारी॥ पूरण ब्रह्म जहां बपु धारी॥ शेष सहस मुख बरणि न जाई॥ सहज रूप कहा करे बड़ाई॥ देखि नंद तब करत बिचारा॥ यह कोऊ आय बड़ो अवतारा॥ नंदमहरि अति हर्ष बढ़ायो॥ कृपासिंधु मेरे गृह आयो॥ बरुणहिं दीनी लोक बड़ाई॥ वृंदाबन रज कैरी सदाई॥ बरुण थापि नंदहिं लै आये॥ महरि गोप सब देखन धाये॥ नंदहिं बूझत हैं सब बाता॥ हम अति दुखित भये सुनि गाता॥ काल्हि इकादशि ब्रत मैं कीन्हों॥ निशि जागरण नेम यह लीन्हों॥ तीनि पहर निशि जागि बिहाई॥ तब लीन्हों मैं महरि बुलाई॥ एक दंड द्वादशी सुनाई॥ ता कारण मैं करी चढ़ाई॥ नैम नहाय गयो जमुनाजल॥ एक दंड द्वादशी कयक पल॥ गयो यमुन भीतर कटि लौं भरि॥ बरुण दूत तब मोहि लैगो धरि॥ तहां ते जाय कृष्ण मोहि ल्यायो॥ यह कोउ बड़ो पुरुष है आयो॥ इन की महिमा कोउ न जानें॥ बरुण

कोटि सुख इनहिं बखानें॥ रानी सहित पर्यो चरणन तर॥ बंदनवार बंधे महलनघर। मेरो कह्यो सत्य करमानें॥ इन कोंनर देही जनिजानों॥ यसुमति सुनि चक्रत यह बानी॥ कहत२ यह अकथ कहानी॥ व्रज नरना रि सुनत यह गाथा॥ इनते हम सब भये सनाथा॥ माया मोह करि सबै भुलाये॥ नंदहि बरुण लोक ते लाये॥ नंद यकादशि बरणि सुनाई॥ कहत सुनत सब के मन भाई॥ यह प्रताप नंदहि दिखराई॥ सूरदास प्रभु गोकुँलराई॥ ७

राग*कान्हरो

नंदहि कहत यशोदा रानी॥ मोहि बरजत निशि गये यमुन तट पैठे जाय अकेले पानी॥ अबकी कुशल परी पुण्यन ते द्विज निकरो कछु दान॥ बोलि लेहु बाजने बजावहिं देहु मिठाई पान॥ गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंद दुवार॥ सनहु सूर यह कहति यशोदा नंद बचे यहि बार

बिलावल

कहत नंद यसुमति सुनि बात ॥ अब अपने मन सोच कर
त कित जाके त्रिभुवन पति सौ तात ॥ गर्ग सुनाय कही
जो बाणी सोई २ प्रगटत होतइ जात ॥ इनते और कोउ
नहिं समरथ येही हैं सबही के नाथ ॥ मायारूप मोह-
नी लाई डारे भुले सबै ये गाथ ॥ सूरस्याम खेलत ते आ
ये माखन मांगत दे मा हाय ॥

तबहिं यशोदा माखन लाई ॥ मैं मथि के अबही धरि रा
ख्यो तुमहिं काज मेरे कुंवर कन्हाई ॥ मांगि लेहु येही
बिधि मोसों मो आगे तुम खाहु ॥ बाहर कभू कछू जनि
खैयो दीठ लगेगी काहु ॥ तनक २ कछु खाहु लला मेरे
जो बढ़ि आवै देह ॥ सूरस्याम अब होहु सयाने बैरिन
के मुख खेह

हरि के बाल चरित्र अनूप ॥ निरखि रही ब्रजनारी य
क टक अंग २ प्रति रूप ॥ बिथुरी अलकें रही बदन पर
बिना पवन सुभाय ॥ देखि कंजन चंद के बश मधुप
करत सहाय ॥ सजल लोचन चारु नासा परम रुचिर
बनाय ॥ युगल खंजन करत अब नित बीच किय ब-

न राय ॥ अरुण अधर दशननि झाईं कहों उपमा थोरि ॥ नीलपट बिच मोति मानें धरे बंदन बोरि ॥ सुभग बाल मुकुंद की छबि बरणि कापै जाय ॥ भ्रुकुटि परभासि बिंदु सो क्यों सकै सूर जु गाय

राग कान्हरौ

सांझ भई घर आवहु प्यारे ॥ दौरत कहा चोट पुनि लगिहै पुनि खेलहुगे होत सकारे ॥ आपुहि जाय बांह गहि ल्याई खेल रही लपटाई ॥ धूरि झारि तातौ जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई ॥ सरस बसन तन पोंछि स्याम कौ भीतर गई लिवाई ॥ सूरस्याम कछु करौ बियारी पुनि राख्यौ पौढाई

राग बिहागरौ

बल मोहन दोउ करत बियारी ॥ प्रेम सहित दोउ सुतन जिंवावति रोहिणि अरु यशुमति महंतारी ॥ दोउ भैया मिलि खात एक संग रतन जटित कंचन की थारी ॥ आलस सों करि कौर उठावत नयनन नींद झमकि रहि भारी ॥ दोउ माता निरखत आलस मुख छबि पर तन मन

डरीत चारी ॥ बारबार जसुहात सूरप्रभु यह उपमा कवि कहै कहारी

केदारा

कीजे पान ललारे दूध ल्याई हौं यशोदा मैया ॥ कनक कटोरा भरि लीजे यह पय पीजे अति सुखदेय कन्हैया आछें मैं औटयौ सुनि नीके मिश्री अरु मिठैया ॥ रुचि कर अंचवत क्यौन कन्हैया ॥ बहुत यतन करि कें राख्यो व्रजराज लडैंते तुम कारण बल भैया ॥ फूंकि फूंक जननी पय प्यावति सुखपावति आनँद उर न समैया ॥ सूरदास प्रभु पय पीवत बलराम स्याम दोउ जननी लेत बलैया

बिहागरा

कमलनयन हरि करौ बियारी ॥ लुचई लपसी सद्य जलेबी सोई जेंबहु जोई लगे पियारी ॥ घेवर मालपुवा मोतीलाडू सुघर संजूरी सरस संवारी ॥ दूधबरा उत्तम दधिवरी गोल मसूरी की रुचि न्यारी ॥ आछो दूध औटि धौरी को लै आई रोहिणि महतारी ॥ सूरदास बलराम

स्याम दोउ जेंवहु जननि जाय बलिहारी

केदारा

बल मोहन दोउ अति अलसाने ॥ कछु २ खाइ दूध लै अ
उं मुख जैंभात जननी जियजाने ॥ उठहु लाल कहि मुख
परवरायौ तुम कों लै पौढाऊं ॥ तुम सोवहु मैं तुम्हैं सुवाऊं
कछु मधुरे सुर गाऊं ॥ तुरत जाय पौढे दोउ भैया सोवत आ
ई निन्द ॥ सूरदास यशुमति सुख पावति पौढ़े बाल गो
विन्द

सुहौ बिलाबल

भोर भयौ मेरे लाडिले कुंवर कन्हाई ॥ सखा द्वार ठड़े स
बै खेलै यदुराई ॥ मोकों मुख दिखराइये त्रयताप नशा
वहु ॥ तुम मुख चंद्र चकोर नयन मधु पान करावहु ॥ त
बहरि मुखपट दूरि किये भक्तन सुखकारी ॥ हंसत उठे
प्रभु सेज ते सूर जाय बलिहारी

भैरव

जागिये व्रजराज कुंवर कंवल कोश फूले ॥ कुमुद वृंद
सकुचित भये भृंग लता भूले ॥ तमचर खग चोर सुनहु

बोलत बनराई ॥ रांभति गो क्षीर दैन बछरा हित धाई ॥
विधु मलीन रबि प्रकाश गावति ब्रजनारी ॥ सूरस्याम प्रा
त उठे अम्बुज कर धारी ॥

कमलनयन हरि करौ कलेवा ॥ मांखन रोटी मधु ज-
म्योंदधि भांति २ की मेवा ॥ खारिक दाख चिरौंजी किस
मिस उज्ज्वल गिरी बदाम ॥ सफरी सेव छुहार सिंगारे
जे खरबूजा नाम ॥ अरु मेवा बहु भांति २ के षटरस के मि
ष्टान ॥ सूरदास प्रभु करत कलेवा रीझै स्याम सुजान ॥

रामकली

आज मैं गाय चरावन जैहों ॥ वृंदाबन के भांति २ फल अ
पने कर मैं खैहों ॥ ऐसी बात कहो जिन बारे देखहु अपनी
भांति ॥ तनक २ पग चलिहो कैसे आवत ह्वै है राति ॥ प्रात
मैं जात गैया लै चारन घर आवत हो सांझ ॥ तुमरो कमल
बदन मुरझैहै घूमत घामत सांझ ॥ तेरी सोंह मोहि घाम न
लागत भूख कछू नहिं नेक ॥ सूरदास प्रभु कह्यो न मानत
राखत अपनी टेक

चले सब गाय चरावन ग्वाल ॥ हेडी टेर सुनत लरिकन

की दौरिगये गोपाल ॥ फिरि इतउत यशमति जो देखै दृष्टि नपरे कन्हाई ॥ जान्यौ जात ग्वाल संग दौरेउ टेरति यशमति धाई ॥ जात चल्यौ गैयन के पाछें बलदाऊ कहि टेरत ॥ पाछें आवति जननी फिरि२ इतकों हेरत बलदेख्यौ मोहन कों आवत सखा किये सब ठाडे ॥ पहुंची जाय यशोदा रिससों दोऊ भुज पकरे गाढे ॥ हलधर कहेउ जान दै मो संग आवहिं आजु सवारे ॥ सूरदास बल सों कहै यशमति देखे रैहो प्यारे ॥

बिलाबल

खेलन कान्ह चले ग्वालन संग ॥ यशमति यहै कहत घर आई देखो हरि कीन्हे जैसे रंग ॥ देखहु जाय आज बनकौ सुख कहा परो सिधरे उहै ॥ प्रातहि सों लागयो जोही ढंग अपनी टेक परे उहै ॥ माखन रोटी अरु शीतल जल यशमति दियौ पठाय ॥ सूरनंद हंसि कहंत महरि सों आवत कान्ह चराय

कान्हरा

वृंदाबन देखत नंदनंदन आतहि परमसुख पायौ ॥

जहंतहं गाय चरत ग्वालन संग डोलत आपुन धायौ॥ व
लदाऊ मोको जिन छांडहु संग तुमारे आयो हो॥ कैसेहु
आजु यशोदा छांड्यौ काल्हि न आवन पायें हों॥ सोवत
मोकों टेरि लेहुगे बाबा नंद दुहाई॥ सूरस्याम बिनती क
रै बल सों सखन समेत सुनाई

रागगौरी

आजु हरि धेनु चराये आवत मोरमुकट बनमाल विराज
त पीतांबर फहरावत॥ जेहि जेहि भांति ग्वाल सब बोलत
सुनि श्रवणहिं मन राखत॥ आपुन टेर लेत नान्हे सुर हर
षत मुख पुनि भाखत॥ देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु दे
खत ब्रजलोग॥ सूरस्याम गायन संग आये मैया लीन्हें

राग

यशुमति दौरि लिये हरि कनियां॥ आजु गयो मेरो गाय
चरावन हों बलि जाउं मिछनियां॥ मो कारण कछु आन्यं
नाहीं बन फल तोरि कन्हैया॥ तुमहिं मिले में अति सुख पा
यो मेरे कुंवर कन्हैया॥ कछुक खाहु जो भावै मोहन दीध
माखन अरु रोटी॥ सूरदास प्रभु युग २ जीवहु हरि हलधर

की जोटी

माखन रोटी लेहु कान्ह चोर ॥ ताती २ रुचि उपजावै त्रिभुव न के उजियारे ॥ और लेहु पकवान मिठाई मेवा बहु बिधि सारे ॥ औटयौ दूध सद्य दधि घृत मधु रुचिसों खाहु मेरे प्यारे तब हरि उठिके करी बियारी भक्तन प्राण पियारे ॥ सूरस्याम भोजन करिके शुचि जल सों बदन पखारे

कान्हरा

पौढे स्याम जननि गुण गावत ॥ आजु गये मेरे गाय चरावन काहे २ मन हुलसावत ॥ कौन पुण्य तप ते मैं पायो ऐसो सुंदर बाल ॥ हरषि २ के देत सखिन को सूर सुमन की माल

इति

अथ माखनचोरलीला

प्रारम्भ

रागगौरी

मैयारी मोहि माखन भावै ॥ जो मेवा पकवान कहति तू मोहि नहीं रुचि आवै ॥ व्रजयुवती यक पाछें ठाड़ी सुनत स्याम की बात ॥ मन २ कहति कबहुं अपने घर देखों माखन

खात॥ बैठें जाय मथनियां के ढिंग में तब रहीं छिपानी॥सू
रदासप्रभु अंतरयामी ग्वालि मनहिं की जानी
गये स्याम तेहि ग्वालिनि के घर॥ देख्यौ जाय द्वार नहिं को
ऊ इतउत चितै चले तब भीतर॥ हरि आवत गोपी जब जा-
न्यों आपुनि रही छिपाय॥ सूने मदन मथनियां के ढिंग बै
ठि गये अरगाय॥ माखन भरी कमोरी देखत लैलै लागे खा
न॥ चितै रहे मणि खम्भ छांह तन तासों करें सयान॥ प्रथ-
म आजु में चोरी आयौ भलौ बन्यां है संग॥ आपु खात प्रति
बिंब खवावत गिरत कहत का रंग॥ जो चाहौ सब देहुं क
मोरी अति मीठे कत डारत॥ तुमहिं देखि में अति सुख पा
यौ तुम जिय कहा बिचारत॥ सुनि२ बात स्याम के मुखकी
उमंगि हंसी सुकमारी॥ सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मु-
ख तब भजि चले मुरारी॥

फूली फिरीत ग्वालि मन में री॥ पूछति सखी परस्पर बा
तें पायो परेउ कछुक कहं लैरी॥ पुलकित रोम २ गद २ मु
ख बाणी कहत न आवै॥ ऐसो कहा आहि सो सखि री ओ
कों क्यों न सुनावै॥ तनु न्यारी जो एक हमारो हम तुम एके

रूप ॥ सूरदास कहें ग्वालिनि सखि सों दरव्यौ रूप अनूप

राग गूजरी

आजु सखी मणि खम्भ निकट हरि जहं गोरस की गोरी निज प्रतिबिंब सिखवत ज्यों शिशु प्रगट करै जिन चोरी अरध बिभाग आजु ते हम तुम भली बनी है जोरी ॥ माखन खाहु कहत डारत हो छांडि देहु मति भोरी ॥ भाग न ले हु सबै चाहत हौ इहू बात है थोरी ॥ मीठे परम अधिक रुचि लागे देहों काढि कमोरी ॥ प्रेम उमगि धीरज न रहेउ तब प्रगट हंसी मुख मोरी ॥ सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंज किशोरी

बिलावल

प्रथम करी हरि माखन चोरी ॥ ग्वालिनि मन इच्छा पूरण करि आपु भजे हरि ब्रज की खोरी ॥ मन २ यहै बिचार करत प्रभु ब्रज घर २ सब गांउ ॥ गोकुल जन्म लियौ सुख कारण सब के माखन खाउ ॥ बालरूप यशमति मोहि जानें गोपिन मिल सुख भोग ॥ सूरदास प्रभु कहत प्रेम सों यह मेरे ब्रजलोग

रामकली

करत हरि ग्वालन संग बिचार ॥ चोरि माखन खाहु सब मिलि करो बाल बिहार ॥ यह सुनत सब सखा हरषे भली कही कन्हाय ॥ हंसि परस्पर देत तारी सौहं करि नंदराय ॥ कहां तुम यह बुद्धि पाई स्याम चतुर सुजान ॥ सूरप्रभु मिलि ग्वालबालक करत हैं अनुमान ॥

बिलावल

सखा सहित गये माखन चोरी ॥ देख्यो स्याम गवाछ पंथ ह्वै गोपी एक मथति दधि भोरी ॥ हेरि मथानी धरी मांट ते माखन ह्यो उतरात ॥ आपुन गयी कमोरी मांगन हरि पाई ह्यां घात ॥ बैठे सखन सहित घर सूने माखन दधि सब खाये छूंछी छांडि मटुकिया दधि की हंसि सब बाहर आये ॥ आय गई कर लिये कमोरी घर ते निकसे ग्वाल ॥ माखन कर मुख दधि लपटानों देखि रही नंदलाल ॥ कहं आये ब्रज बालक लै संग माखन मुख लपटानों ॥ देखे खेलत ते उठि भाजे सखा यही घर आय छिपानों ॥ भुज गहि लियो कान्ह एक बालक निकरे ब्रज की खोरि ॥ सूरदास ठगि रही

ग्वालिनी मन हरिलियौ अजोरि

चक्रत भई ग्वालिनि तनु हेरेउ ॥ माखन छांडि गयी मथि वैसेहि तब ते कियौ अवरेउ ॥ देखै जाय मटुकिया रीती मैं राख्यौ कहुं हेरि ॥ चक्रत भई ग्वालिन मन अपने ढूंढत घर फिरि फेरि ॥ देखत पुनि२ घर के बासन मन हरिलियौ गुपाल ॥ सूरदास सगरी मिलि ग्वालिनि जान्यों हरि कौ ख्याल ॥८

ब्रज घर२ प्रगटी यह बात ॥ दधि माखन चोरी करि लै हरि ग्वाल सखा संग खात ॥ ब्रजबनिता यह सुनि मन हरषित सदन हमारे आवै ॥ माखन खात अचानक पाये भुज भरि उरहिं छिपावै ॥ मनही मन अभिलाष करत सब हृदय करत यह ध्यान ॥ सूरदास प्रभु कों घर ते लै दैहों माखन खान

इति श्रीमाखनचोरलीला समाप्तम्

अथ धेनुचावन लीला प्रारम्भ

राग सारंग

मैया अपनी सब गाय चरैहों ॥ प्रात होत बल के संग जैहों तेरे कहे न रहैं हों ॥ ग्वालबाल गैयन के भीतर नेकहु डर नहिं लागत ॥ आजु न सोऊं नंद दुहाई रैनि रहोंगा जागत और ग्वाल सब गाय चरैहैं मैं घर बैठे रैहों ॥ सूरस्याम अब सोय रहौ तुम प्रात जान मैं दैहों

राग केदारा

बहुत दुख हरि सोय गयोरी ॥ सांझहि तें लाग्यो यहि बातहिं क्रम २ करि मन बोध लयोरी ॥ एक दिवस गयो गाय चरावन ग्वालन संग सवारे ॥ अबतौ सोय रह्यो कहि के यह प्रातहि काहु बिचारे ॥ यहतौ सब बलराम हिं लागे संग लै गये लिवाई ॥ सूरनंद यह कहत महरिसों आवन दे फिर धाई ॥

रागललित

जागिये गोपाललाल आनंद निधि नंदबालयशम

ति कहे बार२ भोर भयो प्यारे ॥ नयन कमल से बिशाल प्रीति बालिका मराल ॥ बदन चंद मदन उपर कोटि वार डारे ॥ उगत अरुण बिगत सर्वरीश शंक किरणहीन दीन भाहीन छीन द्युत सम्हूह तारे ॥ मनहुं ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भव बिलास आस त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ॥ बोलत खग मुखर निकर मधुकर ह्वैवे प्रतीत सुनहुं प्राणजीवन धन मेरे तुम वारे ॥ मनों बेद बंद मुनि सुतवृंद मागधगण बिरद बदत जै जै जै जैत फेंट वारे ॥ बिकसित कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गूंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे ॥ मनों बिराग पाय सकल शोक कूप गृह बिहाय प्रेममत्त फिरत भृत्त गुनत गुण तिहारे ॥ सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल बिपुल दुख कदम्ब टारे ॥ त्यागे भ्रम कंद द्वंद निरखि के मुखारबिंद सूरदास अति अनन्द मेटे मद भारे ॥

बिलाबल

करहु कलेऊ कान्हर प्यारे ॥ माखन रोटी दयौ हाथपै

बलि २ जाउं हो स्वाहु ललारे ॥ टेरत ग्वाल द्वारहैं गड़े आये तब के होत सवारे ॥ खेलौं जाय ब्रजहिं के भीतर दूरि कहूं जिन जैयौ वारे ॥ टेरि उठे बलराम श्याम कों आवहु जाय धेनु बन चारे ॥ सूरस्याम करजोरि मात सों गाय चरावन कहत इहारे

सारंग

मैयारी मोहि दाऊ टेरत ॥ मोकों बनफल तोरि देतहैं आ पुन गैयन घेरत ॥ और ग्वालसंग कबहु न जैहों वे सबमो हि खिजावत ॥ मैं अपने दाऊ संग जैहों बन देखत सु- खपावत ॥ आगें दै पुनि ल्यावत घर कों तू मोहि जान न देत ॥ सूरस्याम कह यशुमति मैया हाहा करि २ केत

सारंग

बोलि लियो बलिरामहिं यशुमति ॥ आबहु लाल सुने हु हरि के गुण काल्हिहि ते लंगराइ करत अति ॥ श्याम हिं जान देहि मेरे संग तू काहे मन डर पावत ॥ मैं अपने ढग ते नहिं टारत जिय प्रतीति नहिं आवत ॥ हंसी महरि बल की बातें सुनि बलिहारी या मुख की ॥ जाहु लि

वाय सूर के प्रभु कों कहत बीर के रुख की ॥
अति आनंद भयो हरि धाये ॥ टेरत ग्वालबाल सब आव
हु मैया मोहि पठाये ॥ उतते सखा हंसत सब आवत चल
हु कान्ह बन देखहु ॥ बनमाला तुम कों पहिरावें धातु
चित्र तनु रेखहु ॥ गाय लईं संग हरि घरन ते महरि गो-
पके बालक ॥ सूरस्याम चले गाय चरावन कंस उरहि
जे शालक

चले बन धेनु चरावन कान्ह ॥ गोप बालक कछु स-
याने नंद के सुत नान्ह ॥ हरष सों यशुमति पठायो स्या
म मनहिं अनंद ॥ चले बल के साथ मोहन संग बाल
क वृंद ॥ सखा हरि कों यह सिखावत छांडि कहुं जिन
जाहु ॥ सघन वृंदाबन अगम अति जाहु कहूं भुलाहु
नैकहु जिन संग छांडो बनहिं बहुत डरात ॥ सूर के प्रभु
हंसत मन में सुनतही यह बात ॥

राग धनाश्री

हेरी देत चले बन बालक ॥ आनंद सहित जात हरि खे
लत संग चले पशु पालक ॥ कोउ गावत कोउ बेण

बजावत कोऊ नाचत कोऊ धावत ॥ कलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उरलावत ॥ भली करी तुम मोकों ल्याये मैया हरषि पठाये ॥ गोधन वृंद लिये व्रज बालक यमुना तट पहुंचाये ॥ चरति धेनु अपने संग अतिही सघन बनचारी ॥ सूरसंग मिलि गाय चरावत यशमति कौ सुत वारी

इति श्रीगौचारन लीला

समाप्तम्

अथ द्रौपदी लीला

प्रारम्भ

दोहा

श्रीगणपति महाराज कों बंदन करूं मनाय ॥
श्रीद्रोपति लीला कथूं चरणन ध्यान लगाय
पुजवो आस मो दीन की जो मन कियो विचार
भूलचूक असरन की लीजो आप संभार

राजाबचन

कालिंगडा

राजा कहि ममराय अनुज सों ॥ टेक ॥ सुनों बात तुम मे-
री भ्राता काज करौ इक मन सों ॥ पांचों पांडवा बसत राज
में लावो बोलि सदन सों ॥ दिनप्रति रहत कलेश हमारौ
मेरी फरकैं बांह बदन सों ॥ राजन के संग खेलिये चोपड़
कहिये भीम नकुल सों ॥ सूरदास अब बिलंब न कीजे क
हुं में बचन लगन सों

दोहा

करनी जो करतार की कहि न सकै कबि कोय
घटबढ होय न बावरे बिधिना लिखा सो होय

राजाबचन

दोहा

एक दिना बिन महल में मोय बुलायो तात
हंसे देखि मुख मोरि कर कहत परस्पर बात

लावनी

मैं कहूं बचन समझाय दुसासन सुनिलै मेरे भाई ॥ अरे ए
क दिना इन बोलि महल में मेरी हंसी कराई ॥ टेक ॥ ता
दिन ते परचंड अगिनि भई मो पै क्रूरे न बुझाई ॥ तो मम

को बलवान सदन सों लावै पांचों भाई ॥ निशि बासर न हिं चैन बैन गयौ हिरदे मांहिं समाई ॥ भूलें ना गुण अरे दु सासन स्वास रहे घटमाहीं ॥ तुम मेरी ओर निहारो हरिली जे सोच हमारो ॥ गवन जावो भवन बचन सब कहियो अ धिक बनाई ॥ १ ॥ थोरी कही बहुत कर जानों चित आप ने धरिलीजे ॥ डूब्यौ थाह अथाह समुद्र में पकरि बांह मेरी लीजे ॥ कीजे गमन भवन पांडव के चित चिंता नहिं की जे ॥ ये कहियो बचन बनाई ॥ है खेल रच्यौ मेरे भाई ॥ तुम कीने याद राजमंदिर में सुनिलेउ पांडव भाई ॥ २ ॥ एक सोच है मोहि दुसासन वो कौन गर्व में छाये ॥ धोखों दे बुलवाय महल में हंसि २ के बतराये ॥ हंसी द्रोपदी संग मोरि मुख नैनन सैन चलाये ॥ पांच पती इकली जो पत्नी लाज न मन में लाये ॥ वे मन शंका नहिं माने ॥ वे मोहि क छू नहिं जाने ॥ सोलह योजन छत्र बिराजे देवउ करत ब डाई ॥ ३ ॥ जो रैय्यत है बसी राज में तो दिन काटे भाई ॥ जो सन्मुख बतराय आज मेंदउंगो दंड अंघाई ॥ देखूं उन को जोर कौन के बल ते करी हंसाई ॥ तू कहियो यह सम

गाय दुसासन चौपड आज बिछाई॥ तुम खेलन काज बुलाये॥ तुम भूपति के मन भाये॥ तुम करो गमन जाओ भमन आज यह ज्ञान भक्ति समझाई

दुस्सासन बचन

दोहा

कहा सोच तुम कूं भयो हे राजन महाराज
पांडव रैय्यत जन्म के तुम राजन के सिरताज

सभाजी बचन

दोहा

राजा के सुनि के बचन चले दुसासन दौर
कहे बचन सब गर्व के गडे उनकी पौर

दुस्सासन बचन

दादरा

मानिलेउ बचन हमारो रे पांडव॥ राज सभा में याद किये हो चलिये बेगि सिधारो रे पांडव॥ सुनों दुसासन बात हमारी कहा है काम हमारो॥ चौपड खेलन याद किये हो यह है काम तिहारो रे पांडव॥ क्यों बिरथा तुम रारि बढ़ावो

जाओ भवन पधारौ ॥ सूरदास कछु दोष नहीं है रिपु जो बचन उचारौ ॥ रे पांडव

भीमसेनबचन

दोहा

हे भाई तुम क्यों डरे राजा के सुनि बैन ॥
बिलंब न कीजे बाबरे आये दुसासन लैन

समाजीबचन

दोहा

चले जात है बाट में देखि छके सब रूप
चारि भ्रात जो संग लै चले युधिष्ठिर भूप

दोहा

ऊपर ते मन शुद्ध करि भीतर कपट की खान
हंसि २ पूछत कुशलता भूपति चतुर सुजान

राजाबचन

दोहा

दुर्योधन राजा कहै सुनों युधिष्ठिर बात
यह मन मेरे लालसा चौपड खेलें साथ

युधिष्ठिरबचन

दोहा

राजनपति महाराजहो कहो न ऐसी आप
हम कहा जानें सार यह चौपड़ खेलन दा-
व
जो राजा तुमनें कही सोई बचन परमान ॥
नीति धर्म सों खेलिये करो कृष्ण को ध्यान

दुर्योधनबचन

दादरा

सुनि लेउ बचन हमारोजी पांडव ॥ टेक ॥ जो कहुं हारि जा
उगे चौपड़ दउँगो देश निकारोजी पांडव ॥ कैसे हारि जाउं
गो तुम संग मेरो राज सहारो ॥ या बिधि मोय बचन देउ तु
म तब होय मोय पतियारो ॥ हार मानि कहुं होहुगे रूठे
युद्ध होयगो भारो ॥ सूरदास प्रभु लै त्री बाचा चौपड़ खे
ल सम्हारो ॥

युधिष्ठिरबचन

दोहा

नायं करन दउं अन्नजल नायं नींद कौ काम
तीन बचन अब दीजिये आप बचन परमान

दुर्योधनबचन

दोहा

तथास्तु कहते भये भूपति चतुर सुजान
भली कही तुम आप मुख दृपा धर्म बलवान

सभाजीबचन

दोहा

बैठी सभा सुहावनी चौपड लयी मंगाय
पांचोंभ्रात बैठिकर कृष्ण ध्यान उरलाय

वार्ता

तब अर्जुन भीम नकुल सहदेव और युधिष्ठिर पांचों भाई दुर्योधन सों समझाय कें कहन लगे ॥

कालिंगडा

खेलो कर्म धर्म से दोउ ॥ अर्जुन भीम कहें सुन राजा बादि बोलो ना कोउ ॥ दुर्योधन तुम बड़े खिलारी तुम सर कौ ना कोउ ॥ ये बोली मति हम कों मारो बादि बोलत तुम दो

ऊ ॥ सूरदास मन बिलग न कीजे कृष्ण करै सो होऊ ॥

भीमबचन

दोहा

भीमसुभ्मि पर बैठिके कहत बचन परबीन
फांसे लीये सगुन के पइले परे जो तीन

सकुनिबचन

दोहा

धर्ममणी अब लीजिये अब की बार जो आप
फांसे डारो प्रेम सों दूरि करौ संताप

युधिष्ठिरबचन

दोहा

कहत युधीष्ठिर बचन यह सुनों सकुनि अरु राउ
ये पो बारह लीजिये परो हमारो दाउ ॥ ७

सकुनिबचन

दोहा

तीनबार फांसे लिये सकुनि आप परबीन
गर्ब भयो डारन लग्यो परे जो काने तीन

समाजीबचन

दोहा

लखि नसके कोउ वहां भीम कही मुसकाय
फांस मूधे पडत हैं देय मही उचकाय ॥

दोहा

बहुत बार ऐसें भई मैं कहां करूं बखान
अंत समय हारे शकुनि जीते धर्म सुनान

राजाबचन

रागविहंस

बात सुनों राव मेरी ॥ टेक ॥ तृषाने तो मोह सतायौ बहु तभई अब देरी ॥ पी जल फेरि खेलिये चौपड़ यह बिनती सुन मेरी ॥ धर्मरूप प्रगटे तुम जग में दीजे भीम अहेरी ॥

युधिष्ठिरबचन

दोहा

सुनि राजा के बचन युधिष्ठिर कहन लगे इक बात
यह नहिं बात बनेगी राजा खेलो हमारे सात

दोहा

तुमनें बचन हमारो लीनों हम नें तुम कूं दीनों
कै हम हारें कै तुम हारो तब होवै जल पीनों

दुर्योधनबचन

दोहा

ऐसी बात कहो ना मुख सों तुम हो धर्म अवतार
पीमन दीजे जल तुम हम कूं पाछें खेलें सार

युधिष्ठिरबचन

दोहा

सुनि राजा के बचन युधिष्ठिर मन कों उपज्यो
ज्ञान॥ हम तो राज नीति कों जानें करन देउ जल
पान

राजाबचन

दोहा

फेरि कही समझाय युधिष्ठिर बचन मान लियो मैंनें
हम तुम दोउ चौपड़ खेलें भीम जाय जल लैनें

दोहा

पाय आज्ञा भीम चले तब मन सोच बिचार
जो दुर्योधन बाजी जीते हम कूं देस निकारे

सभाजी बचन

दोहा

खेलत सकुनि संग पांडव मनई मन मुसिकाय
अब मो संग जीतें नहीं पांडव लाख परो चाहे दाव

दुर्योधन बचन

दोहा

पांडव अव तुम हारे बाजी हम तुमसों अब जीते
सूरदास अब देश हमारो आज भये मन चीते

दादरा

दुसासन सुनि लेउ बात हमारी ॥ टेक ॥ एक दिना इन मो य बुलायो अपने महल अटारी ॥ मोय देखि इन कीनी हांसी और द्रोपदी नारी ॥ द्रुपद सुता कूं पकरि लै आवो लेबो लाज उतारी ॥ पाय आज्ञा चले दुसासन सूर सदा बलिहारी

द्रोपदीवचन

लावनी

दीनदयाल दमोदर माधव मेरी टेर सुनों प्यारे ॥ मैं बहुत दुखारी दुष्ट नें लाज लई मेरी प्यारे ॥ टेक ॥ तुम करता जग पालक हर्त्ता तुम हो सब के हितकारी ॥ मैं करूं बीनती लाज अब मेरी राखौ गिरधारी ॥ राम २ प्रह्लाद पुकारे खबर लई तुम पल माहीं ॥ और सुनोंजी आप गजराज छुड़ाये पल माहीं ॥ मो समान नहिं और दुखारी रटूं नाम तेरो गिरधारी ॥ व० १ ॥

मातपिता की बंद छुडाई कंस दुष्ट को नास करो ॥ बिप्र सुदामा दीन दुखी ते न्रप करो ॥ भीलनी के बेर सुदामा के तंदुल साग बिदुर घर तुम पायो ॥ हरी रुक्मिणी दुष्ट शिशुपाल जोरि दल कूं लायो ॥ कोपा कियो ब्रज ऊपर इंद्र हारमान आपही हारो ॥ मैं बहुत० ॥

बाली अरु सुग्रीव बसत ऋषि पर्वत ऊपर तुम पाये ॥ दास बिभीषण बिभीषण लंका राज सई पाये ॥ जीव जंतु जल थल के जीते अजामेल सो को पापी ॥ राक नाम लीये ते दे
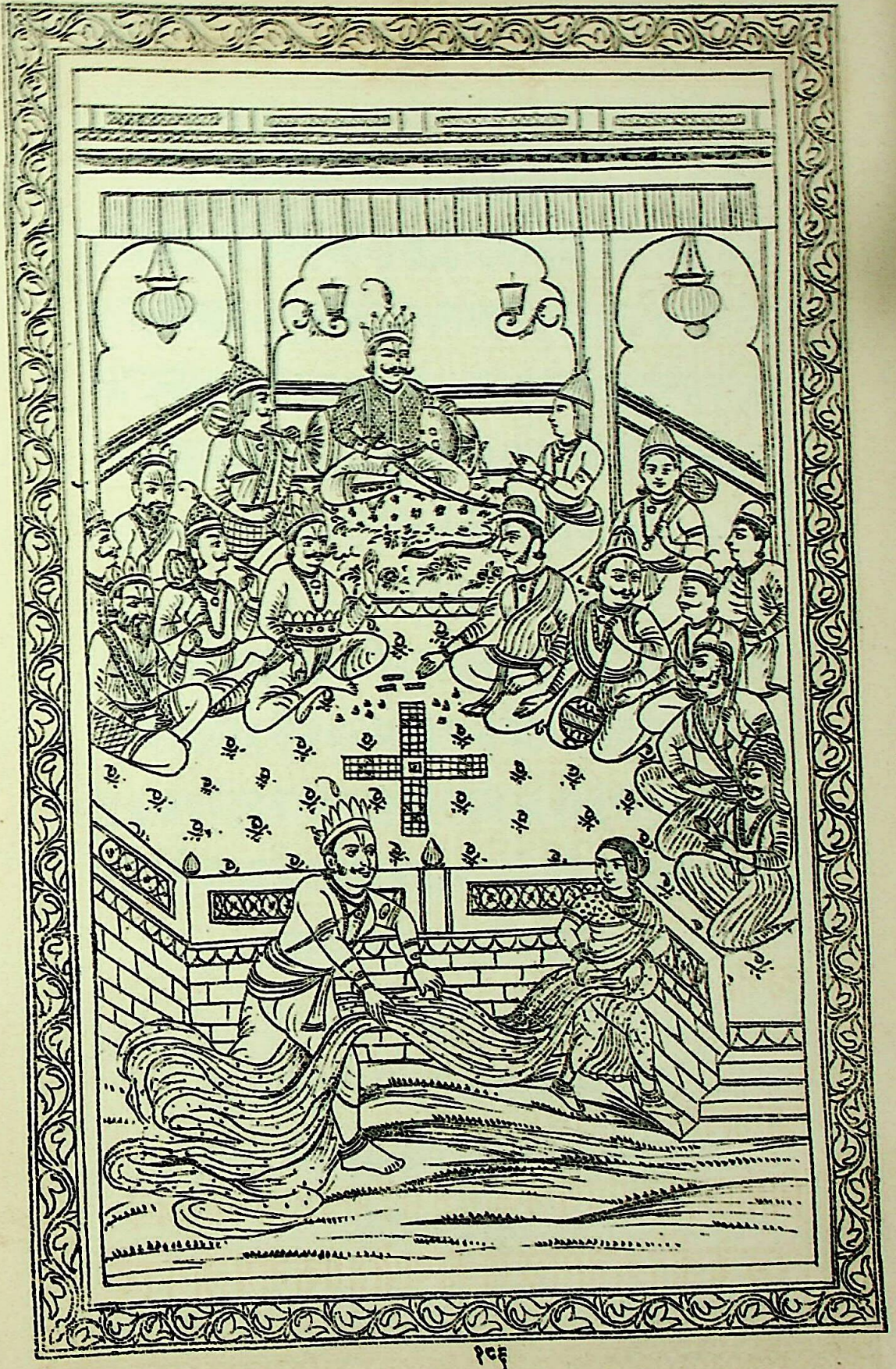
रव सब वेद पुराणन में साखी॥ वेदउ गावें नारद ध्यावें शेष
रटत निशिदिन प्यारे॥ बहुत०
जो शरणागत तुमरी आयो ताहि दियो बैकुंठजो धाम॥ ग
क वार हमारी टेर सुनें सुंदर घनस्याम॥ मीराबाई और त्रि
लोचन धन्ना के घर सारे सारे काम॥ तिरी अहल्या अहि
ल्या गोतम ऋषि की सुंदर बाम॥ जसुदा के लाल बीर ह
लधर के मेरी टेर सुनों प्यारे॥ अब०

सोरठ

टेर सुनों गिरिधारी हमारी॥ दुष्ट दुसासन चीर खेंच कर लीनी
लाज उतारी॥ मौन गहे पांचो पति बैठे कहा गति होय हमा
री॥ गाय सिंह ने घेरि लई है लीजे खबर हमारी॥ जहां २
भीर परी संतन पै लीनी खवर सवारी॥ सूरदास प्रभु मेरी बा
र अब निठुर भये गिरधारी॥

दोहा

बस मेरो नाहीं चले सिंह गाय लई घेर
सब ई बेर रक्षा करी अब क्यों करते देर

श्रीकृष्णबचन

दोहा

जो भक्ती मेरी करै सब कारज सरजायं
शरणगहे की लाज मोहि तू न कल्प
मन माहिं

नारदबचन

सोरठ

सुनि लेउ अरज मुरारी मुनी की ॥ टेक ॥ आजगयो हस्तिना
पुर देखनद्रोपदसुता दुखभारी ॥ मुनी की० ॥ पांचों पांडव
बोलि मंगाये और द्रोपदी नारी ॥ मुनी की० ॥ दुष्ट दुसास
न चीर खैंचकर लीनी लाज उतारी ॥ मुनी की० ॥ त्राहि२
कर बहुत पुकारै रटै नाम तेरो गिरधारी ॥ मुनी की० ॥ कृ
पासिंधु तुमको सबजानत सूरसरन बलिहारी ॥ मु० ॥

श्रीकृष्णबचन

सोरठ

मुनी सबजानत हूं घट माहीं ॥ टेक ॥ चारों वेद पुराण अग
रह मोसों छानी नाहीं ॥ देख बिचार आप हिरदे में व्याप
रह्यो घटमाहीं ॥ जोजन मेरो नाम लेत हैं बिन को दास स-

दाई ॥ जो भक्तन कूं देत कष्ट में तिन को हों दुखदाई ॥
सूर सोच मन में ना मानों दऊं मे चीर बढ़ाई ॥

समाजी बचन

दोहा

दुर्योधन की पौर पै आये कृष्ण मुरार ॥
है न उचित भूपति तुम्हें यह पतिव्रता नार

दुर्योधन बचन

दोहा

तुम सुख शोभा ना लगे सुनिये कृष्ण मुरार
पांच पती इक पतिव्रता यह जीवत धरकार

कृष्ण बचन

दादरा

मानि बचन मेरो लीजे भूप अब ॥ तुम तो राजनीति सब जानत कष्ट न अबला दीजै ॥ पांच गांव देवो पांडव कूं और राज सब कीजे ॥ सूरदास यह राजनीति में त्रियात्रास नहिं दीजै

दुर्योधन बचन

दोहा

पंडव बसें न देश मम कहिदीजे महाराज
बहुत करूं वेरान मैं सुनों गरीबन बाज॥

कृष्णबचन

दोहा

गये पांडव निकट प्रभु कही बात समझाय
कौन कारन धर्मसुत यहां फंसे तुम आय॥

दादरा

तजिदेउ यहां कौ रहनों युधिष्ठिर॥ टेक॥ जाके राज रहत जो रैय्यत भली बुरी सब सहनों॥ पांच गांव लेवौ पांडव तुम मान हमारो कहनों॥ सूरदास हस्तिनापुर को तजि मन मानें तहां रहनों॥

दोहा

सुनें हमारी बात अब भूपति चतुर सुजान
हस्तिनापुर रहनों नहीं कहनों मेरो मान॥

स्तुतिद्रोपदी

छन्द

धन२ मुकंद माधव दरस दीनो आयके॥ मैं गाय घेरी सिंह नें प्रभु लीनी आय छुडाय के॥ वेद गामें शेष धामें जपत नारद हरहरी॥ जल मांहिं ते गज राखि लीयौ जो दया मोपर करी॥ तारौ अजामेल जगत पापी अंत सुत के नाम ते॥ तारौ सुदामा जन्म दुखिया तंदुल खाये भाव ते॥ तारौ त्रिलोचन टहल कीनो धन्ना की धेन चराइयां॥ तारौ जो सदना भक्त पापी कहां तक करूं बडाइयां॥

कृष्ण बचन

दोहा

बारबार तुम सों कह्यो यही बचन है सार
या नगरी रहनों नहीं राजा करत बिगार

दोहा

यह लीला अति प्रेम की पढ़ै सुनें चित लाय
निश्चय करिके जानिये भव सागर तरि जाय

इति श्रीद्रोपदी लीला

समाप्तम्

अथ होरीलीला

लिख्यते

होरी काफी

खेलें हरि से होरी नवल वृषभान किशोरी ॥ सज२ साज म
साज सकल मिलि सखिन सिंगार रचौरी ॥ मृग नयनी को
मल मृदु बयनी चित चैनी अति भोरी ॥ उमरि जिनकी है
थोरी ॥ भरि२ नीर तीर यमुना के रंग सुरंग बनोंरी ॥ बजत
मृदंग उपंग संग ढफ जल तरंग घन घोरी ॥ शब्द मुरली
नें कोरी ॥ खे० ॥ इत में स्याम सखा सुंदर तन उत स्याम
सब गोरी ॥ रतन जटित कंचन पिचकारी भरि२ रंग बरसो
री ॥ अंग इत उत सबौरी ॥ खे० ॥ चतुर सखी धूमरि धमा-
रि में धाय धसी हरि ओरी ॥ रूपटि लपटि रूपटत कुंजन में
मोहन कर पकरौरी ॥ उग लाईं बरजोरी ॥ खे० ॥ चुपरि२
चोवा चंदन तन मेलि२ मुख रोरी ॥ चंचल चपल चलाक
चाउ से लखि मुख चंद चकोरी ॥ गाल गुलाल मलोरी ॥
खे० ॥ मुरली मुकट रूपटि पीतांबर पट नागर नट कोरी ॥
लाय चीर पहराय घांघरी केसर तिलक दियौरी ॥ गुहि

पटियां अंजन दृग दीनों नंदमहरि की छोरी ॥ करै चितवत चितचोरी ॥ खे० ॥ हाथ पकरि लै जाय मायढिंग हंसि२ ब चन कहोरी ॥ लखि सुत बदन महरि मुसकानी कहें गने श कर जोरी ॥ ध्यान हरि चरन धरोरी

होलीदादरा

हम तेरेही रंग रंगानी रे सामलिया ॥ लागी लगन तुमसे न- हीं छूटे मैं तो भई मस्तानी रे समलिया ॥ हम० ॥ जब से फा गमचौ व्रज माहीं तब से भई दिवानी रे समालिया ॥ हम० तुमरे हाथ कनक पिचकारी मैं तो कुमकुमा दई रे संवलि या ॥ हम० ॥ राधा सैन दई सखियनकों हम तुम सरबोर भ ईं रे संवलिया ॥ हम०

होलीकाफी

राधावर खेलत होरी ॥ नंदनंदन व्रजराज सांवरो श्रीवृष भान किशोरी ॥ परमानंद रूप रसभीने अबीर लिये भर झो री ॥ चलो चितवौ किन गोरी ॥ राधा० ॥ कर कंकन कंचन पिचकारी केसर मांट भरोरी ॥ छिरकत रंग हुलसि हियह रषत निरखत हंसि मुख मोरी ॥ करे चितवन चित चोरी ॥

राधा० ॥ भुजभरि अंग सकुच गुरुजन की मिलि फिरि चढ़ें छुटोरी ॥ छूटी लट कुंडल में उरझी बेसरि पीत पिछौरी ॥ चलो सुरझावौ गोरी ॥ राधा० धन २ गोकुल धन वृंदावन जहं यह रहस रचौरी ॥ रसिक शिरोमणि रीझि रंग रसव्रज बैकुंठ करौरी ॥ जोरि तिनका सम तोरी ॥ राधा बर खेल तहोरी ॥ राधा०

होलीकाफी

कैसे जाऊंरी सखी आज पनियां भरन ॥ टेक ॥ मदमातो छैल रोके ठाडो गैल ॥ मुकट की लटक चटक पीरे पट की जाकी माधुरी सूरत मोहे सांमरे बरन ॥ अबीर गुलाल के बादर छाये पिचकारी रंग लागे परन ॥ बाजत ताल मृदंग मधुर धुनि मोय सही न परत सुनि ढफ की धरन ॥ बल बल जात जनार्दन प्रभु की जाके सदांई बसो मेरे हिय में चरन ॥ कैसे

होलीकाफी

रंग में बोरि दई मेरी सारी ॥ बाट घाट मोहि रोकत टोकत नंचत दै दै तारी ॥ डफ ही बजावत होरी गावत केसरि भरि पि-

चकारी ॥ लाल मेरे सन्मुख मारी ॥ सास बुरी घर ननँद हठीली ये सुनि दैंगी गारी ॥ नैक न लाज कान गुरुजन की मानत नाहिं मुरारी ॥ करत बिनती हों हारी ॥ मोरमुकट बनमाल मुरलि के पीतबसन मैं वारी ॥ मुख मुहचंग बाजत आवत छुटी अलकें घुंघरारी ॥ मंद मुसकान पै वारी ॥ है रहे रंग सुरंग फाग में सुंदर स्याम पियारी ॥ अद्भुतरूप जनार्दन प्रभु को निरखत तोर तृण डारी ॥ लागो मति दृष्टि हमारी ॥

होली दादरा ईमन

पिचकारी सूं रंगडारी सारी हमारी स्याम नें ॥ केसरिरंग कनक पिचकारी भरि सन्मुख है मारी स्याम नें ॥ भीजि गई मेरी सुरंग चूनरी अँगिया जरद किनारी ॥ गुरजन लोग चवाव करेंगे सास सुनेंगी देगी गारी ॥ पैंयां परों बलि जाउं जनार्दन तुम जीते हम हारी ॥ स्याम० ॥

होली

आवे गलियन में धूम मचावे खेले मोसों फागरी ॥ ग्वाल बाल सब संग सखा लिये तारी दैदै गावे सुनावे गारी ॥ चोवा चंदन और अरगजा भरि केसरि ढरकावे सीस मों ग

गरी॥लंगर ढीठ लवार जनार्दन सैनन में बतरावै लगावै
लगरी

होली पीलू दीपचंदी

खेलत रघुबर संग भरि होरी संग लिये सिया जनक किशोरी
बनप्रमोद की कुंजगलिन में अबीर उड़ावत भरि२ कोरी॥
औचक आय कुमकुमा मारत डारत रंग कमोरी॥ ससि सों
दोरी॥ पैयां परों बलि जाउं जनार्दन मति तोरी मोतिन लर
मोरी॥खे०॥

होरी

सैयां से मेरो नेह लगोरी॥पिया बिन फाग आग सो लागे जि
यराजात जरोरी॥मदन मरोरि२मरोरै दुख नहिं जात सहोरी
कहत मैं कैसी करोरी॥सैंया०॥काम कमान बान कर लैकें
निसदिन रहत खडोरी॥पिया बिना मोहि कौन बचावें य
ह बलवान बड़ोरी॥जानि अबला मोहि भोरी॥सैयां०॥
आपन जाय संग सखियन के रास करत निस भोरी॥हमकों
लिखत जोग की पतियां ऐसो निठुर भयोरी॥नेह हम सों बि
सरोरी॥पिया०॥पिया अनारी जो घर आवे बिरह बिथा

मिटै मोरी ॥ रंगीलाल अब कबहूं न बिछरों जो कछु होय सो होरी ॥ पियासंग खेलोंगी होरी ॥

होली कालंगड़ा

खेलत श्यामा पिया संग होरी ॥ टेक ॥ राधा के हाथ हेम कौ गड़ुआ तो केसरि रंग भरोरी ॥ ललितासैन दई सखियन कों लै अबिर भरि झोरी ॥ कृष्ण की ओर चलौरी ॥ खे० बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मुरली नें शब्द करोरी ॥ राधा की भीजै सुरंग चुनरिया स्याम की पीत पिछौरी ॥ दई पिचकारिन बोरी ॥ खे० ॥ जाकौ भेद वेद नहिं पावत सारद की मति भोरी ॥ सो ब्रज भीतर धूम करत है ग्वालिनि सों झकझोरी ॥ गाल गु लाल मलोरी ॥ खे० ॥ हिलिमिल फाग परस्पर खेलत आनंद रंग मचोरी ॥ गौरीदीन कहत कर जोर राधा सी है भोरी ॥ स्याम से दोऊ कर जोरी ॥ खेलत स्याम० ॥

होली काफी

होरी खेलत स्याम बिहारी ॥ सखी ॥ टेक ॥ राधे के हाथ हेम कौ गड़ुआ सो केसरि रंग भरि झोरी ॥ ललिता आदि स

खी सब लैकर मोहन पास सिधारी ॥ सखी होरी ॥ उतमें कृ

ष्ण सखा संग लैकर कंचन की पिचकारी ॥ उड़त गुलाल

घटा घन घोरन देखें जह्न सुर नारी ॥ सखी होरी ० ॥ बाजत ता

ल मृदंग मुरलि डफ घुंघुरुन की झुनकारी ॥ आईं सबै मि

लि फाग खेलन कों बोरि दईं रंग सारी ॥ सखी होरी ० ॥ सुंद

र रूप अनूप देखि छबि गोपी भईं मतवारी ॥ स्यामास्याम

सदाशिव नागरि गोरी की ओर निहारी ॥ सखी होरी ० ॥

होली

सांवरे ब्रज होरी मचाई ॥ टेक ॥ एक भुवन से राधिका नि-

कसी दूजे भुवन कन्हाई ॥ दूरि से नैन मिले दोउन के तब

राधा मुसकाई ॥ स्याम नें तुरत बुलाई ॥ सांवरे ० ॥ उड़त गु

लाल लाल भये बादर रहे कुसुम रंग छाई ॥ हिलि मिलि

फाग खेलत संग दोउ शोभा बरनी न जाई ॥ स्याम ऐसी

होरी खिलाई ॥ सांवरे ० ॥ ताही समय ब्रज बनिता मिलि

केरी चोरि ले आई ॥ भरि २ पिचकारिन मारी स्याम कों

जस बूंदरिया झरलाई ॥ सांवरे ० ॥ भोरे भाव कपट नहीं म

न में खेलत हैं सुखदाई ॥ आनंद रंग उडावत सबही शो

भावरनी नजाई ॥ सांवरे० ॥

होली

सांवरे तो से अरज हमारी ॥ टेक ॥ भसमासुर बरदान पाय के मन में कपट बिचारी ॥ भस्मासुर को भस्म कियो तुम पल में आय मुरारी ॥ बिपा शिवजी की टारी ॥ सांवरे० ॥ जनक नंदनी हरि लंकापति मान कियो अति भारी ॥ रावन मारि गरद करि डास्यो सुवरन लंका जारी ॥ भई तिहुं पुर उजियारी ॥ सा० ॥ दुष्ट दुसासन चीर घसीटत कृष्णा बेगि पुकारी ॥ नग्न द्रोपदी काहु न देखी अंबर दियो है बिहारी ॥ दृष्टि करुणा सो निहारी ॥ सां० ॥ केशी मास्यो कंस पछास्यो पटकि पूतना डारी ॥ जन हरिचरन चरन बलिहारी टरिहो बिपति हमारी ॥ पड़ो में शरण तिहारी ॥ सां०

होली

व्रज जिन आजु बसोरी ॥ टेक ॥ ग्वाल सखा सब संग लिये हैं ढूंढत फिरत सब खोरी ॥ जोइ पावत तेहि रंग में बोरत बहियां पकरि रु करोरी ॥ खोलि दृग चितवत ओरी ॥ व्र० घेरि लियो हरि सब सखियन मिलि राधा मलत मुख रोरी

विश्वरूप छबि देखि स्याम की अति आनंद बढ़ोरी ॥ भलो यह खेल मचोरी ॥ द्दृ०

होली धनाश्री

छिरकत रंग गुपाल के अंगन बरसाने की सब मिलि गोरी नव केसरि मुख मलत स्याम के अबीर गुलाल लिये भरि झोरी ॥ कोऊ काजर लै हगन लगावत कोऊ फगुआ मांगत बरजोरी ॥ भये जनार्दन गोपिन के बस केशव बिनती करत दोऊ करजोरी ॥ छि०

राग कान्डी

निठुर मनमोहन कुंजबिहारी ॥ मेरी रंग से भिजोय डारी सारी ॥ केसर रंग कनक पिचकारी भरि मन्मुख है मारी बाटघाट मोहि रोकत टोकत गावत बक २ गारी ॥ जैसे ई सब सखा संग के नांचत दै २ तारी ॥ अंखियन बीच अबीर दियो भरि मुठी गुलाल की डारी ॥ समझि रहों या सों कछु ना कहों मैं लाज की मारी ॥ सास बुरी घर ननंद हटीली गुरुजन को डर भारी ॥ बिनती करों बलि जाउं जनार्दन तुम जीते हम हारी ॥ निठुर०

होलीखम्माच

मोहन मेरे गोहन लागि रह्यौ री ॥ ऐसो ढीठ लंगर रोके ठाड़ो डगर लीनी बैयां पकरि। दियो डारि गुलाल मुख रोरी ॥ मलत बरजोरी ॥ सीस मारी सुरंग बोरि दई नैना नैनां मिलाय बात कही यह अनोखे स्याम छैला देखो सखी या की रीति नई ॥ पनघट पै मचाय दई होरी ॥ ए सीजानि अकेली मोहि घेरि लई ॥ मेरो खोलि घूंघट पिचकारी दई ॥ घर जाऊं जनार्दन ना जान दऊं अब नाहिं सहूं तेरी बहुत सही ॥ मेरी उर मुतियन लर तोरी

तथा

या कान्हा नें मेरी नई चूंनरि रंगडारी ॥ या मोहन नें देखो लाज सरम सब तोरि डारी ॥ मेरी बहियां पकरि गकोरि डारी ॥ घर सास सुनें देगी गारी ॥ ऐसो ढीठ अनोखो खिलार भयो दै पिचकारी दूरि भाजि गयो हंसि चितवन में चित चोरि लियो मेरो बंशी बजाय मन मोहि लियो ॥ भरि मुठी गुलाल की मारी ॥ या सूं कैसी करूं गरी २ दई नहीं माने जनार्दन मेरी कही · घूंघट को पट

खोलि दियौ· मेरी अँखियन बीच अबीर दियौ· यासूं क
रि बिनती हों हारी ॥

होली सोरठ दादरा

होरी खेलि न जानें बिहारी ॥ अबीर गुलाल कुमकुमा के
सरि रंग पिचकारी ॥ गुइयां मनसुख मारी ॥ बहियां पक
रि मेरी कुच गहि लीनी ऐसो ढीठ अनोखो खिलारी ॥ बर
जोरी घूंघर पट झटकत गावत तान बजावत तारी ॥ सम
झि रहों अपने घर भीतर यासूं कहि न सकूं कछु लाज
की मारी ॥ बिनती करूं बलि जाउं जनार्दन तुम जीते ह
म हारी ॥

होरी दोहा

होरी खेलन कों चलीं बरसाने की बाल
कुंजभवन के द्वार पै ठाड़े मदन गुपाल
इतते आईं राधिका उतते नंद किशोर
रंग बरषत दोऊ ओर ते ढफ झांझन घनघोर
बाजत ताल मृदंग ढफ मुरली अरु मुहचंग
नांचत गोपी ग्वाल सब गावत तान तरंग

खेलत स्यामा स्याम तें मन में अधिक उमंग
रह्यौ जनार्दन फाग में दोऊ ओर सों रंग ॥ ४

होली काफी

कैसे जाऊंरी सखी आज पनियां भरन ॥ मदमातौ छैल रो के गैडौ गैल ॥ मुकट की लटक चटक पीरे पट की जाकी माधुरी मूरत सोहे सामरे बरन ॥ अबीर गुलाल के बादर छाये पिचकारिन रंग लागे परन ॥ बाजत ताल मृदंग मधुर धुनि मो पै सहीन परत सुनि ढफ की घरन ॥ बलि २ जात जनार्दन प्रभु की याके सदाई बसो मेरे हिय में चरन

होली सिंदूरा

आज रंग होरी खेलत कुंज बिहारी ॥ संग स्यामा सुकमारी ॥ अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि कर कंचन पिचकारी ॥ इत नंदनंदन चतुर शिरोमणि उत वृषभान दुलारी ॥ नीलांबर पीतांबर छवि पर घन दामिनि दुति वारी ॥ बार बार बलि जात जनार्दन बरषाने की नारी ॥ आज० ॥

तथा

आज होरी खेलत श्री व्रजराज सुघर सों बरषाने की गोरी

इत नंदलाल सखा रंगभीने उत सब नवल किशोरी ॥ अबीर गुलाल के बादर छाये रंग बरषत चहुंओरी ॥ बाजत ताल मृदंग मधुर धुनि डफ झांझन घनघोरी ॥ केसरि कीच कपोल लगावत श्रीवृषभान किशोरी ॥ पकरि गुपाल नचावति ग्वालिन अपनी २ ओरी ॥ कोऊ काजर लैं दृगन लगावति कोऊ मलति मुख रोरी ॥ कोऊ सखी दोउ ताल बजावति कोऊ डारति त्रन तोरी ॥ हाथन महंदी पांव महावर सारी सुरंग रंग बोरी ॥ भामिनि रूप जनार्दन प्रभु कौ निरखि हंसी मुख मोरी ॥

होली कान्हड़ी

कपट कछु या दई मारे के मन में ॥ हंसि बात करत सैनन में ॥ झालौ देत बुलावत हम कों निधिबन सघन कुंजन में ॥ केसरि रंग कनक पिचकारी मारि गयो नैननमें घूंघट खोलि प्रेमरस चाखत गुलाल मलत गालन में लाज सरम याके हिय में न जिय में गारी देत स्रवन में भुजभरि अंग लगाय जनार्दन डारत हाथ कुचन में ॥

होरी भैरवी

रंगभरि मारत पिचकारी ॥ लंगर ढीठ लबार नंदसुत नु यौरी खिलार भयो या ब्रज में बाट चलत रोकत नारी ॥ नेकन कान करत काहू की नांचत दै २ तारी ॥ पैयां परों घर जाउं जनार्दन सास सुनेंगी देगी गारी ॥

होरीजंगला

पियप्यारी दोऊ खेलत होरी ॥ नंद नंदन ब्रजराज सांवरी श्रीवृषभान किशोरी ॥ परमानंद प्रेमरस भीने अबीर लिये भरि झोरी ॥ करत मन में चितचोरी ॥ भुजभरि अंक सकुच तजि गुरुजन बिचरत हैं मिलि जोरी ॥ छुटी अलकें उरफी कुंडल सों बेसरि पीतपिछौरी ॥ चले मुसकावो गोरी ॥ कर कंकन कंचन पिचकारी केसरि भरि लै दौरी ॥ छिरकत फिरत हुलस हिये हर्षत निरखत हंसि मुख मोरी ॥ चलो क्यों हुई हो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि २ श्रीवृंदाबन जहां यह फाग रच्यो री ॥ श्रीरसरंग रीझ रहे ब्रज पर वारों बैकुंठ करोरी ॥ मुक्त काशी जहं थोरी

होलीसारंग

स्यामा स्याम सों होरी खेलत आज नई ॥ नंद नंदन को राधे कीनों माधव आप भई ॥ सखा सखी भये सखी सखा भई यशमति भवन गई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ नांचत थेई २ ॥ गोरे स्याम सांमरी राधे या मूरति बितई ॥ पलट्यौ रूप देखि यशमति की सुधिबुधि बिसरि गई ॥ सूरस्याम कौ बदन बिलोकत ३ घरि गई

कलई

होलीजंगला

या ब्रज में कैसी धूम मचाई ॥ इतते आई कुंवरि राधिका उतते कुंवर कन्हाई ॥ खेलत फाग परस्पर हिलि मिलि ये छबि बरनी न जाई ॥ घर २ बजत बधाई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ मंजीरा सहनाई ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर केसरि कीच मचाई ॥ मनहुं मघवा झर लाई ॥ राधे सैन दई सब सखियन यूथ २ मिलि धाई ॥ पकरोरी पकरो स्याम सुन्दर को यह अब जान न पाई ॥ करो अपने मन भाई ॥ छीनि लई मुख मुरली पीतांबर शिर पर चुनरी उढ़ाई ॥ बेंदी भाल

नयन में काजर नक बेसरि पहराई ॥ मनों नई नारि बनाई ॥ कहांगये तेरे पिता नंदजी कहां यशोमति माई कहां गये तेरे सखा संग के कहां गये बल भाई ॥ तोहि अब लैयं छुडाई ॥ धनि गोकुल धनि २ श्रीवृंदाबन धनि यमुना यदुराई ॥ राधाकृष्ण युगल जोरी पर नंद दास बलि जाई ॥ प्रीति उर रही न समाई

होली मारंग

रसिया कों नारि बनावोरी ॥ कटि लहंगा गल माहिं कंचुकी चुंदरी शीश उढ़ावोरी ॥ गाल गुलाल दृगन में अंजन बेंदी भाल लगावोरी ॥ नारायण तारी बजाय के यशमति निकट नचावोरी

होली जंगला सिंध

स्याम मोसों खेलो न होरी ॥ पा लागों कर जोरी ॥ गैयां चरावन मैं निकसी हों सास ननंद की चोरी ॥ सगरी चुनरिया रंग न भिजावो इतनी बात मानों मोरी ॥ छीनि रूपटि मोरी हाथ से गागरि जोर सों बहियां मरोरी

जिया धड़कत मेरो सांस चढ़त है देह कंपत गोरी २॥ अबीर गुलाल छिपर गयो मुख सों सारी रंग में बोरी॥ सास इजारन गारी देगी बालम जीता न छोरी॥ फाग खेलि कें तेने रे मोहन कहा गति कीनी मोरी॥ सूरदास आनंद भयो उर लाज रही कछु थोरी

होली भूपाली जं०

डगर मोरी छांड़ो स्याम बिंध जावोगे नैनन में॥ भूलि जाउगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैनन में॥ जो तेरे मन होरी खेलन की तो ले चलि कुंजन में॥ चोवा चंदन अतर अरगजा छिरकूंगी फागन में॥ चंद्रसखी भजि बालकृष्ण छबि लागी है तन मन में

होली गज़ल

मची है आज बंसीबट पै होरी॥ खड़ा नट गैल में भर रंग की कमोरी॥ गयी थी में अभी दधि बेचने को॥ रूप पर मोहन मली मुख मेरे रोरी॥ पटकि मटकी झपट अंचल झटक कर ललपट दुखाई चूनरी और चोली॥ अजब नटखट है नंद का। हंस झटक कर॥ लगा बातों में भी नीची बोली॥ यह हाल खेंदी मता उस नंद के को॥ कहा में क्योंजी -

यह क्या है ठगोली ॥ अटकते हो जो हम से मग में ॥ चलो अब माफ कीजे होली होली ॥ नहीं हूं दासी में कुछ कृष्ण तेरी ॥ बस अब हम से न बोलो टेढ़ी बोली

होली

छैल रंग डारि गयो मेरी बीर ॥ भीजि गयो अति अति उस रोरा हरित कंचुकी चीर ॥ घालत कुंकुम ताकि कुचन पर ऐसो निपट बे पीर ॥ ललित किशोरी करत बरजोरी मुख सों मलत अबीर ॥ रंगन भीगि गई हों मोहन सारी सुरंग नई ॥ बरजत ननदी पहरि हों निकसी अबही मोल लई ॥ नैक अनोखी गारी गावै यह मति कौने दई ॥ दया सखी या गोकुल बसि कें ऐसी कभू न भई

होरी परज

होरी रे मोहन होरी रंग होरी ॥ कालि हमारे आंगन गारी दे आयो सो कोरी ॥ आय अचानक भुज भरि पकरी गहि बहियां जो मरोरी ॥ दया सखी यह निठुर नंद को कीनी मोसे जोराजोरी

तथा

रंग होरी में प्रीतम पायो ॥ मेरो दाव लग्यो सुनिरी स-
खी तोहि सांची कहति हों नें मेरो लाल बतायो ॥ बहु-
त दिनन पीछें मोरी सजनी सुहाग भाग में पायो ॥ द
या सखी या गोकुल बसि कें कियो आपन मन भायो

राग जंगला

या मोहन मोहि आनि ठग्योरी ॥ सखी को रूप धस्यो
नंदनंदन आयो हमारी पौरी ॥ मैं जानी कोई परम सुं
दरी आई हमारी ओरी ॥ धाय के मैं चरण गह्योरी ॥
चरण पखारि मंदिर लै आई हंसि २ कंठ लग्योरी ॥
सुंदर बरण मधुर सुर सजनी तब मेरो जिय बश भयोरी
प्रेम तन है रही बौरी ॥ मोहि लिवाय गयो कुंजन में क
रि छलबल बहुतेरी ॥ निपट अकेली मोहि जानि कें
मेरो तनमन आय गह्योरी ॥ ढीठ छलिया नंद को री ॥
रीसोरी यह कुंजबिहारी या ते कोऊ न बच्योरी ॥ सूर
दास ब्रज की सखियन में पारब्रह्म प्रगट्योरी ॥ जाके
सम कोरी

होरी बरवा

मुइ को रंग में बोरि डारी रे या नंद के छैल बिहारी ॥ लै बूका मेरे सन्मुख आवै भरि पिचकारी मेरे मुख प र डारै लै करवा ऊपर ढरकावै ऐसो ढीठ बिहारी ॥ क हा करूं कहां जाउं मोरी आली· या बन में अब भई कुचाली । चितवन हंसन फांस गल डारै रंचत हैं मो री मारी ॥ जेकर पाउं पकरूं वाकों · हों हूं कसरि क छु ना राखें · ब्रह्मदास हिय में अभिलाषें मुख मींडें गिरधारी

इति श्रीहोरीलीला

समाप्तम्

अथ श्रीबांसुरीलीला

प्रारम्भ

कृष्णवचन

बांसुरी दीजिये हो ब्रजनारी ॥ कालि सखी या गैर बांसु री भूलि बिसारी ॥ लै जु गई तुम धाम ठीक हम सुनी तिहारी ॥ नाहिन तुमरे काम की बंसी हमरी देउ ॥ हम आतुर हैं मांगहीं तुम नांहि जू नाहिं करि देउ ॥

सखीबचन

लंगर कन्हैया दीठ तोहि अब कौन पतीजे
डारि दई कहुं और दोष हमहीं कों दीजे ॥
तुम ऐसे लंगर केतके मांगत हम सों हाथ
चतुराई प्रभु छांडि के तुम कहा नचावौ हाथ
कैसी बंसी होय नहीं हम नैनन देखी ॥
बाप तुम्हारे साधु लाल तुम बड़े बिबेकी
इतउत खेलत तुम फिरो कहीं खेलत बिसराई
तेरी सों बाबा की सों हम मुरली ना पाई ॥

कृष्णबचन

बंसी देहु गंवारि काहे कों रारि बढ़ावौ ॥
मन में समुझि बिचारि काहे कों लोग हंसावौ
लोग हंसें चरचा करें मन में समझि बिचार
बंसी हमरी प्रेम की तुम काहे न देत गंवार

सखीबचन

हमसों कहत गंवारि आपनी करत बड़ाई
मारों गुलचा तानि तबै बाबा की जाई ॥

लै लकरी मुख पर धरी बंसी ताको नाम
जाघर तुमसे पुन्न हैं उजरी ताको गांम ॥

कृष्णबचन

बंसी के ऊजर होय नहीं परवाह तिहारी
बंसी हमरी देह कहैं गड़े बनबारी ॥
लैख रहें खड़ी दरबार लख आवें लख जायं
लख नित उठि दरशन करें सुंदर मन पछितायं

समाजीबचन

ग्वालिनि चतुर सुजान बांसुरी आपुहि दीनी
मोहन चतुर सुजान बांसुरी हंसिकर लीनी
लै बंसी ग्वालिनि मिली घूंघट बदन दुराय
सूरदास प्रभु हारीं ग्वालिनि जीते श्रीयदुराय
लै बंसी यदुराय जाय तट जमुना कीन्हीं
सुर तेतीसों कोटि वहां श्रवणन जो लीन्हीं
भक्त वत्सल सुखदायक राखो सब को मान
तिन में तुम प्रभु आप हो गुण गावत सूर सुजान

इति श्रीबांसुरीलीला संपूर्णं

अथ श्रीहिंडोला झूलन लीला प्रारम्भ

राग मल्हार

व्रजपर नीकी आज घटा ॥ नान्हीं २ बूंद सुहावनि लागत चमकत बिज्जु छटा ॥ गरजत गगन मृदंग बजावत नांचत मोर नटा ॥ गावत सुरङ्गी देत चात्रक पिक प्रगटो मदन भटा ॥ सब मिलि भेंट देत नंदलालहिं बैठो ऊंचे अटा ॥ चतुरभुज प्रभु गिरधरन लाल शिर कसूंमी पीत पटा

हिंडोला

आज कछू कुंजन में बरषासी ॥ बादर रंग में देखि सखी री चमकत है चपलासी ॥ नान्हीं २ बूंदन कछु धुरवासी पवन बहत सुखरासी ॥ मंद २ गरजनसी सुनियत नांचत मोर सभासी ॥ इंद्रधनुष में बक मिलि डोलत बोलत है कोकलासी ॥ इंद्रबधू छवि छाय रही है गिर पर स्याम घटासी ॥ उमंगि महीरुह से मढ़ि कंपत फूली

मृगमालासी ॥ रटत प्यास चात्रक कीरसना रस पीवत होंप्यासी

देसमल्लार

सामन घनगरजे घूमघूम ॥ बरषत सीतल जल रूम रूम ॥ कोयल कीर कोकिला बोलें हंस चकोर चहूं दिश नाचत बन अति करत कलोलें ॥ मोर मोरनी रू-मरूम ॥ गावें राग रागिनी भामिनि दमकि रही मानों छबि दामिनि झोटा देत रूपटि गजगामिनि पायल बाजे छूम छूम ॥ जय २ करत सुमन सुर बरषत · इंद्र निशान बजाबत हर्षत · दास गणेश युगल छबि निरखत छाय रह्यो सुख रूम २ ॥

मल्हार

आई बदरिया बरसन झारी ॥ गरजि २ दामिनि दमका वै ज्यों चूनरि में झलक किनारी ॥ मधुर २ बन बोलें भवन २ गावति ब्रजनारी ॥ चलत पवन शीतल ना-रायण परत फुहार लगति अति प्यारी ॥ देखि युगल छबि सामन लाजे उत घन इत घनस्याम लाल उत

दामिनि इत प्रिया संग राजें ॥ उत बरषत बूंदन की लरियां इत गल मोतिन हार बिराजें ॥ उत दादुर इत बजत बांसुरी उत गरजत इत नूपुर बाजें ॥ उत रंग के बादर इत बागे उतै धनुष बनमाल इत साजें ॥ उत घन घुमें इतै दृग घूमत नारायण बरषा सुख आजें ॥ ७ ॥ ७

स्याम सुनि नियरेंई आयो मेह ॥–॥ भीजेगी मेरी सुरंग चुनरिया ओढ़ि पीतांबर लेहु ॥ दामिनि सों डरपत हों मोहन ओर आपनी लेहु ॥ कुभनदास लाल गिरधर सों बाढ्यो अधिक सनेह

रेखता

आयो है मास सावन सकमानि कह्यो प्यारी ॥ चलि झूलिये हिंडोरे वृषभान की दुलारी ॥ यमुना के बंशी बट कैसी छबि छाई ॥ सीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई ॥ करती है शोर जमुना उठती तरंग भारी ॥ प्रति कुंज २ छाय रह्यो है परागरी ॥ लागति परम सुहाई अबलोक नागरी ॥ फूली लता द्रुमन की झुकी हैं डारी ॥ जापै अलिंद घूमें मकरंद हेत छाये ॥

नाचत हैं मोर बन में लागत परम सुहाये ॥ माती कोयल पुकारे बैठी कदम की डारी ॥ कालिंदिया के तट पै झूलें है सब सहेली ॥ नव सत सिंगार साजे इक एक ते नवे ली ॥ तुमहू पिया सिधारो कीजे न अब अवारी ॥ झूलें निकुंज अपने अबही चलो पियारे ॥ कीजे बिहार हम सों तुम नंद के दुलारे ॥ तब संग ले पिया कों मुनि कुंज में सिधारी ॥ बैठे कुंवर हिंडोरे अब मैं तुम्हें झुलाऊं ॥ गाऊं तुम्हें रिझाऊं छबि देखि दृग सिराऊं बैठे सुरंग पटली डोरी गहों संवारी ॥ बाढे न रमक मोहन इक मंद ही झुलाओ ॥ डरपै हियो हमारो पिया रमक ना बढ़ाओ ॥ यह बात सुनि पिया की उर सों लई लगाई ॥ भीजेगी लाल सारी कारी घटा जो आई ॥ लीजे उढ़ाय मोकों कामरि कुंवर कन्हाई ॥ तब हंसि रसिक बिहारी कामरि उढाई कारी ॥

चल० ॥

देस

आज बन्यों रसरंग हिंडोरो कदम तरे ॥ सघन लता

शुकि सुमन सुगंधिन अलिगण गुंज करें ॥ बरन २ तन भूषण चुनरी स्यामाजू पहरें ॥ लाड लडाय चाय हितचित सों रूप समुद्र भरें

तथा

झूलें प्यारी आज निकुंज हिंडोरना ॥ बोलत चातक मोर पवन झकझोरना ॥ सघन लता निधिवन की आज सुहाई हैं ॥ स्याम घटन सों बूंद परत सुखदाई हैं तैसीई दामिनि चमकि २ छबि छाई हैं ॥ मनो डरत तुअ तेज लाज दरसाई है ॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जान के ॥ मनों बिछौना कियो मदन मद भान के

तथा

चलि झूलिये हिंडोरे श्रीवृषभान की लली ॥ तिहारे काज आज इक मैनें बिरची कुंज भली ॥ रत्न जटित को बन्यों हिंडोरा कैसी झलाझली ॥ ब्रज बनिता झूलति अनेक तहं एक २ न वली ॥ शब्द करत जहं कीर कोकिला गूंजत मोर बली ॥ रसिक बिहारी की सुनि बानी तुरतहि कुंवरि चली ॥ चलो हकेले झूलें

बन में प्यारी मेरे मान ॥ तुम नई नागर रूप उजागर सु खसागर छबि खान ॥ वर्ण २ के बादर छाये मानों गगन बितान ॥ बर्षत बूंद सोई मोतियन की झालर शोभामान ॥ बोलत खग मृग डोलत इतउत सो नहिं जात बखान ॥ रंग २ के फूल खिले हैं भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख बिलसें एरी परम सुजान ॥ नारायण उठि बेगि पधारो कुल दीपक वृषभान

खेमटा

झूलन चलो हिंडोरनें वृषभान नंदनी ॥ सावन की तीज आई नभ घोरघटा छाई मेघन झरी लगाई परे बूंद मंदनी ॥ सुंदर कदम की डारी झूला पर्यो है प्यारी देखो कुंवर हहारी सब दुख निकंदनी ॥ पहरो सुरंग सारी मानों बिनय हमारी सुखचंद की उजारी मृदुहास फंदनी ॥ मम मानि सीख लीजे सुंदरि न देर कीजे हम तो बिलोकि जीजे तू है गति गयंदनी ॥ शोभा लखो विपिन की फूली लता द्रुमन की सुनि अरज रसिक जनकी करों चरण बंदिनी

सोरठ

झूलो मेरी राधा प्यारी रंगीलो हिंडोरना ॥ डांडी चारि सुरंस बनाई हीरा खम्भन झुम्मक लाई जगमग २ होय रवि शशि डोरना ॥ उमडी घटा घुमडि घिरि आई रिमझिम रिमझिम बूंद सुहाई । दमकि २ दामिनियां बोलें मोरना ॥ गावत राग मल्हार अघाई सीतल मंद सुगंधि सुहाई तान तरंगन ललित भान त्रण तोरना ॥ धवल महल चढि रत्न बंगला झूलो सुरंग हिंडोर नवाकिशोर सुकमार छबीली नेह नवल भुज जोरना ॥ सुरंग कसूमी सारी प्यारी हरित जंगाली कोर इत आली रुचि रूप लाल और पिया छवि उठत हिलोरना

मलार

तेरी झमकि झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रंगीली अति सोहै ॥ तू गुण रूप योवन रंग रसभरी तेरी उपमा को कोहै ॥ हाथन चूरी महावर महंदी चटक चौगुनी सोहै रसिक गोविंद अभिराम स्याम घन व्है दामिनि मन मोहै

पीलू

चलो पिया वाही कदम तरे झूलें ॥ झुकी है लता अति सघन प्रफुल्लित कालिंदी के कूलें ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलिगण गुंजत फूलें ॥ ललित किशोरी मग बतरायें काहि २ बतियां भूलें

मलार

हर्ष झुलाइये मनभामन ॥ उघरि पस्यो हिय हेत गह गह्यो घोरा दियौ चितचामन ॥ यह जो कल्पतरु य इ रविजा तट वह बनघन झुकि आमन ॥ वृंदाबन हित रूप बलिगई वह हरियाली सामन ॥ ७ ॥ ७

खेमटा

हिंडोरे आज झूलत रंग रह्यो ॥ अचल सुहाग सुभग स्यामा को दिनप्रति होत नयौ ॥ हरित भूमि वंशीवट यमुना सो सुख दृगन लह्यौ ॥ रसिक प्रीतम मिलिगावत भावत व्रज सब रीझि रह्यो ॥

रेखता

झूलन युगल किशोरी की दिल में मेरे बसी ॥ बैठे हैं रंग हिंडोरना करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका

दुपटा जो छोरदार ॥ सिर पै सुरंग सारी प्यारी के क्या लसी ॥ बेसरि बुलाक बेनी बैंदी जो भाल पै ॥ हीरें का हार उर पै कटि काछनी कछी ॥ जोबन के ज़ोर शोर सों रमकें बढ़ावती ॥ ललिता किशोरी श्याम की छबि देखिकें हँसी

मलार

झूलत तेरे नयन हिंडोरे ॥ श्रवण खंभ भुहें भई मयरी दृष्टि किरणि डांडी चहुओरें ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगलरूप रति जोरें ॥ बरुनी चमर ढरत चहुंदिश ते लर लटकत फुंदना चितचोरें दुर देखत अलकावलि अलिकुल लेत हैं पवन सुगंधि झकोरें ॥ कचघन आड दामिनी दमकत इंद्र मांग धन करत निहोरें ॥ थकित भये मंडल युवतिन के युग ताटंक लाज मुख मोरें ॥ रसिक प्रीतम रसभाव झुलावत विविधि कटाक्ष तान तृण तोरें

खेमटा

झुगल वर झूलत दै गरबाहीं ॥ बादर बरसें चपला चमकें सघन कदम की छाहीं ॥ इतउत पेंग बढ़ावति सुंदरी मदन उमंग तन माहीं ॥ ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बाढ़ि यमुना लों जाहीं ॥ ७ ॥ ७

देस

झूलति स्यामा स्याम संग अति तरंग शोभा की मानों लहरति यमुना गंग झलक भूषण चित चोरत स्याम गौर अंग ललित किशोरी हिंडोरने पर आज बरषत रंग

जंगलासिंध

बलिबलिजांदियां झूलन पर ॥ प्यारी पहरें कुसूमल सारी प्यारे के मन भांदियां ॥ चहूं ओर सब सखी झुलावें झुकि २ झूटे खांदियां ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत तनमन नयन सरांदियां

७

मलार

आज हिंडोरे झूलें फूलें ॥ नवल कुवरि नव दुलहनि
दूलें ॥ धा दा किट धा धाकिट धा बजत मृदंग सखी
सुघर तान गायें झननन नन नांचत मोर सघन बन प्र
फुलित श्रीयमुनाजी के कूलें कूलें ॥ नवलकिशो
री वृषभान की कुमरि भोरी २ संग जोरी रसराची उ-
रझी माल लटकि नक बेसरि अंग २ भुज मूलें फूलें

देस

मनभामन हर्षामन आमन सामन तीज सुहाई ॥
चामन गामन रीझि २ मन दंपति रति दरसाई ॥ चढ़े
हिंडोरें नयन जोरें चितचोरें सुखदाई ॥ युगलचंद
रसकंद कोरनी लखि रूपलाल बलिजाई

रेखता

प्यारी पीतम के संग झूलै रंगहिंडोरना ॥ दो खम्भ
हैं जडाऊ जडे चित के चोरना ॥ डांडी मरुवे लग
न लगी वेलन अमोलना ॥ पटली संदल की सा
फ देखो खूब है बनी ॥ लागे हैं उसके बीच मेंही

रा चुनीमनी ॥ चुंदरी घूंघट की ओट में नयना विशाल हैं ॥ खंजन भुलामने के घेरन को जाल हैं ॥ मुरको रसिक गोविन्द की छबि ही में भूलना ॥ प्यारी अनूप रूप को दिल से न भूलना ॥ प्यारी

खेमटा

युगलवर झूलत डार गरवाहीं ॥ रत्नजटित को बन्यां है हिंडोरा सघन कुंजन के माहीं ॥ रेशम डोरि पवन पुरवैया लख रति काम लजाई ॥ सखी मखा दोउ ओर झुलावत मधुर २ सुर गाईं ॥ मध्य स्याम स्यामा दोउ हिलि मिलि पुनि २ हिय हर्षाहीं ऊंची डार तोरि कलियन दोउ निज २ कलिन सराहीं ॥ या छबि निरखि प्रिया की प्रीतम मोहन मन न अंघाई

खेमटा

आज दोउ झूलत रंग भरे ॥ झोटा खरे लेत कबहुं क सखी कबहुं हरे हरे ॥ कर्णफूल कुंडल मिलि भेटत मानों शशि भान लरे ॥ चंद्रमाल हिलकत उरा

धे हरि बनमाल गरे ॥ बिहंसत दमकि उगीत दशना
वलि अवनी सुमन झरे ॥ ललित किशोरी टरत न ल
खि छबि द्रग शिशु मान अरे

देश

कहत स्याम स्यामाजू मोकों दरशन देत रहौजू ॥ अं
चल अलक पलक सु निरंतर इक संकोच सहोजू
यह बिनती जो मानिये श्रवण सुनि नाहन बचन क
होजू ॥ बिहारनदास कहत रुख लीये यह सुख स
हज लहोजू

देस

सुहावन सावन राधा सुख तिहारे बाट परयो ॥ यह
जो शतगुणों रूप अंग संग झूलन में उघरयो ॥ यह
जो चोगुनों चाव कौन बिधि भागन तेजु बढ्यो ॥ वृं
दाबन हित रूप रसिक प्रीतम को लहनों सुकृत
करयो

मलार

राहो लाल झूलिये तनक धीरे ॥ काहे को इतनी र-

मक बढ़ावत द्रुम उरझत चीरे चीरे ॥ जो तुम झुकि २
झोटन के मिस आवत हो नीरे नीरे ॥ नागर काल्हि ड-
रात न काहू लेत भुजन भीरे २

देस

झोका दीजो समार मेरी सारी न लटके ॥ सघन कुंज
डार कटीली काहू छोर जिन अटके ॥ उन बातन अ
व भेट नहीं कछु और धोखे जिन भटके ॥ ललित
किशोरी लाल जाओ घर काहे को चट मटके ॥ ७

कजरी

कैसे झूलें हिंडोरे बतियां मानत नाहिं हरी ॥ बरजो
न मानत यह काहू की लोक की लाज टरी ॥ हाहा ख
त यह तो पैयां परत हैं प्रेम के फंद परी ॥ रसिक गो-
बिंद अभिराम स्याम भुज भरि अंक भरी ॥ कैसे झूलें०

हंसमल्लार

हिंडोरना में काईं झूलो राज ॥ म्हारा झूलत हिया ल
रजे ॥ रतन जटित के खंभ जड़ारा अगर चंदन के पय
रेशम डोरि पवन पुरवैया जुरि आई सामन की घटा

स्यामा झूले स्याम झुलावे कालिंदी के तट ॥ उड़ि २ अं
अर परत भुजन पर निरखत नागर नट

सारंग

फूलन के बंगले में राजे पिया प्यारी हो ॥ फूलन के
भूषण विचित्र सोहें अंग २ फूलन के बसन बदन छ
बि न्यारी हो ॥ फूलन से मुखारबिंद बचन फूलन से
फूलनसी फूली सखी तनमन शोभा लखि भारी हो
जैसोई समाज साज आज नारायण मानों कुंज भव
न में फूली फुलवारी हो

कबित्त

फूलन के खंभा पाट पटरी सु फूलन की फूलन के फुं
दने फंदे हैं लाल डोरी में ॥ कहें पदमाकर बितान त
ने फूलन के फूलन की झालरें सु झूलत झकोरे में ॥
फूल रही फूलन सु फूल फुलवारी तहां फूल ही के
फर्श फबे हैं कुंज कोरे में ॥ फूलझरी फूलभरी फू
लजरी फूलन में फूलहीसी फूल रही फूल के हिं
डोरे में

कान्हराध्रुपद

फूलन की चंद्रकला सीसफूल फूलन को फूलन के
झुमका श्रवण सुकमारी के ॥ फूलन की बंदनी वि-
शाल नथ फूलन की फूलन को बिंदा भाल राजत
दुलारी के ॥ फूलन की चंपाकली हार गले फूलन
के फूलन के गजरा ललितकर प्यारी के ॥ फूलन
की पग में पायल नारायण फूले फूले भाग सदां ला
डिली हमारी के

कबित्त

फूलन चंदोवा तने फूलन फरश बिछे फूलन की
सेज और फूलन छबि छै रही ॥ फूलन की गले मा
ल फूलन करनफूल फूलन को टीको मांग फूलन
भरे रही ॥ फूलन के बस्त्र और सिंगार सब फूलन
के विक्रम मिरगेश मन उपमा बनै रही ॥ फूली फु-
लवारी जामें बैठी मान प्यारी देखत वसंत या बसंत
ऋतु ह्वै रही

पीलू

सो तू सखि लैरी झोटा तरल भये ॥ इत नव कुंज कदं
बलों परसत उत यमुना लों गये ॥ आवत जात लता
निर्वारत कुसुम बितान छये ॥ कल्यान के प्रभु री
रु विवस भये झूलत नए नये ॥

तथा

मेरो छांडिदे अचरवा मैं न्यारी झूलोंगी ॥ झोटन में
स मोहन लंगरैयां अजहूं टझोकत ना भूलोंगी ॥ ल
लिता संग रंगीले झूलें झूलि २ मनही मन फूलोंगी
ललित किशोरी तरल पंग करि लालन तो संग स
म तूलोंगी

दादरा

सुनि सखि आज झूलन नाहिं जैहों ॥ स्याम सुंदर पि
यारस लंपट है अतिही दीठ्यौ देत ॥ झोटा तरल क
रे पाछें ते धाय भुजन भरि लेत ॥ चितवन चपल
चुरावत अनतें हमें जनावत नेह ॥ रसिक गोविन्द
अभिराम स्याम संग क्यों न जाय रस लेय

सोरठ

कौन समय रूठन को प्यारी। झूलो ललित हिंडोरें। रंगबरंग घटा नभ छाई। बिच २ चपला चमक सुहाई॥ परत फुहार परम सुखदाई· चलत समीर झकोरे॥ बिबिध भांति पक्षी बन बोलें· मृगिन सहित मृगबिहरत डोलें· जलजंतु मिलि करत कलोलें· यही अचरज मन मोरे॥ कुसुम चीर पहरें ब्रजनारी साज समाज आज है भारी· नारायण बलि जाऊं तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥

मलार

यह ऋतु रूठ रहन की नाहीं॥ बरषत मेघ मेदिनी के हित प्रीतम हरष बढाई॥ जे बेली ग्रीषम ऋतु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं॥ उमडी नदी प्रेमरस माती सिंधु मिलन को जाहीं॥ यह संपदा दिवस चार की सोच समझ जिय माहीं॥ सूर सुनत उठ चली राधिका दे दूती गरबाहीं

गौरी

झूलन हार नई कौन है। स्यामा के संग रंगभरी सोहत सखी नवेल ॥ अति सुंदरतान सामरी मानों नील मणिन की बेल ॥ श्वेत कंप रोमांच हो जात परत कछु और ॥ झुकि झोटन में मिले हंसकुमरि लजोई होत ॥ निरखो झूलन नेह की सखी चतुर सिर मोर ॥ हम जानी जानी सबी सखी यह झूलन कछु और ॥ सबी छकाई नागरी द्दगन सुधारस प्याय ॥ कपटरूप धरि मोहनी प्रगट भई व्रज आय

ईमन

झूलत को स्यामा के संग सखी सामरी प्यारी है ॥ कजरारे नयन सैन सों बातियां अंखियन कोर कटारी है ॥ जोवन जोर मरोर भौंह की ललित किशोरी वारी है ॥ ललिता करि परिहास कही यह नागरि नंददुलारी है

झिंझोरा

स्यामाजी झूलें पीरी पोरवरि पार ॥ गावति हैं ऊंचे

स्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकन की दमकन नग भूषण शोभा विपिन निहार ॥ चौ का की चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥ थरकत है अतिरस अतरोटा सिर पर सूही सार सुभग बनी उर पीत कंचुकी मुख पर श्रम क-ण वार ॥

तथा

सजनी री इक मामरी आई झूलन को रिझवार ता के संग झूलत है प्यारी करत अधिक अनु-हार ॥ कौन गाम का नाम तिहारो कहिये कृपा विचार ॥ तरुणिन में अति सुंदर प्यारी चतुरन में वर नार ॥ ललिता कहै बोलिरी मामरि नात र दैहों उतार ॥ राजसुता संग झूलन आई दियो दीठपन डार ॥ डोरी गहि लीनी ललिता नें दोऊ दिये उतार ॥ हंसि पुनि चपल बलैयां लीनी को ऊ पीवत जल वार ॥ सैनन में समझावति मुख सों बचन न सकै उचार ॥ नंदगाम की ओर ब-

तावै ऊंचे हाथ पसार ॥ अचरा की सरकन में
कौस्तुभमणि की परी चिन्हार ॥ हरहर हंसति
सकल ब्रज सुंदरि यह चोही खिलवार ॥ नयी
पाहुनी आई झूलन बैठी घूंघट मार ॥ विंदावन
हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार

झिंझोटी

बांकी छबि सों झूलत प्यारी ॥ बांकी आप बिहा
री बांके बांकी संग सुकमारी ॥ बांकी घटा घिरी
अति चमकन चपला हूं की न्यारी ॥ ललितकि
शोरी बांकी मुसकनि बंक पेच पर वारी

पीलूखेमटा

कौन चढ़ै पहलें सुरंग हिंडोरे ॥ सोई करत मनो
हार होयं हित रमक देत जोरा जोरे ॥ गावत राग
तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरें ॥ रसिक
प्रीतम यह होड पिया प्यारी रीझि देत तृण तोरें

सोरठ

गाय चराय के गिरि धार्यो तुम्हें झूलन समझक

हा है ॥ अति सुकमार प्रिया गौरांगी ता संग झूली ही चाहै ॥ हम जो सिखावें तैसीही सीखौ कहा फिरत हौ भरे उमाहै ॥ वृंदाबन हित रूप बलिग ई ह्यां पायौ कै वां है ॥

सारंग

तेरी झूलन अति रससानी सुखदानी श्रीराधा वल्ल भ लाडिले ॥ गावत बजावत रिझावत प्रिया को तान तरंगन सब मिलि आवरे ॥ सब शृंगार हार फूलन के प्यारी को पहरावत मन में चाव रे ॥ रा धेवर कृष्णा याही कृपाकर विपिन बसावौ अनत न जावरे ॥

मल्हार

झूलौ तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊं ॥ मरुवे मयार करूं हित चित दै तनमन खंभ बनाऊं ॥ सुधि पटली बुधि डांड़ी चेतन नेह बिछौना बिछाऊं ॥ अति अ वसेर धरूं इक कलसा प्रीति धुजा फहराऊं ॥ गु रजनि कुहक किलक मिलिबे की नेह नीर बर-

साऊं ॥ श्रीबिट्ठल गिरिधरन लाल कोंजो इकि ले करि पाऊं ॥

मल्हार

भीजत कब देखूं इन नयना ॥ राधाजू की सुरंग चूनरी मोहन को उपरैना ॥ स्यामास्याम कुंज तन चितयौ यत्न कियौ कछु मैना ॥ श्रीभट के प्रभु नयनन निरखत झुरि आई जल सैना

मल्हार

भीजत कुंजन में दोउ आवत ॥ज्यों २ बूंद परत चुनरी पर त्यों २ हरि उर लावत ॥ अधिक रू कोर होत मेघन की द्रुम तर छिन बिरमावत वे हँसि ओट करत पीतांबर वे चुनरी ओढ़ावत तैसेई मोर कोकिला बोलत पवन बीच घनधावत ॥ ले मुरली करि मंद घोर स्वर राग मलार बजावत ॥ भीजे राग रागिनी दोउ भीजें तन छबि पावत

सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उप

जावत

इति श्रीहिंडोरालीला

समाप्तम्

अथ मनिहारीलीला

लिख्यते

दोहा

समाजीवचन

प्रथम सुमिरों युगलवर गुरुचरणन सिरनाय
प्रियादास प्रिया रसिक की लीला कहत सुनाय
एक दिवस श्रीकृष्णचंद्रजी मन में यही बिचारी
धरिके रूप मनिहारिन कौ छलिये राधा प्यारी
तबही कृष्ण बने मनिहारी गहने पहरि जनाने
हीरा जटित चुरी लखिन की मोहन चले बरसाने
लहंगा सुरंग कसूमल सोहै और बैंजनी सारी ॥
यह छबि देखि मदनमोहन की नारि रहीं निहारी
पायन नूपुर अति शुभ सोहत चाल चलत मतवारी
मंदमंद पग धरति धरनि पै देखि मोही ब्रजनारी

करसोहत सुवरन के कंकना मोतिन मांग समारी
अधरदंड पर बाजू सोहै ताकी छवि अति न्यारी
मांथे ऊपर बेंदी सोहै ताकी छवि अति प्यारी
मानों स्याम घटा के ऊपर दामिनिसी लहरारी
उर में सोहत हार मुक्ता को उपमा कहत न आवै
तापर चंपकली अति शोभित शोभा कही न जावै
श्याम सुंदर शोभा अद्भुत है मोती मांग संमारे
मानों स्यामघटा के ऊपर छिटक रहे हैं तारे ॥
शिर सों छूटि रही लट लटकन शोभा कहत न आई
सीसफूल अरु झूमरि सोहति शोभा कही न जाई
अति सोहति सिंदुर की शोभा भृकुटी धनुष चढ़ाई
पहिरा लगी अतलस की चोली तामें गैंद डुराई
रचपचके महंदी लगवाई तापर छूटी बूंदी
कर सोहे कमलन पे मानों बिच २ बीर बहूटी
मंद २ मुसिकात छबीली मद सों चितवत प्यारी
जिन मारग है निकरी प्यारी सब नर रहे निहारी
रूप अनूप बने श्याम सुंदर प्रिया रसिक मतिहारी

रविशशि कोटि मदन इ की छबि दीजें तापै वारी

दोहा

याबिधि मनिहारी बने प्रियवर नंदकिशोर
पिया रसिक प्रिया छलन को चले बर्षाने की ओर
देखत सखा नवल मनिहारी चली जात मुसिक्यात
रसिक सखा बूझत गोरी सों कहा रहत कहां जात
इक नगरी है श्रीगोकुलजी तामें मैं जु बसात
बर्षाने वृषभान लैंडेती ताके घर हम जात ॥

ललिताबचन

दोहा

बूझति ललिता मनिहारी सों कहां की रहवे वारी
कहा काम है बर्षाने में कहि को यहां सिधारी

मनिहारीबचन

दोहा

आई हूं गोकुल नगरी सों जातिपांति मनिहारी
मंदिर को वृषभान बबा को जहां बसत राधाप्यारी
सुघड़ सुनी वृषभानकुमारी ताहि मिलन हों आई

ढूंढि फिरीहूं सगरी बस्ती तुम हमकूं देहु बताई

सखीबचन

दोहा

यही महल वृषभान राय कौ यहीं बसत राधा प्यारी
काज कहौ अपनों तुम प्यारी अहो नवल मनिहारी

ललिताबचन

दोहा

हाय जोरि के तब प्यारी सों ललिता कहत सुनाई
प्यारी तिहारे देखन कारण मनिहारी इक आई।
नानाबिधि के भूषण पहरें बड़े घरन की जाई ।
स्याम बरण अति चपल नारि मुख देखें चंद लजाई
आज्ञा होय भीतर लै आऊं ठडी है पौरि तिहारी
आज्ञा पाई तब प्यारी की ललिता तुरत सिधारी

ललिताबचन

दोहा

चलि मनिहारी तुरतहिं अब तू प्यारी तोहि बुलावे
वेगि चलौ अब मेरे संगहि मति मन में समांवे

मनिहारी वहां बेगि सिधारी जहां बैठी हैं प्यारी
जातेंही उन सीस नवायो आदर पायो भारी ।
प्यारी की आज्ञा लै ललिता चौकी तुरत बिछाई
तब प्यारी ने अपने करलै मनिहारिन बैठाई ।
बहुप्रकार सों आदर करिकें बीरी तबही दीनी
तब मनिहारी हंसिकर मन में बीरी तुरतहिं लीनी

प्यारीबचन

दोहा

कौन की बहू कौन की बेटी कौन कहां ते आई ।
कैसे अकेली यहां पधारी तनकउ सकुचन आई
प्रेमगोप की बेटी हूं मैं श्रीगोकुल ते आई ।
मारग मिल्यौ नंद कौ छोरा गयो मोहि पहुंचाई
वाकी तेरी कहा जान ही सो तोहि गयौ बताई ।
कौन २ सी चूरी प्यारी हमरे कारण लाई ।।

मनिहारीबचन

दोहा

नंदगाम की रहिवेवारी गोकुल में मैं व्याही

चुरी सुनहरी और रुपहरी तुमरे कारण लाई ।
कीर्ति कुमारी अब तुम प्यारी पहरन की करौ त्यारी
हरी २ चुरियां गोरी २ बहियां कैसी लगें पियारी
चुरियां लाखन के मोलन की है कोउ पहरन हार
तो सिवाय वृषभान नंदिनी को है जानन हार
कर मसकत गहि बहियां चुरियां पहरावत कर सोर
देखि २ ललिता की ओरी अधिक हंसति सुख मोर
अचरज भई वृषभान नंदिनी कहत न बनें सकुचाई
ललिता यह अचरज की बतियां मोपै कही न जाई
लागत कर मनिहारी को मोकों जैसे कर मरदानों
तुम तो ललिता चतुर सयानी याकों तुम पहिंचानों
सुनों २ वृषभान नंदिनी मैं कहते सकुचाऊं ।
है कछु कपट मोहि हू भासत मैं अब कहा बताऊं
बंसीबट पै सदां रहत वो गायन को चरवैया
वाकी याकी एकसी सूरति जानि परत सुनि दैया
मनिहारी तोहि जानन दैहों दिना दसक ह्यां राखों
तेरो रूप मेरो मन मोहै तो सों कहा मैं भाखों
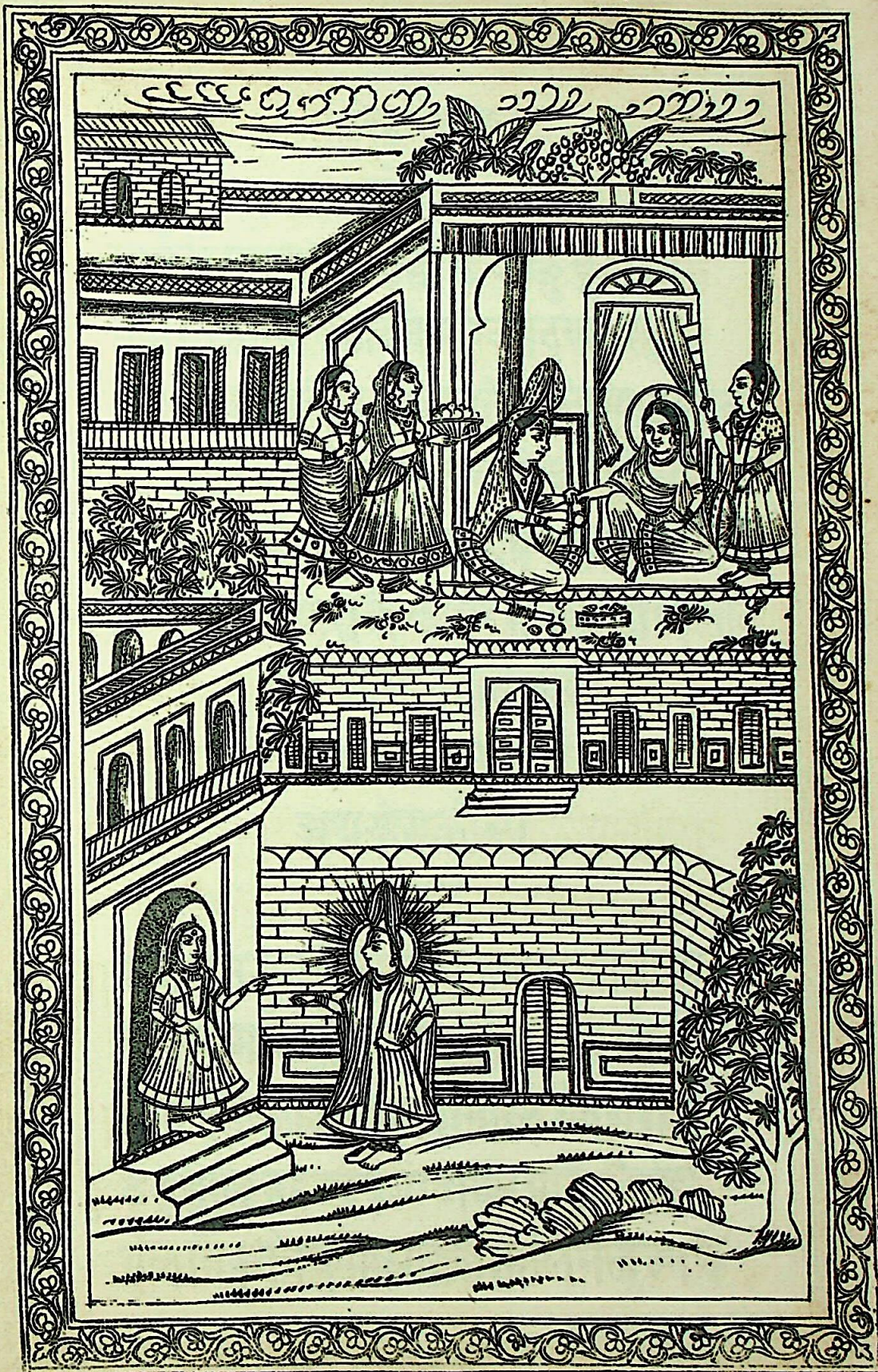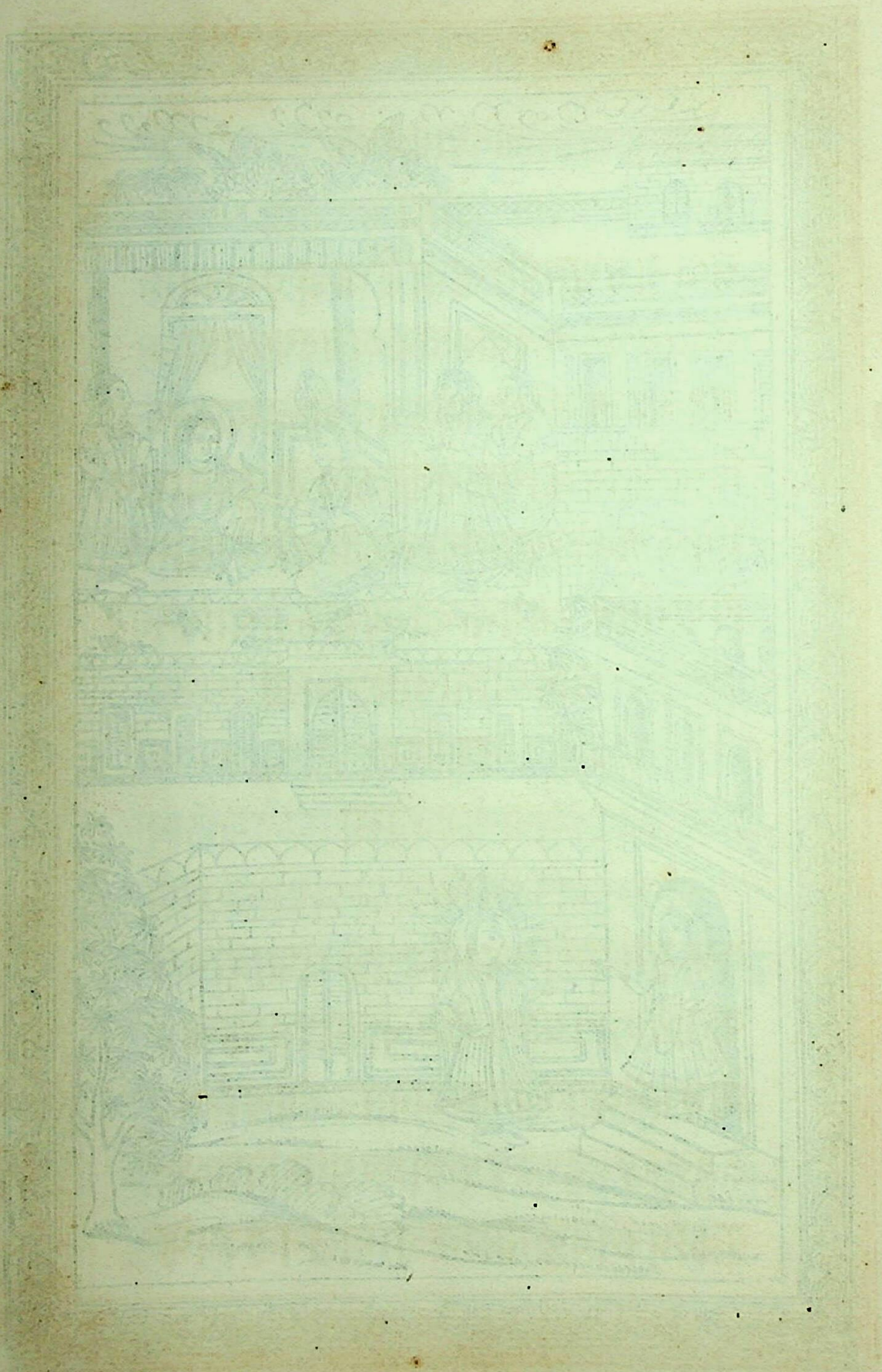
मनिहारीबचन

दोहा

वर्षानों मथुरापुरी नाहीं हैं कछु दूर।७।

सदां मिलन अब होयगो रविये दया भरपूर

जब हरि जानिलिये ललिता ने चीन्हि स्यामसुसका-

प्रियाप्रीतम के मिलन की कवि को कहै बरवान

रसिक नाम है स्यामसुंदर अरुप्रिया है उनकी प्यारी

पिया रसिक प्यारी के कारण सबलीला बिस्तारी

इति श्रीमनिहारीलीला

समाप्तम्

अथयोगलीला

लिख्यते

एक समें मन मित्र मोहि यह अज्ञा दीनी

याही ते मतियुक्ति जोगलीला यह कीनी

शिव सनकादिक शारदा नारद शेष गणेश

देहु बुद्धि बर उदय उर अक्षर युक्ति विशेष

एक दिन नंदकुमार ग्वाल मिलिमतो उपयो

नंदगाम ते निकरि भोर राक भेष बनायौ ॥
तुम सब गायन पै रहौ मैं वर्षाने जाऊं । ७ ।
मैं कबहू देख्यौ नहीं कैसो है वह गांउं । ७ ।
यह कहि मोहन रूप जबै जोगी को कीनों
कानन मुद्रा डारि तिलक आडौ दै लीनों
जटाजूट मांथे धरी जहरा मुहरा लाय ।
सींगी सेली पहरि कें लीनी भस्म रमाय ।
रूप धरि कपट को
त्वच बकुल कौपीन वेलि मेखला बनाई
मृगछाला लटकाय रुद्रमाला लटकाई
कांधे झोली फावरी अग्नि सुरेरी हाय ।
बनि बर्षानेकूं चले जडजोगी यदुनाय
साय कों छांडिके
वर्षाने के बाग जाय के अलख जगायौ ।
पशु पक्षी बस भये सुनत रसनाद बजायौ
धरि धूनी मौनी बने पलक दिये दृग डारि
बैठे तरबर के तरें जोगासन को मार । ७ ॥

कपटको कोयरा

सखीएक लखि गई कही कीरति सों जाई ॥ तप-
सी आयौ बाग एक मैं देखि कें आई ॥ कानन में मु-
द्रा महा फलके रूप अपार ॥ मानों भोग बियोग वर
धरें योग अवतार

बिसरिकर कामते

जोगी रूढ सगूढ ज्ञान गुणगण को बासी ॥ दर्शन
परम अनूप रूप है परम उदासी ॥ जो चाहे करि
के कृपा मनवांच्छित फल देय ॥ ऐसे तपसी की
कोउ सेवा करि फल लेय ॥

चलौ दर्शन करें

यह सुनि राधे बात हाय मुख दे मुसिकानी ॥ चि
ते सबन की ओर कछू जिय में सकुचानी ॥ इतने
में कीरति कही लीनी कुमरि बुलाय ॥ सखी संग
सबही चलीं बागन झूली आय

योग ध्यानी जहां

आवत देखीं नारि निकट तब पलक लगाये ॥

इकटक आसन मारि कपट की रचना लाये॥ आय निकट ठाडी भईं करजोरे नरनारि॥ मगन भईं सब सुन्दरी जोगीरूप निहारि॥

करें मनुहार कों

राधा और सब सखी लखी मोहन गति मन की॥ जानत हैं सब जतन जुगति या जोगी जन की॥ आपसमें मुसकीं सबै करि कीरति की कान॥ याते प्रगट करति नहीं अंतर की पहंचान

प्यारे मित्र की

कहन लगी करजोरि सखी इक चतुर सयानी॥ दृग खोलो महाराज खड़ीं बड़े गोप की रानी॥ कृपादृष्टि करिके अबै हरौ सकल संताप॥ गोपराज रानी इतै योगराज हो आप॥

तपति कों हरो

बड़ी बेर कछु भई तनक तब पलक उघारे॥ चितै तनक तिन ओर कपट के बचन उचारे॥ कहौ तुम कौ रहौ कहा क्यों आई मम पास॥ हम जोगी ज

ग सों रहें सहजैं सदां उदास ॥

मित्र हम कौन के

तब कीरति ने कही कहां ते ह्यां तुम आये ॥ कहा पिता कौ नाम कौन जननी के जाये ॥ जोग लियौ केहि कारनें कहा तुमारौ नाम ॥ इतनी सब सांची कहो सांच बात बलिजाउं ॥

तिहारे रूप की

आदिनाथ है नाम हमारौ गाम गोट घर नाहीं । बन रख रहे में फिरें जानि जननी जग माहीं ॥ जोग लियौ हित कारनें यही हमारी रीति ॥ दिना चारि बिरमें यहां जो देखें अति प्रीति

कर्म में जो लिखी

कहन लगी इक सखी कहो कहा बानि तिहारी ॥ जोग लिये सुख कहा भूप ते बने भिखारी ॥ तन मन मारे बन फिरौ काम कसौटी देय ॥ रोसे जोग जंजाल में पोट बांधि कहा लेय

शिला की राशि में

क्यों निर्द्धन हो जोग भोग याही कर होई ॥ तुम कहा जानें बात नाथ पति है अनगोई ॥ जगत जीव माया बंधे सबें फिरें हैं ख्वार ॥ जोग बिना जो हर करे एकमारे संसार ॥

जोगमाया बली

हम हैं प्रेमी लोग जोग कों जानत नाहीं ॥ फल क्यों आवे हाथ नाथ पकरें परछाहीं ॥ सांची प्रसंसा योग की स्याम सुंदर देह ॥ स्याम सलौने अंग में बाद लगाई रेह ॥

नेह कों छांड़ि के

हम नहीं जानें नेह कहो काहे सों कहिये ॥ जोग बिना सब रोग जगत मिलि हरिगुन गैये ॥ जोगी अपने जोग बल पल में अलख लखाय ॥ रहें पूरन परब्रह्म में सून्य समाधि लगाय

सहज सुख रंग में

ब्रह्मानंद अनंद प्रेम तें परे न कोई ॥ जानत प्रेमी लोग प्रेम ते जो गति होई ॥ प्रेमभक्ति कर पाइये

नानाबिधि वस्भोग ॥ प्रेम बिना फीके परंतप ती
रथ जप जोग ॥

जहां लग हैं जिते

जोनों जोग जुगादि सों जो चलि आयौ ॥ अच्युति
जोति प्रकाश पास तें अलख लखायौ ॥ वृक्ष बेल
जलजंतु जो सघन फूल फल पात ॥ निर्गुण जोति
स्वरूप में सगुणरूप दरसात

पात फल फूल में

निर्गुण निपट कठोर सुलभ सर्गुण सुखरासी ॥ जो-
गानंद उदास प्रेम आनंद निवासी ॥ निर्गुण में ना-
हिन कछू सर्गुण सों सब होय ॥ कहा पोट बांधे को
ऊखाली कोरी टोय ॥

हाथ कछु ना परे

जोग बुरो जो होय कहौ क्यों शंकर धारें ॥ पद्मास-
न सब द्वार रोकि इन्द्रिन कों मारें ॥ मोह नदी की धा
र में बह्यौ जात संसार ॥ जोग करें उतरें तेई निर्गुन ना
व अपार

योगमत में यही ॥

निर्गुणयोग तुम कह्यौ सगुण बिन कैसे पावैं ॥ छा
या पकरि कर काहा अफल फलकार नल पावैं ॥
सगुन सलौने रूप कों सगुन प्रेम पथ पाय ॥ आग
देयं या अलरव में अगम पंथ मेंजाय

नाय इन हाथ सों

निर्गुण निंदो कहा सगुण याही ते होई ॥ बिना यो
गबल करै परै याते नहिं कोई ॥ तनक प्रेम कों
पाय कें चढ्यौ गर्ब गजराज ॥ झपटि जाय काहू
दिना बली भयंकर बाज

आज हम कहत हैं

निर्गुण कौ कोउ यहां गुणीजन गाहक नाहीं ॥ य
हां न बिकि है योग जाय बेचो बन माहीं ॥ आगें बे
चो अलरव कों भलौ मिलैगो मोल ॥ जो सर्गुण
बेचन चले लैहैं हम तक तोल ॥

तिहारो गवरे

हम तो अब बिकिजायं मोलजो गोंकौ देई ॥ रो

सो गाहक कौन जबर जो हम कों लेई ॥ देह बराबर देह कों जो कोई भरि देय ॥ जीव बराबर जीव कों मन भरि मन कों लेय ॥

जमा जतावत हैं घनी

इतनों दे तब लेय तुमें कहा करि है कोई ॥ निज कर फारे कान फिरत बन २ में सोई ॥ भिक्षा हित घर २ फिरत कहत अलेख अलेख ॥ निपट भयं कर रावरे कीनों तुमनें भेख ॥

खराबी जोग में

जो जन हम कों लेय लाज सों काज न राखै ॥ पांच न कूं बस करै पांच पकरै लघु भाखै ॥ मरम न काहू सों कहैं रहै मौन गहि टेक ॥ कोटि कुबुधि की रेख पर सो बिरमावै भेक ॥

भेष धरि जोग को ॥

हम सों अटक कहै तुम सों बहुतेरी ॥ को मुख पावे पहरि पायं कंचन की बेरी ॥ पारब्रह्म के पार को तजि कर प्रेम परार ॥ जोग जो जरी नाव चढि

को बूड़ैं धँसि धार ॥
भार धरि धात कौ
सुनत सखिन की बात नाथ मन में मुसिकाने ॥ अं
तर हित कौ नेम प्रेमपागी मन जाने ॥ रही अबोली
राधिका जानि मात कौ साथ ॥ आंखिन में हीं हँसि
धस्यौ हरि हीये पर हाथ ॥
जाय ढिंग नाथ के
कही नाथ कहां रहौ कहां सों तुम चलि आये ॥ तु
म से जोगी किते जीति हम गैल बताये ॥ यह दुहाई
मम नाथ की ब्रज चौरासी मांहिं ॥ जो जोगी आवै
यहां कान पकरि घर जायँ ॥
कहा भूले फिरौ
वो जोगी हम नाहिं अबै अवधूत अखारौ ॥ सप्त
दीप नवखंड मांहि है राज हमारौ ॥ या ब्रज मंडल
में कहा जालिम जोगी और ॥ हम कबहू देख्यो न
हीं रहै कौनसी ठौर ॥
नाथ वह निकट कौ

अहोहमारौ नाथ फिरै उर अंतर बन में ॥ नित नैनन में बसै मदी मन मांही तन में ॥ नित इन नैनन में बसै तुम कों दरसै नाहिं ॥ प्रेमीजन जोगी तहां रमत रहै मनमाहिं ॥

जानि तुम नहिं सकौ

तुम जोगिनि कहां रहौ बचन तुम कैसे बोलो ॥ यौ के भोरें भागि कहीं भूली सी डोलौ ॥ अब अटकी अब धूत ते कूत परी नहिं तोय ॥ बादि२ तोसी जनी घनी गयीं घर खोय ॥

जोग कहा खेल है

तनक भेष धरि नाथ निपटही क्यों गर्बाये ॥ तुमसे जोगी कितिक नाथ हम नांच नचाये ॥ या ब्रज में जोगिनि घनी रूपमोहनी नारि ॥ जीति लेय कोउ योग को मुद्रा लेय उतारि ॥

आपही हारि हौ

जग में जोगिनि जीति जपतही मंत्र मदन के ॥ जोगी नाद बजाय हरे छिन में मन तिन के ॥ जबर-

जोग माया जगत राख्यौ सबै भुलाय ॥ तामें तू कि-
तनीक ह्वै रहे हो विश्व भरमाय ॥

भरम भूली फिरै

अहो नाथ तुम कहा जोगमाया बस फूले ॥ निज
कर देकर आगि वस्तु बहुतेरी भूले ॥ सिंह बैर कर
स्यार के बांधे फिरौ हथियार ॥ हम ते फते न पाय
हो बातन के व्योहार ॥

हारि हो आपही

जोगी को घर दूरि जोग की जुगति न पाई ॥ चित
की चटक न गयी नयी जोगिनि बनि आई ॥ ला-
जन मारे भेष कूं वस्त्र बघंबर धार ॥ बाद करै मति
माधसों डारेगो फटकार ॥

भस्म ह्वै जायगी

कित डर पावौ मोहि तुम्हें मैं जानि गयी हूं ॥ सब
जानत हौं तोहि नाथ मैं नाथं नयी हूं ॥ अबही उठि
आये कहूं कपटी भेष बनाय ॥ भस्म करौगे कौन कूं
झूंटी भस्म रमाय

भरोसे कौन के

तू जोगिन जो होय जोग की जुगति बताऊं ॥ सहज सच्चिदानंद निरंजन अलख लखाऊं ॥ बादविबाद बृथा करै धरै भेष पाखंड ॥ ताय बताऊं होय जो जोगजुगति आखंड ॥

सुनों जड़ जोग की

प्रथम करे सतसंग शरण सतगुरु की आई ॥ जोग अरंभ जमाय विषै बासना बिहाई ॥ पंच पचीसन बस करै तीनन कौ करै त्याग ॥ समयम संयम सो करे बिरति बैन बैराग ॥

लाग यह जोग की

अल्पाहार बिहार अल्प निद्रा रुख राखै ॥ कारज मातर भख गरब की बात न भाखै ॥ निंदा स्तुति कूं तजै भजै न वै अरु मीत ॥ हिंसा करे न जीव की राखे मन कूं भींच

जोग की रीति यह

राका की बन जाय अमल जल थलहि निहारै ॥ प

न अपान समान करै जोगासन मारै ॥ इड़ा पिंगला छांडिके करै सुषुम्ना संग ॥ प्राणायाम चढ़ाय के करै पवन उरधंग ॥

संग स्वर साधि के

समकर नाभी नाक नजर भृकुटी बिच राखै ॥ सून्य समाधि लगाय उलट रसना रस चाखै ॥ चित न चलै तन ना हिलै राखै जोग जमाय ॥ सदानंद आनंद में ब्रह्मानंद समाय

जाय जोगी जहां

तुम सों कह्यौ यह जोग यही हमरे मन भायौ ॥ चात्रक रट ना घटै बिना प्रणजल के प्याये ॥ षट दर्शन परसन किते जप तप जोग बिराग ॥ इतने हीं तब ह्याथ करी बिना जोग अनुराग ॥

रंगीली मित्र ज्यों

यह चौरासी कोस फिरै जहां हमरी फेरी ॥ यहां न चलि है ठगनि जोगमाया कछु तेरी ॥ मुद्रा सेली फावरी अब सब लैयं छिनाय ॥ नाद बजायो आपने कों

चेटक हमें दिखाय
जान तब दैयेंगी

यह सुनि लई बभूत तनक चुकटी भरि तानी ॥ जोग मंत्र करि जंत्र मोहमाया ही बानी ॥ आप दिवानी राधिका लखि सामल अवधूत ॥ आल बाल है गई तुरत पीर न काहू कूत ॥
कपटता तर्क की

मात गोद धरि कुंवरि हाथ धरि उरहिं टटोरत ॥ सखी सबै पाछितात हाथ मीडत तन तोरत ॥ बोलति नाहिं न राधिका मातखात मनुहार ॥ बार २ डारत सखी राई नोन उतार ॥
अचंभे है रहीं ॥

पलक न खोले कुंवरि नैन बोलै न बुलाई ॥ निरखि सुता को रूप मात मन में अकुलाई ॥ करजोरें कीरति कहै सुनिये सामल नाथ ॥ कुंवरि कछू कारन भयो तुम उठि फेरौ हाथ
नाथ को घर बड़ो

यह सुनि सांवलनाथ तनक तब राख उठाई ॥ प्रेम मंत्र करि जंत्र कुमरि के कंठ लगाई ॥ सातवार दै हा य कूं तनक पीठि उनकार ॥ अलख २ उच्चार कियौ दीने पलक उघारि ॥

कुमरि वृषभान की

भई तुरत चैतन्य मात तब कंठ लगाई ॥ तब कीर ति करजोरि नाथ की करी बडाई ॥ मगन भई सब सहचरी अंतर हित पहंचान ॥ कहन लगीं सब नाथ सों हमें परी अब जान

जोग पूरौ सही

कहति कुमरि की बात तात तुम पूरे जोगी ॥ देखि कुं मरि कौ हाथ भई संयोग वियोगी ॥ करौ सगाई नं द के कुंमर कान्ह कों जान ॥ इनें उनें रस होयगो कहो रेख पहिंचान ॥

सुलक्षण हाथके

यह सुनि सामलनाथ हाथ तब देखन लागे ॥ बो ले बचन बनाय कपट रस स्वारथ पागे ॥ इनें उन्हें

रस तो रहै करे रातदिन मेव ॥ सखिन सहित संकेत में लै फल पूजो देव ॥

फूलफल पत्रसों

सब देवन कौ देव भेद काहू ना जानें ॥ जाय सबै एकं त ध्यान धरि पूजा ठानें ॥ भेद न काहू सों कहो सबै मानि मन गोय ॥ जो जा हित पूजा करे सुफल काम ना होय ॥

गुप्तगति मंत्र की

मंत्रजंत्र मिलि मिथुन जोगजपतप सुर पूजा ॥ यहै लोक की सिद्धि होय भंग देखत दूजा ॥ यह अति सुगम उपाय है होय नहीं चित भंग ॥ निसदिन भव न संदेह बस रहै एक रस रंग

पियारे मित्र सूं

जब सों नीकी जतन खोलि झोरी ते लीनी ॥ निपट अनूठी जानि जडी बूंठी इक दीनी ॥ गल राखे जो याहि कों कंचन जंत्र मढाय ॥ भूतप्रेत वेताल भ यकर नजरि लगे नाहिं ताय

जड़ी के जोर सों

दे कीरति सों कही फुरी यह बचन हमारी ॥ करै अ
लख आनंद नगर धन धाम तिहारी ॥ तब कीरति
कर जोरि कर करन लगी मनुहार ॥ भोजन पूजा
लीजिये इच्छा मन उरधार ॥

कही सो हम करें

हम नंही नांही करें भोजन कूं कभी नाहिं ॥ कंद
मूल फल खायं फिरि बन बिकटन के मांहिं ॥ ज-
गत छांडि जोगी भये नगर बगर नहिं जायं ॥ संग न
काहू को करें सदां रहे बन माहिं ॥

नाहिं कछु कामना

जब जोगी करि जुगति जोगमाया फैलाई ॥ लगी न
गर में आगि बरत अर तीनि दिखाई ॥ डगर बगर जर
ते लखे तब भागे भहराय ॥ इतने ही में सामरी मि-
ली सखिन में जाय ॥

जोग कूं छांडिके

नगर निकट जब गयीं कहूं जहां अगिन न पानी ॥ मा

यारूपी अग्निजोगबलजा की जानी ॥ उलटिचली
नब बागकूं तहांन वह अवधूत ॥ जोपीहोसोरस
गयौ आसन रही वभूत ॥

भरम की बासना

वे अपने घरगयी उलटि वे घरघर आई ॥ बहुरंगीगो
पाल ख्याल ब्रजबाल खिलाई ॥ बरसाने नंदगाम
के निकट सघन संकेत ॥ पीतम प्यारी हेत को निपट
निमानों खेत ॥

कामतरकेलकी

कपटरूप करि किती भांति वहभेष बनावें ॥ गोपीगो
पशुपाल कूं नित ख्याल खिलावें ॥ रूपशिरोमणि
राधिका रसिकशिरोमणि स्याम ॥ बसत उदय उरपै
सदां करि संकेत सुधाम ॥

स्यामस्यामा सहज ॥

इति श्रीजोगलीला

समाप्तम्

कवित्त

सींगी और सेली अलबेली जटा जूट सिर फेली मृग छाला लखि रूप सरसायो है ॥ नाद कूं बजाय के रिझाये सब जीव जन्तु अलख कूं जगाय सून्य आसन जमायो है ॥ जोगी अनूप रूप काम कौ स्वरूप सजि मानों अनंग रंग अंग अंग छायो है ॥ कहैं रंगीलाल आज चलिये वृषभान सुता भूप के बगीचा अवधूत एक आयो है

अथ श्रीरास पंचाध्यायी लिख्यते

दोहा

वृंदाबन बंसी बजी मोहे तीनों लोक ॥
वे तीनों मोहे नहीं बसे कौन से लोक ॥
अहो बांस की बांसरी तें तप कीनों कौन।
अधर सुधा पिय को पिये हम तरफत निशि भौन
अरी क्षमा करि मुरलिया परें तिहारे पाय।
और सुखी सुनि होत सब महा दुखी हम हाय
कह्यौ न करि है क्यों नहीं पिय सुहाग को राज

अहो बावरी बांसुरी मुहं लागी मति गाज
तब कारण गृह सुख तज्यौ सह्यौ जगत कौ वैर
हम सों तुम सों मुरलिया कौन जन्म कौ वैर
यह अभिमानी मुरलिया करी सुहागिनि स्याम
अरी चलाये सबन तें भले चाम के दाम ॥

पद

शरद निशा उजियारी। बन में ठढ़े कुंजबिहारी॥ मुरली मधुर बजाई। ब्रजबधू सुनत उठि धाई॥ टार॥ सुनत ब्रजबधू जुरि जु धाई भवन कारज सब तजे॥ भई चित अति काम आतुर उलटि अभरण अंग सजे॥ एक लोचन दियौ अंजन एक आंजत ही चली॥ कमल मुख हरि दरस प्यासी प्रीति मन उपजी भली॥ नंदनंदन चरण परसत मुदित गोकुल नारियां॥ आय सन्मुख रहीं गड़ीं शरद निशि उजेयारियां

पद

ब्रज नारि सबै जुरि आईं। देखन यादवपति माईं॥ सुंदर नहिं त्रिभुवन कोई॥ सो हरि कोटि मदन जो-

सोई ॥ जाके मस्तक मुकुट बिराजै ॥ देखत अँधियारी भाजै ॥ दोउ कुंडल झलकें काना ॥ उदये रवि कोटिक भाना ॥ जाके कंठ बनी बनमाला ॥ पहरत पट पीत गोपाला ॥ वाके अंगुरी मुद्रिका सोहै ॥ हरि उपमा को नहिं को है ॥ नटवर बेष धर्यो यदुराई ॥ व्रज सुंदरि देखन आई ॥ हरि ढिंग देखीं ब्रजबाला ॥ तिन सों बोले मदन गोपाला ॥ इत अर्द्ध रैनि क्यों आई ॥ यह तो निंद वेद विधि गाई ॥ टेर ॥ निंद्य या विधि वेद गावें कुलबधू पति को तजे ॥ लोग कहत अलक्ष लागे परपुरुष पति नीं भजे ॥ तुम जाउ भामिनि उलटि घर अब युगति नहिं इन बातियां ॥ पति तिहारे पंथ जोवें यास युग गईं रातियां ॥ कुलबधू ये धर्म नाहीं कहत स्यामतमाल जू ॥ निठुर बचन गुपाल बोले देखि ढिंग ब्रजबाल जू ॥

पद

ग्रह जाउ सबै ब्रजनारी ॥ तुम मानों सीख हमारी ॥ तुम बेद बिरुध बिधि कीनी ॥ निज पतिहिं अनादर की

नों ॥ सब वेदकर्म गिरिधारी ॥ भजे एक पुरुष एक ना
री ॥ सुनि गोविंद मुख की बानी ॥ तब घोष तरुणि बि
लखानी ॥ दीन बचन कहैं ग्वारी ॥ यह तो युक्ति नहीं
बनवारी ॥ दार ॥ बनबिहारी युक्ति नाहीं निठुर बच
नन बोलिवौ ॥ सुरत नाय जु कंठ भुज धरि कृष्ण हम
तुम खेलिवौ ॥ हम छांडि सुतपति विपिन आईं आ
स तुम लगि लाड़िले ॥ हम जाहिं अब घर उलटि कै-
से प्राण तजि दधि दानियां ॥ दीनबचन ग्वालिनि बो-
लीं सुनि मुख गोबिंद बानियां

इति श्रीरासपंचाध्यायी

समाप्तम्

अथ श्रीउराहनो लीला

लिख्यते

रेखता

सुनि लै यशोदा रानी तू लाल की बडाई ॥ सब लोक
लाज यानें जमुना में धो बहाई ॥ भोरेही में गयी जो
जल भरिबे काज भयना ॥ पीछें सों आ अचानक उ-

न मूंदे मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाय कोई तब बोले टे
ढे बैना ॥ हों तो रही अकेली वा संग ग्वाल सैना ॥ त-
ब सब नें हो हो करि कें तारी मेरी बजाई ॥ सुनि० ॥
हंसि २ कें छैल मोसों करिवे लगौ ठठोली ॥ यह छ
बि तिहारे मुख की अब कासों जावे तोली ॥ निरखे
कबू बदन कों कबहू चहू छूवै चोली ॥ मैं तो सकुच
की मारी वासों कछु न बोली ॥ पुनि बहियां मेरी झट
की गागरि धरनि गिराई ॥ सुनिलै यशोदा माई० ॥
अंगिया के बंद तोरे चूनरि झड़ाक फारी ॥ दुलरी के
निरखिवे कों गल बहियां मेरे डारी ॥ यह सब कु
चाल देखे मग ठाडे पुरुष नारी ॥ ताहू पै नाम मेरो
लेकर सुनावे गारी ॥ गुरुजन में मेरी वानें या वि-
धि करी हंसाई ॥ सुनि० ॥ ज्यों २ कहूं मैं हट रे त्यों
त्यों वो दूनों अटके ॥ मुसिक्यावे दृग मिलावे भृकु
टी चलावे मटके ॥ करि २ के सैना बैनी तन पर से चीर
झटके ॥ अब और का कहूं मैं गलहार है कें लटके ॥
इक संग वानें ऐसी पकरी निलज्जताई ॥ सुनि० ॥
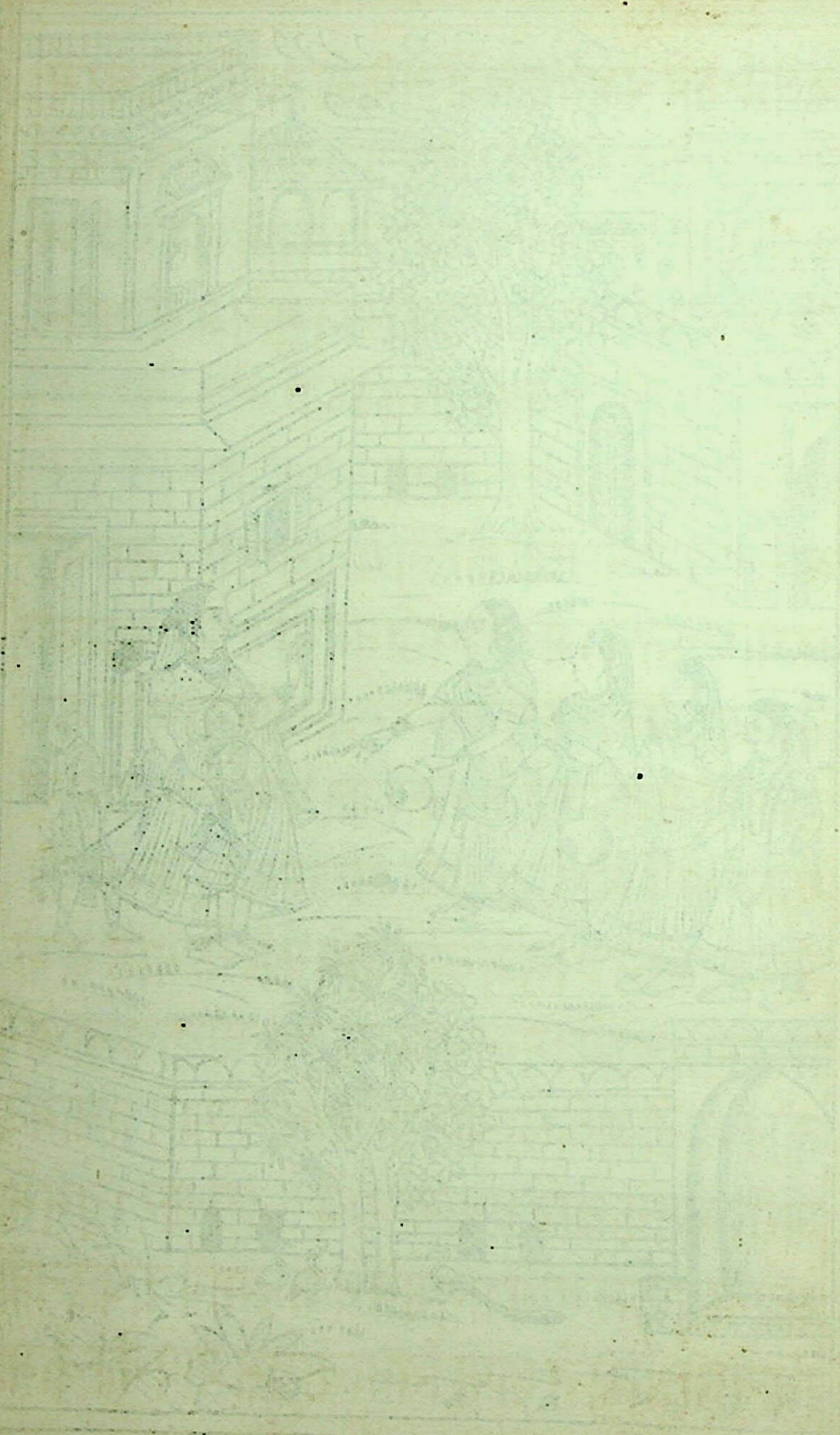
कबहूं कहे बतारी तू क्यों अकेली आई ॥ के घर में तेरे पति कीनो सों भई लराई ॥ तू चलि भवन हमारे करि मोसों मित्रताई ॥ विधिना नें तेरी मेरी जोरी भली बनाई ॥ नारायण वाकी बातें सुनि कें में अतिल जाई ॥ सुनि० ॥

तथा

सुनिये यशोदा रानी अरजी यही हमारी ॥ हम छांडि जायं ब्रज को मरजी यही तुमारी ॥ नित घाटवाट नटखट जेहरि झटाक पटके ॥ बहियां मरोरे झटपट छाती सों हार झटके ॥ कर को पकरि कन्हाई घूंघट संभारि खोले ॥ ठोड़ी सों कर लगा के रस की सी बात बोले ॥ निज दृष्टि बान करि कें भोहें कमान तानें ॥ चोरी सिवाय रस के अरु वो कछू ना जानें कोई सखी अकेली यदि घर बगर नें आवे ॥ कसके शरीर मसकें चोटें दया न लावे ॥ हम बार २ तुमसों करती पुकार हारी ॥ तुमने दया हमारी कबहूं नहीं बिचारी ॥ कीजे कृपा सितावी हम गोप की कुमा

री ॥ दीजे निकासि देखूं कैसो रसिक बिहारी ॥ ७

पद

सखिन सहित नचत कृष्ण गोपी ॥ टेक ॥ छुमछुम छुमछुम छननननन तंबूरा मंजीरा बीना झांझ मुहचंग बाजै ॥ अबीर उडावें गावें रागरंग मृदंग ठुमकत ठूम ठननननन ॥ सारंगी सारस अरु खंजरी बाजै मधुर २ रबिनंदिनी कौ नीर बाजै ॥ चलत पवन सुम सररररर भौंरा उडत भूम भननननन ॥ पनघट अंगना की सुरति बिसारी आये सब पक्षी पवन चक्रत भये ॥ बांसुरी बजाय ब्रजनारी सब मोहि लई घुंघुरू करत घूम घननन नन ॥ राधा देती तारी ताल मोगरा चमेली की गुलाब सेवती की माल कहत सेली वालो लालदास कृष्णपद पायल बजत छूम छननन नन

इति
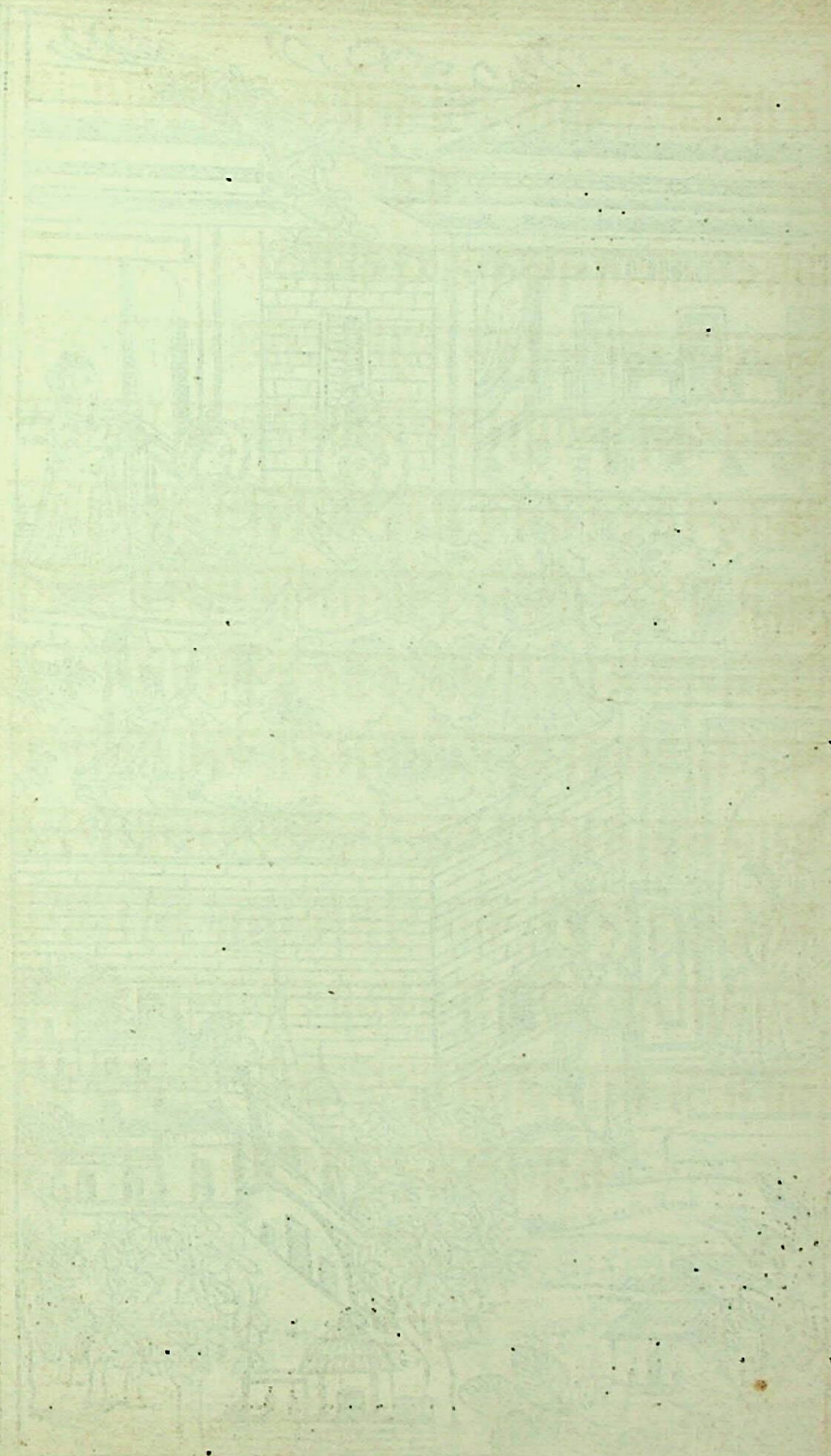
अथश्रीवैद्यलीला

प्रारम्भ

सोरठ धनाश्री

ले है भागभरी कोउ नगर में मेरे जड़ी मोहनी पास
बैठी नारी बैद की चाहों कियो गुणन प्रकास ॥ कै
यहि पुर तू बासिनी है काहू की अभिलाख ॥ बड़े
गुनन की औषधी भरी गोरी मेरी काख ॥ जो प्रती
ति आवै नहीं तौ तू जानि निहारि ॥ इतउत भलो
जु मानि है करवावै जहां चिन्हारि ॥ खबरि बेगि
करि राजघर री बचन न मेरो डारि ॥ हों तुव मारग
हेरिहों बैठी मानसरोवरि पारि ॥ पीयप्यारी जु प्र
यो तू है सो मोकों आदर देहु ॥ यंत्रमंत्र अरु औ
षधी नानाबिधि की लेहु ॥ डिबिया नानारंग की
भरी औषधि संग अनेक ॥ भामिनि दई दिखाय
कें अब तू काहियो धरि टेक ॥ कहा तुमारो देस ब
लि कहा तुमारो नाम ॥ कहा औषधि कहा मोल
है अरु कहां तुमारो धाम ॥ अनुरागी मंडल बसों

चटकीली नाम बिशाल ॥ गुण औषधि की मोल है
तुम सुनों बिलक्षण बाल

रेखता

स्यामा चलौ बिपिन में अद्भुत बहार है ॥ छाई घटा गगनबिच शोभा अपार है ॥ इन्द्र के धनुष दामि-नि छबि बेशुमार है ॥ प्रफुलित कदंब खड़े हैं भौंरा गुंजार है ॥ स्यामा० ॥ रंग २ के बोलें पक्षी दादुर चि कार हैं ॥ कीडे करत कलोलें यमुना की धार है ॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या खुशबूदार है ॥ झोंकन चलें समीरें द्रुम लचति डार हैं ॥ स्यामा० ॥ फैली है बेलि इतउत सबज़ी बहार है ॥ नांचत हैं मोर मद में मृग नी बिहार है ॥ चंचल जो कोयल डोलें पिउ २ पुका र है ॥ स्यामा के स्याम प्रिया संग चलना बिचार है

स्यामा० ॥

इति श्रीबैद्यलीला

समाप्तम
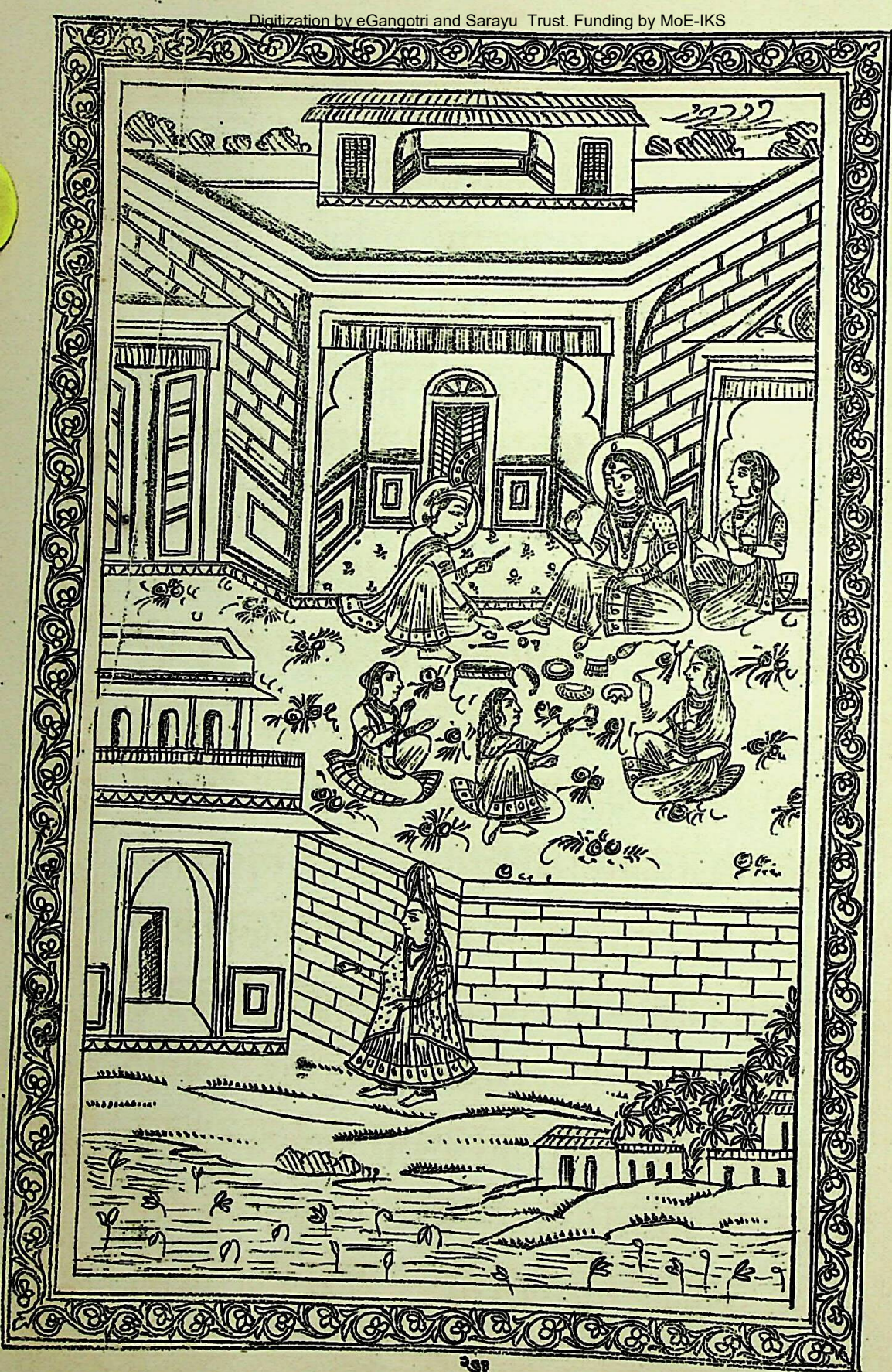
अथ सुनारिन लीला

प्रारम्भ

तन सांवरी सुघर सुनारी ॥ रतनजटित के बिछिया लाई नाद परम रुचि कारी ॥ टेक ॥ इनको शब्दजु परैगौ पीतम के जब कान ॥ मन कों खैंचिजु लाइहै इनमें सुयंत्र बलवान ॥ बड़े नगर हीं बसति हीं मेमें बड़ौ गुमान ॥ राज भवनही बेचि हों जहां बड़ौ पाय हों मान ॥ सबही सों यों कहति हों बैठी पनघट बाट ये बिछिया सो लेयगी बिधि जंचो रच्यौ लिलाट ॥ बूझति हैं ब्रजबाम सब कहा तोपै साज ॥ बेचै क्यों न बजार में कहा मारग रच्यौ समाज ॥ बस्तु बजारु नाहिं यह बिन समझे बतरात ॥ गहने रतन जड़ाव के सखि भूपन भवन बिकात ॥ हमहूं तौ देखें इन्हें री सांवल गात ॥ बैठी चौरें चौहटें तू कहति बड़ी २ बात ॥ कारे नरनारी जिते सबै भरे छल जान ॥ इनकी बात पतीजिये तो पीछें हो पतियान ॥ कारे बरसे मेह बिना जग में कछू न होय ॥ कारो ढोटा नंद को

ताहिन बेचे कोय ॥ है वाही कौ मिलनियां वाही की उनहार ॥ वा लंगर ते को नवै तू फिरि काहि बात बिचार ॥ सजन समारथ हित नवैं नवै न नांते राज ॥ जटिज्ञा ह्यां ते घर बसी कहा बहुत करत गंवाज ॥ गलवा ज्यों बंसी करति मवन बिलोवत हीय ॥ क्यों घर तजि वनजात है कोऊ धीरज धराति न तीय ॥ निबल जानि मोसों अरति सबल नचावत नांच ॥ दुर्बल कौ घाती दई यह कहत बिबेकी सांच ॥ मानसरोवर हंस को जात सखिन के टोल ॥ भीर देखि अहुटी सबै सुनि भामिनि के बोल ॥ व्योपारिनि कौ स्वांग सो है कोऊ बड़ी कुलीन ॥ संग हमारे लगि चलौ का बाट माहिं है दीन ॥ ले चलें प्यारी महल में जहां कछू भय नाहिं ॥ बस्तु बिकाती लैयेंगी तू जिन डरपै मन माहिं ॥ श्रीहरिबंश प्रताप बल बरणी बिबिध प्रलाग ॥ वृंदाबन हित बार नें सुख भीने जुगल समाज

इति श्रीसुनारिन लीला समाप्तम

अथ श्रीचीरलीला
लिख्यते

मेरी आज लाज गई सारी। लैगयौ चीर बनवारी
मृगनैनि मनोहर गोरी। मानों जल कमल खिलो
री॥ मुखचंद्र कहै करजोरी॥ लागे स्याम करन
अब चोरी

छंद

चतुरसखी गुलबदन मदन मोहन को समझाती
चढ़े कदम ले चीर जरा ना तुम्हें शरम आती
हम नंगी हैरान हकीक़त कही नहीं जाती
ये हरदम की तकरार तुमारी हमें नहीं भाती

रेखता

करौ हैरान आन हमको· वफा क्या है इसमें तुम·
को॥ मैं देहों लाखनहीं गारी। लैगयौ चीर बनवा
री॥ हरि कहै सखी सुनि जावौ। तुम निकट कदंब
के आवौ॥ गुलबदन हमें दिखलावौ॥ लै चीर
चलौ घरजावौ

छंद

सुनों नंद फरजंद कान्ह करते हो नादानी
गयी लाज मर्याद आज बिलकुल हमने जानी
क्यों हम से बेवफ़ा करी हरदफ़ा छेड़खानी
क्या हमरी तकसीर चीर दे होती हैरानी ॥

रेखता

स्याम सुन इतनी अरज मेरी । तेरे मैं चरणन की चेरी
मैं मरी लाज की मारी । लैगयो चीर बनवारी ॥ सखी
तुम्हें लाज है भारी । एक मानों बात हमारी ॥ सखिआ
गे हाथ पिछारी । ले जाओ चीर ब्रजनारी ॥ ७ ॥ ७

छंद

सुन मोहन का सखुन निकल जल से सारी सखियां
गैरतमंद होगयीं किये नीचे अपनी अखियां
दिये चीर गोपाल गरज करके कमाल बतियां
माहताब पट पहर लगी मनमोहन की छतियां

रेखता

किनारे जमुना के कामिन ॥ मिसालें दमक रहीं दामिन

मानों रवि किरन पसारी। लेगयौ चीर बनवारी। मिल सकल सखी पनघट की। वृंदाबन बंसीबट की पट पलट पलट घूंघट की। छबि निरखें नागरनट की।

छंद

कमलापति बरदान दिया गोपिन को समझाया
जो तुमने तप किया बखूबी उसका फल पाया
मदनमनोहर सखुन परमसुख सब के मन भाया
लेखराज सुत सुभग कृष्णलीला में गुणगाया

रेखता

करी बंदिश गणेश आला। कृपा करिहैं नंद के लाला हरिचरण कमल बलिहारी। लेगयौ चीर बनवारी।

इति श्रीचीरलीला

समाप्त

अथ श्रीदधिलीला

प्रारम्भ

रेखता

मेरी लूटि २ दधि खाई। हटकौ मनमोहन माई। मैं

गयी आज दधि बेचन। माई बंसीबट वृंदाबन। मेरोनि
कट आय मनमोहन। लागे बहियां पकर झकोरन

छंद

कहा खूब कितना समझाया नैमानी हट की
चीरफार चोली मसकाई पकरि बांह झटकी
ग्वालबाल आगये मेरी पट खोली घूंघट की
लिपटालिपट के उछल २ के फोरदई मटकी

रेखता

ज़िकर ये है बंसीबट की। हकीकत सुन नागर नट की
मोसों नयी २ रार मचाई। हटको मनमोहन माई। है ब
डो ढीट बनवारी। मोहि डगर चलत दीनी गारी। कर प
कर चूनरी फारी। माई टूटो हार हजारी॥

छंद

नंदगाम वृंदाबन गोकुल सुरू रोज आना
बाट पड़ा मोहन के माखन लूट २ खाना
रोकै मेरी गैल छैल अपने को समझाना
है हाकिम जल्लाद भूल जावेगा इठलाना

कंस की कठिन अमलदारी। सजा होगी उनको भारी। वह लेगा पकरि बुलाई। हटकौ मनमोहन माई। घर गये कृष्ण सैलानी। कर पकरि कहैं नंद रानी। होगये ढीठ हम जानी। दधि लूटि लड़ाईगनी

छंद

सुन माई का माखन कृष्ण क्या कहते समझाई
हैं ग्वालिनी गंवार फिरें बनबन में बौराई।
रपट पड़ीं गिरपड़ीं दिया माई माखन फैलाई
झूंठ मेरा नाम लगावन मेरे घर आई॥ ७॥

मेरे घर लाखों मन माखन। गया मैं कब उसका चाखन। ये ग्वालिन होगी इतराई। हटकौ मनमोहन माई। कोई होगा औरही लुटवैया। मेरो नाम लगावैरी दैया। सुनि भोरे बचन कन्हैया। मुसिकानी यशोमति मैया॥

छंद

मोरमुकट मकराकृत कुंडल बैजंतीमाला
नंदनंदन पदनिरखिपड़ीं चरणों में ब्रजबाला

देनें लगीं असीस जियो माई तेरो नंद लाला
लेखराज फरजंद छंद यह सांचे में ढाला
वतन है शहर फ़र्रुखाबाद। करी बंदिश गणेश प-
रशाद। हरिचरण भक्ति जिन पाई। इट को मनमोहन
माई

इति श्रीदधि लीला
समाप्तम्
अथ श्रीबेनीगूंथन लीला
प्रारम्भ ॥

राग कल्यान

बैनी गूंथि कहा कोई जानें मेरीसी तेरी सों राधे ॥ बि
चबिच फूल श्वेत पित राते को गुंदि सके तेरी सों राधे।
बैठे रसिक संवारन बारन कोमल कर कंगही सों साधे
हरिदास के स्वामी स्यामा नखसिख लों बनाई है का
जर नख ही सों आधे ॥

दादरा

प्यारी को सिंगार करत नंद लाला। बार२ में मोतीपो

ये कनबिच झलके बाला। कली दौर जरी कौ लहंगा ऊपर सुरंग दुसाला॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निरखत ब्रजबाला

गौरी

तेरौ मुख नीकौ के मेरौ राधा प्यारी। दर्पण हाथ लियौ नंदनंदन सांची कहौ वृषभान दुलारी। हम काके हैं तुमहीं क्यों ना देखौ मैं गोरी तुम स्याम बिहारी॥ हमरौ बदन ज्यों चंदा की उजारी तुमरौ बदन जैसें रैनि अंधियारी॥ तिहारे सीस पर मुकट बिराजै हमरे सीस पर तुम गिरधारी। चंद्रसखी भजि बालकृष्ण छबि दोउ ओर प्रीति बढ़ी अति भारी॥

बिहागा

बेसरि कौन की अति नीकी। होड़ परी लालन अरु ललना चौंप पड़ी अति जी की। न्याव पर्यौ ललिता के आगे कौन ललित को फीकी॥ दामोदर हित बिलग न मानों झुकन झुकी प्यारी जी की

॥७॥

स्यामकल्याण

राधाप्यारी रूपउजारी मोतन नेक हेरौ मेरी प्यारी । तनमनधन छबि ऊपर वारौं नाम उचारूं मैं तेरौ । इंसि मुसिकाय बदन तन हेरौ मोहि करौ चरणन कौ चेरौ । अली किशोरी एक बार कहौ लाल बिहारी मेरौ ॥

खेमटा

तू है मुखचंद्र चकोर मेरे नैना । पलहू न लागे पलक बिन देखें भूलिगये गति पलहू लगैं ना । हर्बरात मिलिबे कौ निशिदिन ऐसे मिलें मानौं कबहू मिले ना । भगवत रसिक रस की यह बातें रसिक बिना कोई समझि सकै ना ॥

खेमटा

तू है मुख कमल नयन अलि मेरे । अति आरत अनुरागी लंपट बर्बरात इत फिरत न फेरे । पान करत मकरंद रूपरस भूलि नहीं फिरि इतउत हेरे । भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे

खेमटा

प्रीतम तुम मो दृगन बसत हो। कहा भोरेसे ह्वै पूछ
तहो कै चतुराई कर रञ्जो हंसत हो। लीजे परखि
स्वरूप आपनों पुतरिन में तुमही जो लसत हो॥
वृंदाबन हित रूप रसिक तुम कुंज लड़ावत हिय
हुलसत हो॥

जंगला

चैन नहीं दिनरैन परै जबते तुम नयनन नेक नि-
हारे॥ काज बिसारि दिये घर के व्रजराज मैं लाज
समाज बिसारे॥ मो बिनती मनमोहन मानियेमो
सों कहूं जिन होजियो न्यारे॥ मोहि सदा चित सों
अति चाहियो नीके कै नेह निबा
हियो प्यारे

इति श्रीबेनी गूंथन ली०
समाप्तम्

अथ श्रीबिरह लीला भ्रमरगीत
प्रारम्भ

प्रीतम परदेसी भये कौन बिधि जीजे ॥ बिन स्याम चैन नहीं पड़े सखी क्या कीजे ॥ उस मोरमुकट की लटक में दिल अटका है ॥ निर्दयी छोड़ हमको बिदेश सटका है ॥ दिनरात लगा रहता यही खटका है ॥ होगया तौर औरही नागर नट का है ॥ इस सोच में निसदिन देह हमारी छीजे ॥ बिन स्याम चैन न० ॥ उस निर्मोही को ज़रा तरस नहीं आया ॥ तज हमें सौत कुबरी से नेह लगाया ॥ जानें क्या उस ठगनी ने जाल फैलाया ॥ बस किया हरी को ऐसा मंत्र पढ़ाया ॥ ऐसी जी में आवै है घोल बिष पीजे ॥ बिन स्याम० ॥ कहां जायं करें कैसी कौन से बोलें ॥ किस के आगे सब घुमड़ चित्त का खोलें ॥ प्यारे अपने को किस - जाजाय टटोलें ॥ इस फ़िक्र में ब्याकुल भई गलिन में डोलें ॥ नित रोय २ असुवन से परिया भीजे ॥ बि० ॥ कब सखी हमारे दिन ऐसे आवेंगे ॥ वो हमें लालजी दरसन दिखलावेंगे ॥ चित चोर बांसुरी बजा के जब गावेंगे ॥ यह दुःख हमारे उसदिन सब जावेंगे ॥ अ-

ब तो भीतर से उबल कलेजा सीजै ॥ बिन स्याम चैन नहीं पड़े सखी क्या कीजै ॥

सुनि के बिनती सखियों की समलिया प्यारा ॥ गोपि यों से मिलने ब्रज की ओर सिधारा ॥ दे दरशन ब्रज ब नितन का कष्ट निवारा ॥ ये हाल मेरे उस्ताद ने जाना सारा ॥ महाराज मनोहर को भी दरसन दीजे ॥ बिन स्याम चैन नहीं पड़ै सखी क्या कीजै

बारहमासी बिरहनी

सखी इक सखी से बतरावै ॥ सुरति मोहि मोहन की आवै ॥ लग्यौ आषाढ़ मेरी आली ॥ उठी घुटि घुमड़ि घटा काली ॥ बसे परदेसन बनमाली ॥ उमरि मेरी छोड़ि कर बाली

दोहा

बरसत नीर सुहावनों गरजत बादर बीर ॥
बन बिच हरियाली भई सीतल चलत समीर

धीर दई कौन बंधवावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै सुहावै कौन विधि सामन ॥ नहीं घर बीच मनभामन

चमकती ज़ोर कर दामिन ॥ लगी दुख और दिख
लावन

दोहा

इक दुख बिछुरन पीय को दूजे तीज त्योहार
झूला झूलें कौन संग का पर करें सिंगार
पपैया बोलि तरसावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै
झुकी भादों की अंधियारी ॥ झड़ी लागी बड़ी भारी ॥
कहां प्यारा कहां प्यारी ॥ कहां बातें गयीं सारी ॥

दोहा

सुनि कोकिल की कूक कूं तन सूखत दिनरात
बूंद बान बरछी लगे यह दुख सह्यो न जात
बिना हरि जीव घबरावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आ
वै ॥ लगी अब क्वार आकर के ॥ रहूं कब तक बिप
ति भर के ॥ जवानी जात सब ढर के ॥ मरूं नित ध्या
न धर धर के ॥

दोहा

नवदुर्गा पूजें सखी जिनके घर भरतार
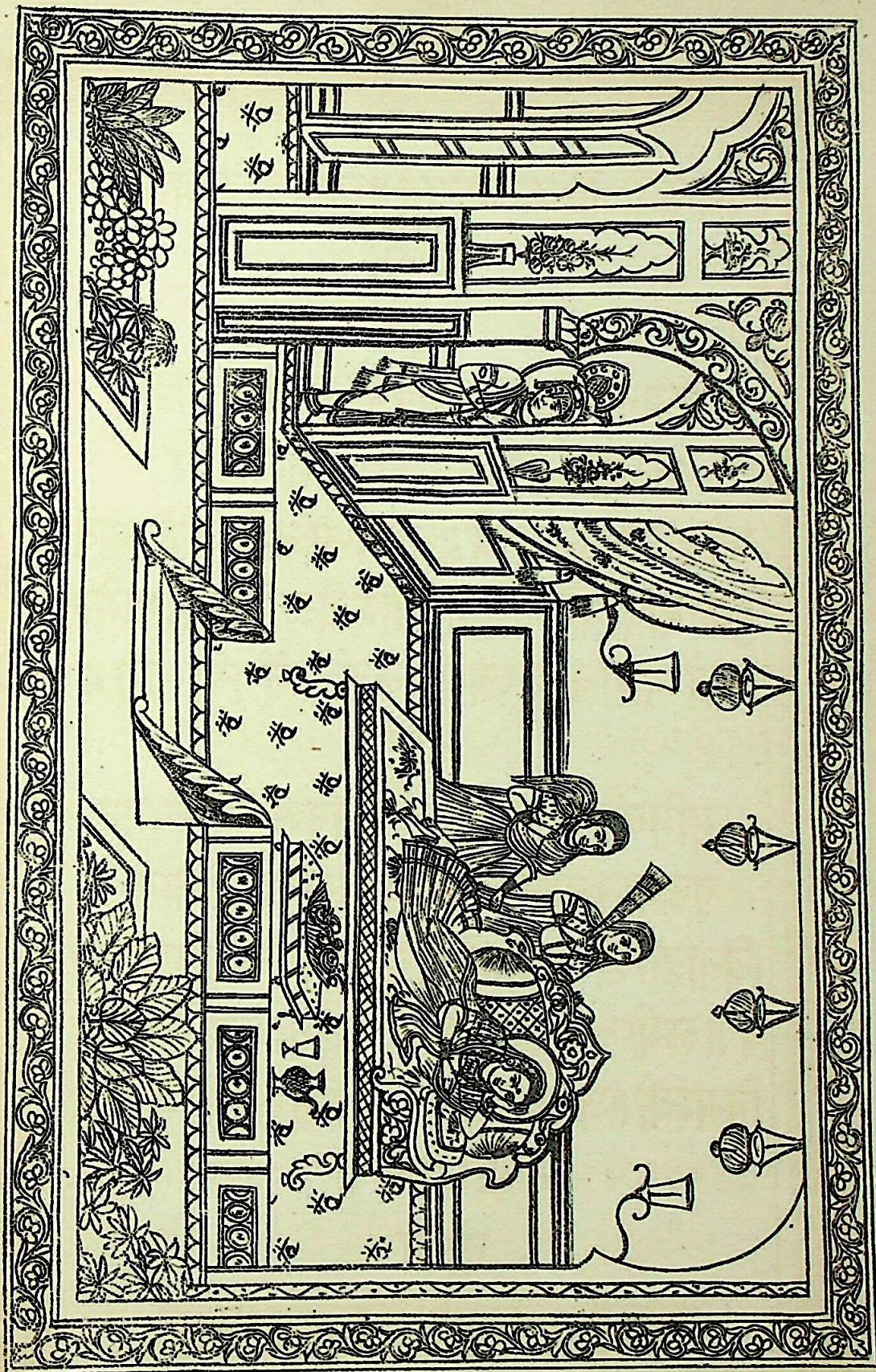
धरूं दसहरा कौन पर मैं कुलवंती नार ॥
न कछु दिल की कही जावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आ
वै ॥ न कातिक में खबर लीनी ॥ मेरे प्यारे ये क्या की
नी ॥ दया ना दीन की चीनी ॥ उदासी और करि दीनी

दोहा

दिना दिवाली का भला घर घर दीपक दान
हमरे घर अंधियार है बिन पीय चतुर सुजान
न भाई दूज मन भावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै
लगा अगहन आज बसे ॥ हुआ पीला बदन तब से
कहा दुख जात ना सब से ॥ रहूं बिन कंथ किस ढ
बसे ॥

दोहा

सीरी सहे न ब्यार अब थर थर कांपै अंग
दिन २ सरदी परति अति मारि २ उठत तरंग
कठिनता कौन लखि पावै ॥ सुरति मोहि स्याम की
आवै ॥ परत अति पूस में पाला ॥ गमन नहीं लात
नंदलाला ॥ बनूं जोगन जपूं माला ॥ लऊं तन ओ

दमृगछाला

दोहा

धर धूनी मोनी बनूं कभी कहै यह चित्त।
कभी कहै बन २ फिरूं विचरत डोलूं नित्त

सहा जाड़ा नहीं जावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै॥
माह में सीत मारे है ॥ सुखाये सीत डारे है ॥ न कुछ
प्यारा बिचारे है ॥ नया जोवन उजारे है ॥

दोहा

मौरे विबिधि रसाल फल फूले बन में आम
चरचा होत बसंत की घरघर आठों जाम॥

उन्हें यह कौन समझावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै
लगा फागुन मची होरी॥ बजत डफ ढोल चहुं ओरी
खबर ना लेत हरि मोरी ॥ मिलन की लगि रही डोरी

दोहा

मैं तलफत जिय दिन यहां वहां कुबरी के चैन
किस बैरिनि से जायकर लगे पिया के नैन

उन्हैं ह्यां बोलि को लावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै

महीना चैत दुखदाई ॥ न पाती कंथ की आई ॥ कहा मन कूबरी भाई ॥ तजो ब्रज द्वारका छाई ॥

दोहा

नैनन में उनके सखी जरा रही नहीं लाज।
सीतल मंद सुगंधि को तजि बैठे महाराज

सभी सुख कूबरी पावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवै
लगाया सारव में खटका ॥ दिखाया धूप ने चटका ॥
फिरेजी जाल में भटका ॥ दिखा गरमी रही लटका

दोहा

ब्याकुल हो दुनियां रही देखि मेरा यह ढंग
वो निर्मोही रम रहे उस बैरिन के संग ॥

यहां जी जान अकुलावे ॥ सुरति मोहि स्याम की आवे
जलन जो जेठ में करती ॥ तपे आकाश और धरती ॥ बिरहनी सोच में मरती ॥ नज्वानी नेक दम भरती

दोहा

दिल तड़पे बिन कंथ के कहां गये प्यारे प्रान
गरमी गर्दन मारती बचै कौन बिधि जान

आन के कौन समझावे ॥ सुरति मोहि स्याम की आवे।
महीना लौंद का आया ॥ अधिक लोगों ने ठहराया ॥
सभी सखियों में गम छाया ॥ वहां हरि ने समा पाया।

दोहा

मिले आनि इक राक से हरि नँदनंदन ब्रजचंद।
ब्रजबनिता मन अति मगन कटे सबन के फंद
मनोहर कृष्ण यश गावै ॥ सुरति मोहि स्याम की आवे

इति श्री बिरहनी लीला

समाप्तम

अथ श्री मग रोकन लीला

प्रारम्भ

सखाजी बचन

दोहा

प्रात समें ब्रज नागरी सजि सोलह सिंगार।
गोरस बेचन को चलीं गजगामिनि सुकमार
मग में ठढ़ो सांवरो रोकि सबन की गैल ॥
रूपसिंधु अरबिंद दृग रसिक शिरोमणि छैल

सखीवचन

तिताला

जिन मग रोको नंदकिशोर ॥ टेक ॥ तोहि उरझन की बानि परी है सांझ तकत नहिं भोर ॥ देर लगत मोहि म मरै सावै तुम्हें छैल नित रार सुहावै· इन कुचाल क छुडाय न आवै· गागरिया दई फोर ॥ तुम अति चंच· लढीठ बिहारी· कैसे कोरिव रहे महतारी· यह हमकूं अचरज है भारी· घर २ तेरो शोर ॥ नारायण अब को इतरावौ· भई सो भई ना बात बढावौ· ताही कूं तुम आंखि दिखावौ· जोड़ो तुमरी बंदोर

दादरा

गैल जिन रोको जोबन मदमाते ॥ टेक ॥ इन बातन शोभा नहि पावौ लाज भरी गारी गाते ॥ तुम जानत ह म सों यह डरपत तासों बहुत इतराते ॥ नारायण इ मया सोंन बोलें मानि कें जाति के नाते

कालिंगड़ा

मारग दीजे मोहन प्यारे ॥ टेक ॥ इन बातन शोभा न

हि पावौ तुम हो राज दुलारे ॥ बहुत हंसी जिन करो सांवरे सुनि हैं कंथ हमारे ॥ तुमरो कोई कछु न करैगो हमें सुदेंगे तारे ॥ देखें सुनें नहीं हम कबहूं तुमसे झगरन हारे ॥ नारायण क्यों रारि बढ़ावौ द्वै बापन के बारे

लालजीबचन

ग्वालिनि दान देत हठिलावै ॥ टेक ॥ नितप्रति ही तू या मारग ह्वै क्यों दधि बेचन जावै ॥ हमें कहत तू द्वै बापन कौ अपने क्यों न गिनावै ॥ नारायण दे कौ टिक तातें कर नाहिं छुटने पावै ॥

मलार तिताला

योबन की मदमाती डोलैरी गुजरिया ॥ टेक ॥ अंग २ योबन की उठत तरंगें नये नयना कजरारे बर तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नक बेसरि कानन फूल मुंदरी ललित छबि देत अंगुरिया ॥ अबलों तोसी नाहिं देखी नारायण दधि की बेचन हारी नंद की नगरिया ॥

सखीबचन

कालिंगड़ा

लाल तुम काहे को इतरावौ ॥ टेक ॥ सोरपंख उ
रसे पगिया में यापै बड़े कहावौ ॥ जब ते प्रगट भ
ये तबही ते घर २ धूम मचावौ ॥ माखन छाछ चु
राय हमारी मिलि गोपन संग पावौ ॥ फटी पुरानी
कामरि ओढी बन २ धेनु चरावौ ॥ नारायण तुमको
न भरोसे राते गाल बजावौ ॥

लालजीबचन

ठुमरी खम्माच

आज तू नबेली दधि बेचन को आईरी ॥ टेक ॥
योबन की उमंग सों झूमत चलत गज मत्त हू की ग
ति ते लजाई री ॥ नैनन के बान भौंह तानि के कमा
न कहो कौन पै यह करी है चढ़ाई री ॥ रूप की नि
काई सुघराई नारायण कहां लग करूं मैं बड़ाईरी

सखीबचन

मनमोहन मोसों मति अटकौ ॥ झटको न चीर मट

कोन छैल दधि कीन गैल मटकी पटकौ ॥ टेक ॥
जैसे कछू तुम हौ सब जानूं· तुमरे गुण अब कहा ब
खानूं· तनक २ रस काज राजरस भवन २ निशिदि
न भटकौ ॥ तुम कब के ब्रज में भये दानी· रोकत हौ
मग नारि बिरानी· दधि गोरस की लूटि मचाई· तु-
म्हें न काहू कौ खटकौ ॥ नारायण अबहूं कही मा
नों· औरन की सम मोहि न जानों· निकसि जायगी
सब लँगराई· चलौ हयै घर को सटकौ

लालजीबचन

बरवा पीलू जिला

पहले मेरा दान चुकारी पीछे बतराइयो प्यारी ॥ टे०
तो समान तुही देत दिखाई· नव योवन नव सुंदर
ताई· और कहां लों कहौं बड़ाई· मोहन को मन
मोहन हारी ॥ अति बांके हैं नैन तिहारे· मान धरे पै
ने अनियारे· जिन हम से घायल करि डारे· इन स
मान नहिं बान कटारी ॥ नारायण जिन भीर लगावौ
देउ दान अपने घर जावौ· क्यों मटुकी चौपट गिर-

चावौ· देखि इँमेंगे पुर नरनारी ॥

सखीबचन

कालिंगड़ा

अपनी डगर चलीजा रे ब्रजबासी ॥ टेक ॥ मारग में सब लोग देखत हैं देखेंगे लोग करेंगे मेरी हांसी ॥ तुम ब्रजबासी अपनी गरज के नैना मिलाय गल डारि देउ फांसी ॥ पुरुषोत्तम हरि की छबि निरखत तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥

लालजीबचन

राग जिला

ठाडी रहो ठाडी रहो रूप की निधान ॥ टेक ॥ बरजोरी कित जावो दौरी बिना दिये दधि दान ॥ काहु भांति उपमा तुव छबि की करि नहीं सकत बखान ॥ घूंघट में मुख दमकत ऐसे ज्यों बादर में भान ॥ हम निज कर मांगत रिसात तुम भली नहीं यह बान ॥ नागरण तुम आजुहि आई नई भई पहंचान

७

सखीबचन

दादरा

प्यारे जिन मेरी बांह गहौ ॥ टेक ॥ मारग में सब लोग देखत हैं दूरी क्यों न रहौ ॥ मन में तुमरे कौन बात है सोई क्यों न कहौ ॥ कहिहौं जाय आज यशमति सों हमरी बाट रोकत हौ ॥ इतने में नाहिं मानत आनंद घन लडकाई तुम करत हौ

दादरा

छांड़ौ लंगर मेरी बहियां गहौ ना ॥ टेक ॥ मैं तो नारि पराये घर की मेरे भरोसे गोपाल रहौ ना ॥ जो तुम मेरी बहियां गहत हो नैना मिलाय मेरे प्राण हरौ ना ॥ वृंदावन की कुंज गलिन में रीति छोडि अनरीति चलो ना ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर चरण छोडि अब नैक टरौं ना

कालिंगड़ा

छांड़ौ मेरी गैल न तो गारी में सुनाऊंगी ॥ टेक ॥ औरन के भूले सों कहूं मोसों जिन अटकौ अभी यशमति

पै पकरि लै जाऊंगी ॥ पहलैंही सों अपनी बड़ाई क
हा करूं मैं देखियौ तो कैसे तुमें नांच नचाऊंगी ॥ जो
मैं तोहि सूधौ न बनाऊं नारायण तौ मैं निज बाप की
न आज सों कहाऊंगी

मलार

क्यों रे छैल मेरी मटुकिया पटकी ॥ टेक ॥ करिकें
ढिठाई मग दधि बिखराई · मव चूरी मुरकाई सुकु
मार बहियां रुटकी ॥ अबही यशोदा ढिंग पकरि लै
जाऊं तोहि राकन सुन्हूंगी तेरी बात नटखट की ॥ ब
दलौ लऊंगी न डरूंगी नारायण कौन सी गरज मेरी
तोसों अब अटकी

ललिताबचन

जोगिया आसावरी

हमारो न्याव करो महतारी ॥ टेक ॥ या ब्रज में अग
स्यो उत्पाती तेरो छैल बिहारी ॥ जो तुम सुत की ओ
र करोगी हमहूं हैं ब्रजनारी ॥ कबूं हमारी दाव लगे
गो समकेंगी गिरधारी ॥ तुम राजा अपने घर की हौ

हमें न कानि तिहारी ॥ इकगारी बदले नंदरानी ला
ख देयंगी गारी ॥ तुम नहि बरजति मनमोहन को
हम कहती नित हारी ॥ नारायण कछु जानि परत
है एक सलाह तिहारी

यशोदा बचन

कालिंगडा धीमाताल

मोहन तू इतनी कही मान ॥ टेक ॥ बाहर मति उरजे
काहू सों मेरे जीवन प्रान ॥ ब्रजबनिता तेरे गुण मो-
सों नितप्रति करत बखान ॥ मेरौ कह्यौ जो सांच न
मानें सुनि लै अपने कान ॥ इन बातन सों निंदा उ-
पजै ठकुरायत में हान ॥ नारायण सुत बड़े बाप के
तजि दै ऐसी बान

लालजी बचन

झंझोटी तिताला

मैया मोहि झूठेही दोष लगावै ॥ टेक ॥ बूझि लै मे-
रे सखा संग के जो तोहि सांच न आवै ॥ भवन रहों
तो तूही कहैगी गौचारन नहिं जावै ॥ जो जाऊं तो यह

मग छेडें फेरि उरहानों लावें ॥ त्रियाचरित्र रचें ढिग तेरे तोरि कें हार दिखावें ॥ तू जननी मेरी अतिभोरी याके कहे पतियावै ॥ कित गजराज कहां मृग छौना अनघट मेल मिलावें ॥ नारायण मोहनमुखबातें सुनियशुमति मुसिकावें

यशोदाबचन

मलार

देत उराहनों लाजन आई ॥ टेक ॥ मेरो लाल ब्रज भर में भोरो नैंक नहीं जानत चतुराई ॥ सुनि यशुमति के बचन हंसी सब निज २ भवन चलीं हरषाई ॥ नारायण लखि चरित स्याम के ब्रह्मादिक की मति बौराई

खम्माच तिताला

ग्वालिनि रूप के मद इतरावै ॥ टेक ॥ तू अति तरुण मेरो सुत बालक नाहक दोष लगावै ॥ तूही नई भई योबन बारी नैक लाज नहिं आवै ॥ नारायण अ

बजा घर अपने क्यों तू बात बनावै

इति श्रीमगरोकनलीला

समाप्तम्

फुटकरपद ॥

लिरव्यते

ध्रुपद

तेरोरी मुरवारविंद शरदचंद छबि निकंद ताहि स दां निररिववे कों सांवरो चकोर है ॥ तापर तू भृकुटी तानि बैठति नित मान ठान छांडत नहिं रिस की बान बड़ी तू कठोर है ॥ ता दिन तें सोंह रवाई अब नहीं रूठेंगी माई चाहें पिया प्यारे में औगुन करोर हैं ॥ ये सुनि मुसिकाय बाल अंक भरे नवल लाल नारायण ह रषि सरवी डारत तृण तोर हैं

गौरी कालिंगडा

मुसाफर रैनि रही थोरी ॥ जागि २ सुरव नींद त्यागि दे होत बस्तु की चोरी ॥ मंज़िल दूरि भूरि भवसागर मान कूर मति मोरी ॥ ललित किशोरी हाकिम सों

डर करे जेर बरजोरी ॥ मुसाफिर रैनि रही थोरी ॥ ७

देस

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है ॥ ॥ हमारी मात की करनी सकल दुनियां मे न्यारी है ॥ बिमुख जिन राम से कीना ऐसी जननी हमारी है ॥ लगी रघुबंश में अग्नी अबध मारी पजारी है भरत शिर लोट धरणी पै यही करता पुकारी है ॥ सुना जब तात का मरना मनों बर्छीसी मारी है ॥ परें व्याकुल हुए बेसुध दृगन से नीर जारी है ॥ घरू में ध्यान सूरत का मुरू तृष्णा जो भारी है ॥ परू रघुनाथ के पाऊं यही तुलसी बिचारी है

देस सोरठ

ललिता राधाय नैक समझाय दे ॥ मैं बलि जाऊं नाम तेरे पै दुख में सुख सरसाय दे ॥ ललिता० ॥ तू सजनी अति चतुर शिरोमणि मेरे मन की प्रीति जताय दे ॥ ललिता० ॥ व्यास स्वामिनी मत गुण गाति लै सरबस पिया को रिझाय दे ॥

भैरवी

मधुबन स्याम बुलावत रे ॥ लाल अधर मोहन के चहति हों कित मग कोन बतावत रे ॥ बंसी बाजी रुचिर मोहन की बरबस मनहिं नचावत रे ॥ विश्वरूप बहु जतन करत हों धीरज नेक न आवत रे ॥

भैरवी

बतावो मोहि स्याम गये केहि ओर ॥ स्याम २ रटि थकित भई अति नहीं मिले नंदकिशोर ॥ कच ते कुसुम झरत चहुं दिशि ते टूटी गल लर जोर ॥ बिकल भई सुधि सकल भुलानी मन अटको चितचोर ॥ मुरली टेर करत मुरलीधर आय गये तेहि ओर ॥ बिश्वरूप सखि, नेर रवि मगन भई जैसे चंद्र चकोर

रेखता

जगत है रैन का सपना· समझ मन कोई नहीं अपना ॥ कठिन है लोभ की धारा· बहा सब जात संसारा ॥ घड़ा जो नीर का फूटा· पात जो डार से छूटा ॥ ऐसी तू जान जिंदगानी· अजहुं मन चेत अभिमानी ॥ महल मत दे

रिव तन गोरा· जगत में जीवना थोरा ॥ तजो मन लोभ निठुराई· रहो निस्संक जग माहीं ॥ सजन परिवार सुत दारा· सभी उस वक्त है न्यारा ॥ निकल जब प्राण जावेंगे· नहीं कोई काम आवेंगे ॥ सदां मति जान यह देह लगा राधाकृष्ण से नेहा ॥ छुटे जमजाल का घेरा· क है गंगादास जन तेरा ॥

मलार

वृंदावनन भए इम मोर ॥ टेक ॥ करत बिहार गोवर्द्धनऊपर निरखत नंदकिशोर ॥ क्यों न भए बंसीकुल सजनी अधर पिवत घनघोर ॥ क्यों न भए कुंजन बनबेली रहत स्याम की ओर ॥ क्यों न भए मकराकृत कुंडल स्याम श्रवण झकझोर ॥ परमानंद दास को ठाकुर गोपिन को चितचोर

मलार

माई री आई घटा घनघोर ॥ टेक ॥ दादुर मोर पपीहा बोलें कोयल करि रही मोर ॥ चहुं ओर से उमडि घुमड़ि मेहा बरसे चहुं ओर

भजन

जा दिन मन पंछी उड़िजैहैं ॥ ता दिन तेरे तन तरवर के सभी पात झरि जैहैं ॥ टेक ॥ या देही को गर्ब न करिये स्यार काग अरु कुत्ता खैहैं ॥ तीन नाम तन विष्टा क्रम होय नातर खाक उड़ैहैं ॥ पड़ा रहे तो सड़ने लागे गीध आं-खधड़ से लै जैहैं ॥ कहां वह नैन कहां वो शोभा कहा रंगरूप दिखैहैं ॥ जिन लोगन सों नेह करत हो सो तोहि देखि घिनैहैं ॥ जिन पुत्रन को बहु प्रतिपाल्यौ देवीदेव मनैहैं ॥ तिह लै बांस दियौ खोपड़ी में सीस फाट बिखरैहैं ॥ घर के कहत सवेरौ काढ़ौ भूत होय घर खैहैं ॥ अजहूं मूढ़ करौ सतसंगति संगति में कछु पैहैं ॥ नरबपु धरि जो जन नहिं गुरु के जम के मारग जैहैं ॥ सूरदास सतसंग भजन बिन बिरथा जन्म गँवैहैं

भजन

हरिबिन मीत नहीं कोउ तेरो ॥ अरे मन तोसों पुकार कहत हों भजि गोपाल मानि कह्यौ मेरो ॥ भौसागर विषम विषसागर ते ते कहत सवेरो ॥ सूरदास अंतकाल

में कोई नहीं आवत है नेरो ॥ हरि० ॥

पद

हरि तुम काहे को प्रीति लगाई ॥ प्रीति लगाय परम दुख दीनों कैसी लाज न आई ॥ गोकुल छोडि के मथुरा पधारे या में कौन बड़ाई ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर तुम कूं नन्द दुहाई ॥

पद

भजो रे भैया राम गोविंद हरी ॥ टेक ॥ जप तप साधन कछु नहिं लागत खरच नाहिं गठरी ॥ संतन संगति सुख के कारन जासे भूल परी ॥ कहत कबीर जा के राम मुखें नहीं वा मुख धूरि परी ॥ भजो रे भैया राम गोबिंद हरी

पद

राम नाम तू भजि रे प्यारे क्या ग़फ़लत तू करता है । काचि मटी का बंगला तेरा पाव पलक में ढलता है ॥ बम्मन होके पोथी बांचे स्नान तर्पन करता है ॥ तीन बखत स्नान करत है यें क्या साहिब मिलता है ॥ जोगी होकर ज

दाबढ़ावेहालमस्ताःरहता है ॥ दोनें हाथ को सिर पर धर के यें क्या साहिब मिलता है ॥ मानभाव ही कर काले कपड़े डाढ़ी मूंछ मुंडाता है ॥ उलटी लकड़ी हाथें पकड़ी यें क्या साहिब मिलता है ॥ मुल्ला होकर बांग पुकारे यें क्या साहिब बहरा है ॥ मुर्ग़ा के पांव में घुंघरू बाजे वो भी अल्ला सुनता है जंगम हो के जंग पुकारे घर २ फेरी फिरता है ॥ शंख बजाकर भिक्षा मांगे यें क्या साहिब मिलता है ॥ कहत कबीर सुनें भाई साधो मन की माला जपता है ॥ जो अस्ते में ध्यान धरत है उसको साहिब मिलता है

पद

क्या नैना चमकावे सुंदर क्या नैना चमकावे ॥ कबी राहाथ न आवे ॥ सुंद० ॥ रूपा पहरे रूप दिखावे सोना पहरि रिझावे ॥ गल पहरे मोती की माला तीन लोक ललचावे ॥ सुं० ॥ चटक मटक के नैन फिरावे । बहुतेरे यह नारि रिझावे हम नहिं वैसे कौशिक मुनि से

कुत्ता कारि के फिरावे ॥ सुं० ॥ कहत कबीरा सुन भाई
साधो दिन २ भक्ति बढ़ावे ॥ हरीचरन पर करूं बलैया
तनकी तपन बुझावे

पद

जम से खूब लड़ूंगा वे ॥ हरि का भजन करूंगा वे ॥
आसा मारूं मनसा मारूं खानाजाद कहाऊं ॥ मन मेरा
चौकस कर राखूं चित चैतन्य मिलाऊं ॥ हरि० ॥ राम
नाम का घोड़ा मेरे मन का क़दम बढ़ाऊं ॥ भजन मता
पहाय मैं बरछी सन्मुख लैकर धाऊं ॥ हरि० ॥ और लो
क के सब के चाकर मैं हुज़ूर का क़ाज़ी ॥ काम क्रोध
की गर्दन मारूं साहिब राखे राज़ी ॥ हरि० ॥ मैं साहि
ब का खासा चाकर मेरा नाम कबीरा ॥ सब संतन को
सीस नवाऊं जौंहरी परखे हीरा ॥ हरि०

पद

तन का नहीं भरोसा वे देखे काल तमासा वे ॥ टेक ॥
बड़े राज सों साज बिराजे मिजान के सुक बेला ॥ कोई
किसी का नहीं रे यारो आखिर जात अकेला ॥ तन०

पांचपेच की पगड़ी बांधे वालों पेच संवारी ॥ मूंछ मोड़कर दर्पन देखे ढाल फिरंग संवारी ॥ तनपर शाल दुशाला पट्टू ओढ़े खावे गरममसाले ॥ जब आवेगा जम का शाला लेके गरदी डाला ॥ कहत कबीरासुन भाई साधो भागो सिद्ध सवारा ॥ नज़र खोल कर देखो यारो ये सब झूठ पसारा

पद

लगी होय सो जानें दूसरा क्या जानेंरे भाई ॥ टेक ॥ अंकालागी बंकालागी लागी सजन कसाई ॥ बलखबुखारे के बादशाह लागी छोड़ गया बादशाई ॥ नामालागी सुहृदालागी लागी मीराबाई ॥ सीपाजी कूं ऐसी लागी पड़े समंदर धाई ॥ धूलागी प्रह्लादै लागी लागी विभीषण भाई ॥ सुदामाजी को ऐसी लागी कंचनपुरी बसाई ॥ तीरनलागी तलवारन लागी घाव नज़र नहिं आई ॥ दास कबीर कूं ऐसी लागी सुंदर भालजमाई ॥

पद

जो देखा सो दुखिया बाबा सुखिया कोई नहीं रे ॥ टे॰॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया तपसी को दुख दूना रे।
आसा मनसा सब घट व्यापी कोई महल ना सूना रे॥
राजा दुखिया परजा दुखिया दुखिया घर बैरागी॥
दुख कारन सुखदेव नें उदरी माया त्यागी॥ जो दे॰

पद

दया धरम नहीं तन में मुखड़ा क्या देखे दरपन में ॥ टेक ॥ जब लग फूलि रही फुलवारी बास रहे निज कुल में ॥ एक दिन ऐसी होजावेगी खाक उड़ेगी तन में मुख॰ ॥ चोबा चंदन अबीर अरगजा शोभे गोरे तन में धन जोबन डूंगर का पानी ढलजावेगा छिन में ॥ मु॰ नदिया गहरी नाव पुरानी उतरे चाहे संग में ॥ गुरुमुख है सो पार उतर गये निगुरा डूबे मन में ॥ मु॰ ॥ कौड़ी कौड़ी माया जोरी सुरति रही नित धन में ॥ दस दरवाज़े घेर लिये जब रहगई मन की मन में ॥ मु॰ ॥ पगिया बांधे पेच संवारे तेल फुलेल मल तन में ॥ कहत कबीरा सुन भाई साधो ये क्या लड़ रहे रन में ॥ मु॰ ॥

पद

क्यों धुंधी आंखिन में यारो॥ समझ रखो कछु मन में
देखादेखी सब जावत हैं कौन रहे इस जग में॥ खलक
चबैना काल चबावे कछु पल्ले कछु मुख में॥ राजा
रंक नामर्दा मर्दा जोग जुगत सब तन में॥ लाखों हाथी
घोड़ा फौजें लूटि लेत हैं छिन में॥ यारो०॥ चौका पड़
रानां के बंदी और मगन बाजन में॥ कहत कबीर सुनो
भाई साधो कौन छुड़ावे इन में

पद

तुम बिन मेरी कौन खबर ले गोवर्द्धन गिरिधारी रे॥
मोरमुकट पीतांबर सोहे कुंडल की छबि न्यारी रे॥
भरी सभा में द्रोपती ठाड़ी राखो लाज हमारी रे॥ मीरां
के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहारी रे

पद

बसो मेरी आंखिन में नंदलाल॥ टेक॥ मोहनी मूर-
ति सांवरी सूरति राजिव नैन बिशाल॥ अधर सुधार
स मुरली बिराजै और बैजंती माल॥ मोरमुकट मक

रकत कुंडल कस्तूरी तिलक भाल ॥ छुद्रघंटिका कटी बिराजत ऊपर शब्द रसाल ॥ गोकुल स्वामी सुखको सागर भक्त वत्सल प्रतिपाल

पद

मुनि मन हीरामन तोता ॥ बैठा मौज उड़ाता सब दिन रोसा कभी न रोता ॥ बिषय बिटप सींचत जल भरि२ बिषफल भोजन किये निरंतर घटत उमरि बढ़ता जम का डर निडर पड़ा क्यों सोता ॥ बिलस बिलासना श करि अपना जानूं यह देखा क्या सपना झूंठा सपना कोई नहीं अपना फिरि औसर क्यों खोता ॥ हरि भजि कहुं तोसे बारबार तू तो पूछत तिथि बार यार जब काल गहै तब कछु न रहै बेढब गफलत का गोता ॥ वह परबस बस स्यास बिवस अब रात दिवस सुमरन से मतलब तन धन जोबन सब सपना फिरि किसका बेटा पोता

७

पद

वहां ना बैठ जहां नाम को हरनाम नहीं ॥ बिना हरि नाम किसी और में कुछ काम नहीं ॥ गुरु ने उपदेश यही दीया है सही सही रही को बिना रखे मिल सके आराम नहीं ॥ तुझे जो गुरु ने दिया तू उसकी सुधि न लिया सौ जतन हारे मगर जी में छुटी बाम नहीं ॥ स्याम की कहन भी करे सहज में दुख भी टरे रटे हरे २ कुछ भी लगे दाम नहीं

रेखता

मनमोहन मूरति माधुरी मन में मेरे बसी ॥ चीरा मुकेसी सीस पर कटि काछनी काछी ॥ कुंडल जड़ाऊ कान में मुरली अधर धरी ॥ देखो सखी नंदलाल के बनमाल क्या लसी ॥ दिल ना लगे हमारा बिन देखे स्याम के ॥ जनार्दन जान प्रीत के फंदे में आ फंसी ॥

रेखता

मनमोहन की मुरली मुझे नाहक़ सताती है ॥ जब से सुनी बंसी नहीं निस नींद आती है ॥ पट पीत का

पटका लसे हीय बनमाल भाती है ॥ बालों में अतर गुलाब खुशबू जो आती है ॥ मैं प्रीति के फंदे फंसी बसी दिल में वो झांकी है ॥ तेरे दरस की प्यारे जनार्दन याद आती है

ख्याल

पतित पावन कलिमल हारी ॥ नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धारो ॥ नखन सों हिरनाकुश मारो ॥ खंभ प्रहलाद हेत फारो ॥ आपनों जस जग बिस्तारो ॥ ब्रह्मादिक थरहर कंपें लक्ष्मी निकट न जात ॥ अपने जन प्रहलाद से धर्यो सीस पर हाथ ॥ भक्त की बिपति हरी सारी ॥ नाथ तुम दीनन हितकारी

सभा में द्रुपद सुता नारी ॥ ताकूं लगे सब उघारी ॥ देखि रहे सकल धरम धारी ॥ करण भीषम द्रोणाचारी ॥ कहा भयो बैरी प्रबल जो सहाय बलबीर ॥ दस हज़ार गज बल घटो घटो न गजभर चीर ॥ दुसासन बैठि रह्यो हारी ॥ नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ ७

भईजब भारत की त्यारी ॥ जुरे दल दोऊ ओर भारी ॥
भारई दीन ह्वै पुकारी ॥ टेर मेरी सुनिये गिरिधारी ॥
अब को है या जगत में मेरो राखनहार ॥ इतनी सुन-
त आपने गज कौं दीयो फंद डार ॥ करी अंडन कौ र
खवारी ॥ नाथ०

ग्राह ने गज को गहि लीनों ॥ परस्पर युद्ध बहुत की
नों ॥ भयो गज अति को बलहीनों ॥ याद जब गोविं
द कूं कीनों ॥ गाज सुनत गजराज की यों धाये ब्रजरा
ज ॥ ज्यों गोली पहले लगे पीछे होत अवाज ॥ जना
र्दन छांडि निज सवारी ॥ नाथ०

ख्याल

जमुना जल भरने चली अली वृषभान कुमारि अल
बेली ॥ अद्भुत अनूप रंग रूप सुघर सुंदर सुजान सु
कमारी ॥ सारी सुरंग सिर सजी मांग मोतिन सों सरस
संवारी ॥ लट नागिनि सी रही लटकि कपोलन का
री ओर घुंघरारी ॥ मग डरत २ पग धरत झुकी सी परत
लाज की मारी ॥ अंगन सुगंधि छबि न्यारी ॥ गज की

सी चाल मतवारी ॥ सोने की झारी हाथ साथ गोकुल की नारि नवेली ॥ जमु०

दृग हैं मनमथ के बान बांकी भौंहैं कमान मुलतानी दाड़िम से दसन हँसन शोभा रसना नहीं सकत बखानी ॥ बीरी मुख लाल भाल बेंदी रति देखि अधिक सकुचानी ॥ कोकिला कंठ लखि लजै मधुर बोलन पियूस रससानी ॥ नासा बेसरि छबि न्यारी ॥ कुंडल की हलनि छबि प्यारी ॥ रही सोनजुही सी फूल मदन जोबन गुण गर्ब गहेली ॥

जमुना० ॥

फूलन के गजरा गले कंठ में चंपकली रुचि राजै ॥ हाथन में कंकन कड़ा भुजन में बाजूबंद अति राजै ॥ उँगलिन में मुंदरी बनी जटित हीरा पन्ना पुखराजै ॥ कटि में किंकिणी सुदाल पगन में पायल रुनझुन बाजै ॥ जंघा छबि कदली सोहै ॥ कबि बरनि सकत अस को है ॥ नखचंद मधुर मकरंद खिली जैसे बागन बीच चमेली ॥ ज०

जावक मजीठ महंदी मंगाय चरनन पर रुचिर लगाई ॥ तरबन की लाली निरखि अरुण कमलन की कांति दुराई ॥ वृंदाबन कुंज निकुंज बिपिनि में बिहरत कुंवर कन्हाई ॥ ललितादिक सखी बुलाय स्याम नें राधे लैन पठाई ॥ आई सरद रैनि सुखदाई ॥ आनंद नाहिं उरन समाई ॥ सब सखी कहत समझाय जनार्दन चरन सरन चलि हेली ॥

जमुना०

कालिंगड़ा

बंसी को बजाय दिखाय झलक· हरि लैगयो मन मेरो मार पलक ॥ पीतांबर पट मोरमुकट · अरुनागिनी सी रही झूलि अलक · कुंडल की झलक झलकत जैसें दमक दामिनी जात फलक ॥ नैनन नीर धीर नहिं धारत बहुत २ गिरें ढलक २ ॥ अब रोके कब रुकत सखी भरि आयो प्रेम जब छलक २ ॥ भई होउ चंग जियजानि परत मोहि गगन भूमि करे थलक २ पैंड़ा दूरि कठिन लागत सखि पहुंचों कब धों स्याम

तलक॥ दोउ दृग रसिक रसीले हरि के चंचल चपल कठोर पलक॥ है मानुष क्या माल निजामी रटत स कल सुर ललक २॥

परज

मन अटकी छबि नागर नट की॥ केसरि खौरि मुकट मांथे पर उर बनमाल बिराजत टटकी॥ मृदु मुसिकानि भौंह की मोरन नाक बुलाक हलन हिय खट की॥ बंसी अधर मधुर धुनि बाजन झमकि लैन गति अंबर झटकी॥ कृष्णरंग प्रभु फिरों बन बन अब न रहों काहु की हटकी

खेमटा

अटकी मेरी जान बांके बिहारी सों अटकी॥ मोरमुकट मकराकृत कुंडल ऊपर कलगी लटकी॥ बिना गुपाल लाल मेरी सजनी को जानें मेरे घट की॥ स्याम सखी बिसरत नहीं पल छिन मूरति नागर नटकी

रेखता

हर एक तरफ़ चिमन में कैसी बहार छाई ॥ चलि देखिये चमन में गुलशन की खुश नुमाई ॥ गैंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निकाई ॥ फूलों के हार सेती क्या नर्गिसी सुहाई ॥ सखियों के संग जाके देखी बिपिन की सोभा ॥ नागरि नवल छबीली छवि देखि के मन लोभा ॥ बैनी गुही सुहावनि क्या बेसरें बनाईं ॥ हँसि २ ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई

पद

सखि नँदलाला आमन नहीं पावें ॥ भीतर चरण धरन मति दीजो चाहें जितै ललचावें ॥ ऐसेन की परतीत कहा सखी कपट की बात बनावें ॥ नारायण इक मेरे भवन बिन अंत चाहे जहां जावें

ठुमरी

या सामलिया की लटक चाल जिय में मोरे बसिगई रे ॥ मुकट पीतांबर अधिक सुहावै लै मुरली पढ़ि फूंक बजावै· लटकारी नागिनिसी लटक तन मे रोड सिगई रे ॥ सामलिया० ॥ बिन देखे नहीं परत

चैन कहौ हरिबिन कैसे कटति रैनि अब कहा करों मे
री गुइयां बिन दरस तरस रही रे ॥ सामलिया० ॥ लि
खी लिलाट मिटत नहीं मोहन भयौ उचाट जिया के
हि कारन आनि फंसी मधुबन कुंजन परबस ह्वै फं
सि गई रे ॥ सामलिया० ॥ मदसूदन पिया प्यारा आ
वे छबि बांकी तिरछी दिखरावे तो डारि गले बहि-
यां सजनी सब कसक निकल गई रे ॥ सांवलिया
की लटक० ॥

सोरठ

पिया बिन नागिनि काली रात ॥ कबहुं जामिनी
होत जुन्हैया डसि उलटी होइ जात ॥ पिया बि० ॥
जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत आयु सिरानी जात ॥
सूरस्याम बिन बिकल बिरहनी मुरिमुरि लहरें
खात ॥ पि० ॥

पीलू

बंसीबारे तू मेरी गली आयजा रे ॥ कोरी मटुकिया
दही जमायो मेरो माखन खायजा रे ॥ बंसीबारे०

वृंदावन की कुंजगलिन में झुकि मुखड़ा दिख-
लायजारे ॥ बंसी० ॥ तेरे कारन भई ह्वौं बावरी तन
की तपत बुझायजारे ॥ बंसी० ॥ चरन दास सुख देहु
पियारे नैना में नैना मिलायजारे ॥

ठुमरी

पिया तोरी सांवरी सुरति पर वारी रे ॥ बतियां करत
मानों फूल से झरत सुख अलक बदन घुंघरारी रे
बांकी चितवन मृदु हंसनि दसन छबि भृकुटी कु
टिल लागे प्यारी रे ॥ पिया० ॥ करधरि कटि पै अ
दां सों नारायण ठढ़ो पकरें द्रुम बरई की डारी रे ॥
पिया तेरी० ॥

ठुमरी

मांथे पै मुकुट श्रुति कुंडल बिशाल लाल अलक
कुटिल सो अलिन मद गंजनी ॥ काछिनी कालि
त कटि किंकिनी बिचित्र चित्र पीतपट अंग सोबि
राजै द्रुति बैंजनी ॥ दिये गलबाहीं प्रिया पीतम बि
हार करें अति अनुराग भरी आई नयी द्वैजनी ॥

कहै जैदयाल प्रभू मेरो मन मोहि लियो मंद२ बाजत गोबिंद पायं पैंजनी ॥

राग स्यामकल्याण

बसो मेरे नैनन में दोउ चंद ॥ गौर बरन श्रीराधे प्यारी स्यामबरन नंदनंद ॥ गोकुल देखत रूप लुभाने निरखत आनंदकंद ॥ जय श्रीभट्ट प्रेमरस बंधन कों छूटे दृढ़ बंद ॥

धीमाताल तिताला

ऊधो धनि तुमरो ब्योहार ॥ धनि वो साध धन्य हम सेवक धनि हम बरतन हार ॥ आंवन काटि बंबूर लगावत चंदन खेत उजार ॥ हम कों जोग भोग कुबिजा कों रोसी समझ तिहार ॥ माहन बांधत चोरन छोड़त चुगलन कों अधिकार ॥ हंस मयूर शुका पिक त्यागत कागन कौ इतबार ॥ तुम हरि पढे चातुरी विद्या निपट कपट चटसार ॥ सूरदास प्रभु कों लोंनिभैगी अंधधुंध सरकार

भैरव

अँखियां हरि दरसन की प्यासी ॥ देख्यौ चाहत कमलनैन कों निशिदिन रहत उदासी ॥ केसरि तिलक मोतियन माल वृंदावन के बासी ॥ नेहा लगाय त्यागगये तृणसम डारगये गलफांसी ॥ काहू के मन की कोजानत लोगन के जनुं हांसी ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरसबिन लैहों करवट कासी

गज़ल

निरगुन सुना मत ऊधो अज्ञान इसे कहते हैं ॥ प्रभु में अनंत गुण हैं सुज्ञान इसे कहते हैं ॥ लय होगयीं हैं गोपी उस रूप मोहनी में ॥ क्या प्रेम की दशा है लख ध्यान इसे कहते हैं ॥ निर्गुण में तुम हो भूले फिरते हो मन में फूले हो बाद के बबूले अभिमान इसे कहते हैं ॥ हरि के बिरह में ऊधो अपनी फटी न छाती हिरदा नहीं हमारा पाषान इसे कहते हैं ॥ अरपन करें जो तन मन प्रभु के चरण कमल में ॥ सुखराम जन जगत में बस दान इसे कहते हैं ॥

खेमटा

ठाड़ी रहरी गूजरी तू देंजा मेरौ दान ॥ ढिंग भरा आव
त बगर जात है फोरों तेरी मटुकी लकुट मारूं तान
कैसो दान मांगे स्याम सुजान ॥ या मारग हम निस
दिन आवत कबहुं न दीनों दधि को दान ॥ ठा० ॥
कहा तुम ग्वालिन आंखि दिखावौ दावानल
को करिगयो पान ॥ या गहवर में हमहिं बसत हैं
यहां धों कहा तिहारो काम ॥ दान के काजें हम
ब्रज आये छोड़िदियौ बैकुंठ सो धाम ॥ ठाड़ी० ॥
सूरदास प्रभु तुमरे मिलन कों मनमोहन को राखे
मान ॥ ठाड़ी० ॥

प्रभाती

जागिये गोपाललाल भोर भयो प्यारे ॥ भानु कि
रन उदय भई चिरिया चोहचान लगीं गोंअन गल
फंद छुटे पछी पग धारे ॥ बिष्णुभक्त भजन करत
जोगीजन ध्यान धरत दान२ करन करत कागा
बोले कारे ॥ जागि २ दरस दीजे दयाल कीजे नि

हाल अधमजन मनोहर है आसरे तिहारे ॥ जा-
गिये० ॥

प्रभाती

भोर ही जसोदा माय लाल कों जगावै ॥ टेरत अ
चरन सों ब्यार प्यार करत बार २ जागे महाराज जबी
कंठ सों लगावै ॥ लावति जल भरि के झारी धोव-
त मुख गिरिधारी हाथन से अपने अशनान फिरि
करावै ॥ माखन मिश्री नवीन कहत है मनोहर ये
लाय के कलेवा ब्रजराज कों करावै

भैरवी

छैला तेरे नैनों की लागी चोट ॥ रसिक रसीले हैं ते
रे नैना करत हज़ारन खोट ॥ नैनों की घाली कित
जाउं आली रे नहीं दीखत कहीं ओट ॥ कहत म-
नोहर मथुरा वासी रे भली बनी है जोट ॥ छैला
तेरे नैनों० ॥

गौरी

नंद के कन्हैया नैया पार लगाओ ॥ भौसागर में ब

ह्यौ जात हों आय कें बेगि बचाओ ॥ तुम ब्रजराज तुमें डर काकौ अपने माऊं जाओ ॥ अरज मनोहर करतजोरि कर अपने कूं अपनाओ ॥

गौरी

गावत कन्हैया गौरी बन से आय कें ॥ पास बुलाय लेत सखियन कों सुंदर बैन सुनाय कें ॥ गति ललिता के भरत अगारी नीके भाव बताय कें ॥ नटवर भेष मनोहर उनको मोहि लेत मुसिक्याय कें ॥ गावत० ॥

दादरा

बिन देखे न पलभर चैन सखीरी । सांवलिया मन में बसो ॥ बंसीबट जमुना निकट रे ठाड़ो चरावै धेन सखीरी ॥ सांवलिया० ॥ कबू बजावै बांसुरी कबू बजावै बैन ॥ सखीरी सांव० ॥ याद मनोहर ध्यान मैं रे लगी रहै दिन रैन ॥ सखीरी सांवलिया मन में बसो ॥

ग़ज़ल

जहां ब्रजराज कल पाये चलो सखी आज वा बन में
बिना उस रूप के देखे बिरह की दों लगी तन में ॥ न
कल पड़ती है बे कल को न जी लगता है बिन जानी
भई फिरती हूं जोगन सी सरे बाज़ार गलियन में ॥ क
रूं क़ुरबान जी उस पर जनम भर गुण न भूलूंगी ॥
मेरा महबूब जो लाकर बिठादे मेरे आंगन में ॥ न-
हीं कुछ काम दुनियां से न मतलब दीन से मेरा । जो
चाहो सो कहो कोई बसा अब तो वही मन में ॥
तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायण ॥
जो सूरत का हैं मस्ताना वो परचे कैसे बातन में ॥

ग़ज़ल

वो झलक जो मोर मुकुट की थी मुझे लख के स्याम
लखा गया ॥ बसी जब से चितवन चित्त में आ चि
तचोर हिये में समा गया ॥ वो सरूप रूप था जल्वे
गर लजे कोटि रवि शशि दृष्टि कर ॥ भृकुटी कुटि
ल लखि स्याम की दृग देखि मृग शरमा गया ॥ ७

कानों में कुंडल की झलक दो नागिनी छूटीं ज़ुल्फ़ वस यह उनमें बिष भरा डस मन मेरा लहरा गया कटि पीतपट सिर पै मुकट तिरछी लटक निरतत मटक मुरली मधुर अधरन धरी रसभीनी तान सुना गया ॥ इच्छा सरन आया तेरी रख लाज अब गिरधर हरी ॥ तन की कसक बाक़ी रही सपने में दरस दिखा गया ॥

गज़ल

इक दफ़े प्यारे अदा हम को दिखाना चाहिये ॥ म हरकर हम को ज़रा बंसी सुनाना चाहिये ॥ जिस तरह सजते मुकट को तिस तरह फिर भी सजो ॥ बांका फेंटा बांधके कलगी लगाना चाहिये ॥ कानों में बाले पहन कर नाक में बेसर भी हो ॥ पानों की लाली लबों पर मुसकराना चाहिये ॥ चांद से रुख़सार पर क्या काकुलें नागिन बनी ॥ इनको भी अमृत ज कन से अब पिलाना चाहिये ॥ बैंदी पेशानी पै गोया है गी स्यामा की मुहर ॥ स्यामसुंदर नेह में हम

को दिखाना चाहिये

ग़ज़ल

सांमरे महबूब का दीदार करना चाहिये ॥ साफ़ दिल करके उसी को याद करना चाहिये ॥ उस मुताबिक़ ख़ूबसूरत दूसरा देखा नहीं ॥ क्यों न हो दिल माइले रुखसार करना चाहिये ॥ गोश में कुंडल ज़मुर्रद अक्स रुखसारों पै यों ॥ मिस्ल माही आब में शुम्मार करना चाहिये ॥

प्रभाती खेमटा

मेरे तो गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई ॥ अंसुवन जल सींचि २ प्रेमबेलि बोई ॥ मेरे० ॥ जाके सीस मोर मुकट मेरो पति सोई ॥ आई ही मैं भक्ति जानि जक्त देखि मोही ॥ मेरें० ॥ तात मात भाई बंधु अपना ना कोई साधन संग बैठि २ लोकलाज खोई ॥ मेरें० ॥ अब तो बात फैलि गयी जानत सब कोई ॥ छोड़ि दई कुल की लाज का करेगो कोई ॥ मेरें० ॥ दासी मीरा सरन आई होनी हो सो होई ॥ मेरे तो गिरिधर गुपाल

दूसरो न कोई

रामकली

मैं स्याम दिवानी मेरो दरद न जानें कोइ ॥ सूलीऊ पर सेज पिया की किस बिधि मिलना होइ ॥ घायल की गति घायल जाने जातन बीतत होइ ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर बैद समलिया होय ॥ मैं दरद० ॥

दोहाकूट

गंगा यमुना विष्णु प्रद्युम्न अनिरुद्ध ऊषा बाणा

जन्हुसुता भगिनी सुपति सुत सुत दारा तात

शिव ब्रह्मा विष्णु

तिहि सु पूज्य पितु तात को रहियो मम शिर हाथ

पार्वती शिव गंगाजी ब्रह्मा कमंडल

अर्जा पति के सीस पे शंभुतात के पात्र

ब्रह्मा विष्णु गंगा

चतुरानन पितु चर्ण में सो अर्चक के गात्र

चंद्रमा रोहिणी बल्देव कृष्ण लक्ष्मी
निशिनायक की नायका तासुत अनुज सुवा-

गरुड़ सर्प पवन हनूमान
म ॥ तिहिवाहन को भक्ष पुनि सुत स्वामी

श्रीराम

शिव ब्रह्मा विष्णु रावण इंद्रजीत लक्ष्मण
सर्वतिलक पितु पूज्य अरि सुत संहारक

हनूमान
इष्ट ॥ सो रक्षक ह्वै के सकल करो बस्य म

नश्रेष्ट

चंद्रमा बुध शार्दूल गज ऐरापति इंद्र अर्जुन
शशि सुत बाहन भक्ष पति ता पति सुतको

कृष्ण लक्ष्मी दधि रामचंद्र
मित्र ॥ तातिय पितु पूज्य को बसो आन

उर चित्त

बंदर क्रौंच पृथ्वी विष्णु लक्ष्मी समुद्र

बंचर रिपु जननी सुपति तिहितिय पितु

अमृत मोहनी

सुत काज ॥ स्यामरूप स्यामा धर्यौ सकल सिंगार सुसाज

समुद्र कमल ब्रह्मा विष शिव शंख विष्णु

दधिसुत करधर कंठ धर भुज धर विधि हरिहर ॥ दुखहर सुखकर कृपाकर बांछा पूर्ण सु कर ॥

१ गणेश लाल

श्रीराज विघ्न पुनि रक्तमणि अक्षर लिखे बनाय ॥

३

सब कबि कोविद सोधि के लैहं ग्रंथ छपाय

संवत शशि निधि रामनिधि मास शुक्ल सित पक्ष
चन्द्र रुद्र रवि के दिवस पूर्ण सु ग्रंथ विलक्ष

रागजंगला

यशोदा नें कारी अँधेरी में जायो ॥ याते कारो रूप हरि नें पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये सुख चूमत मोद बढ़ायो ॥ रूप की राशि मयंक मुखी मेरी राधे को रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घनस्याम के जब से गर्ग गृह आयो ॥ ना हम नें वसुदेव सुने बासुदेव कहां ते आयो ॥ कर्म की रेख मिटे ना सजनी वेद पुराणन गायो ॥ सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को वेद विमल यश गायो

ग़ज़ल

तैनें बंसी में जो गाया मेरा जी जानता है ॥ सैकड़ों बंसी सुनी हजारों तानें ॥ वो मज़ा फिर न पाया मेरा जी जानता है ॥ नाथ ने कूद के नाथ लिया काली को ॥ सांवला स्याम कहाया मेरा जी जानता है

ऐसे भार को कौन उठावे मोहन ॥ डूबता व्रज को ब चाया मेरा जी जानता है ॥ जब द्रोपदी का चीर खीं चा दुसासन ने ॥ अंबर का ढेर लगाया मेरा जी जा नता है ॥ कहां तक सिफत करूं करुणाकर तेरी। कृष्ण मीरां के मन भाया मेरा जी जानता है

ग़ज़ल

याद आता है वही बंसी का बजाना तेरा ॥ छागया दिल पै मेरे तान का लगाना तेरा ॥ जिस दिन से दि ल में समाया क्यों नज़र आता नहीं ॥ मैं पता कैसे लगाऊं चोर का ठिकाना तेरा ॥ ख़ुशनुमां आवाज़ शीरीं सुन के दिल मायल हुआ ॥ अब कहीं लग ता नहीं फिरता हूं दिवाना तेरा ॥ कानों में कुंडल शिर मुकट ज़ुल्फें तेरी क्या खूब हैं ॥ यह अदां जी सेन भूले रुलकें दिखाना तेरा ॥ दाम में ऐसे फंसे ग्वाल और गोपी सभी ॥ यह बयां किससे करूं गो ओं का चराना तेरा ॥ नाग नाथन केशी मर्दन इन्द्र का तोड़ा ग़रूर ॥ सात बरस के सन में गोवर्द्धन

का उठाना तेरा ॥ हूं गुनहगार रोशन मुद्दत से दर पै पड़ा ॥ यह सिफ़त ज़ाहिर जहां में पार लगाना तेरा ॥

सारंग

सीस मुकट मणि बिराज · कर्ण कुंडल अधिक साज अधर लाल चिबुक सुंदर यशुमति को प्यारो ॥ कमलनयन भ्रमर लाल · कुमकुम को तिलक भाल गुंजमाल कंठ धार कान्ह कामर बारो ॥ चारन बनधेनुजात · मुख पर मुरली सुहात · गुपियन को चितचुरात · कहियत नंदबारो ॥ अति सुरूप स्याम गात · दरस देखि पापजात · मुहरदास प्रभु प्रबीन पतित तारन हारो

राहानों

जैजै जुगलकिशोर बिहारी ॥ जै निकुंज में अबिचलजोरी जै मनमोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद चकोर परस्पर जै छबि सिंधुरूप मनुहारी ॥ जै ब्रजजीवन रसिक सिरोमणि महिमां अमित अपार तिहारी

जै भक्तन वश रहत निरंतर नाना चरित करत सुख कारी ॥ भक्तराम निशिदिन यह जांचत चरणकमल रारवों उरधारी

लावनी

रास में निर्त्तत बनवारी· संगराजत राधा प्यारी ॥ सरद पून्यों निशि उजियारी ॥ पवन सीतल अति सुखकारी ॥ मधुर मुरलीधुनि उच्चारी ॥ सुनत मबजुरि आईं नारी

दोहा

बंसीबट के निकट पै सीतल निर्मल नीर
करत रास प्यारी और प्रीतम कालिंदी के तीर

सहस्त्र गोपी इक गिरिधारी ॥ रास में निर्त्तत ब· नवारी

बजावत बीना करतालें ॥ गवावत गावत ब्रज बालें ॥ लसत उर मोतिन की मालें ॥ हंसत सुख बीरी अधरलालें ॥

❀

दोहा

अरस परस गति लेत हैं उचरत तान तरंग
बिहरत मदनमोहन पिया व्रज युवतिन
के संग

निरखि रतिपति मति गति हारी ॥ रास में निर्त्तत ब
न वारी

बीच में राधे अलबेली ॥ चहुं दिश संग की सहेली
सुघर गुणरूप युत नवेली ॥ सुनावत प्रेम की प
हेली

दोहा

निधिबन सेवाकुंज में मधुकर गोकुलचंद
किये मनोरथ सबन के पूरण परमानंद ॥

रैनि षटमास की करिडारी ॥ रास में निर्त्तत बन
वारी

फूलिरहीं लता द्रुमन डारें ॥ मधुपा मिलि कुंजन
गुंजारें ॥ करत जहां भींगर झनकारें ॥ कोकिला-
कोयल किलकारें

दोहा

आईं सुरतिय स्वर्गते साजि २ सकल बिमान
पियाप्यारी को रूप लखि करत अमीरस पान

जनार्दन चरणन बलिहारी ॥ रास में निर्त्तत बन-
वारी

ख्याल ॥

सुघर बरसाने की नारी ॥ बनी इक नाज़ुक पनिहा
री ॥ सीस पै सोने की झारी ॥ नाशिका बेसरि झल
कारी ॥ करी जब पनघट की त्यारी ॥ चलत पगप
यल झनकारी

दोहा

उरवारन के भार सो कमरि तीन बल खात
चहुं ओर मुख मोरि मोरि के मंद २ मुसिकात

दसन पर कुंद कली वारी ॥ सुघर बरसाने की नारी
अरुन महंदी को पगन धारी ॥ खिली नखचंद छ
बि उजारी ॥ धरन चरनन की लगत प्यारी ॥ चलै
जैसे गजगति मतवारी

दोहा

कनकलतासीकामिनी नारीबैस किशोर
चितवन में घायल करिडारत दृग काजर
की कोर

अलक नागिनिसी छिटकारी ॥ सुघर बरसाने की
नारी

कड़ा कंकन कर में राजें ॥ भुजन में बाजूबंद छाजें
अधर लखि बिंबाफल लाजें ॥ मधुर बोलन सुन
दुख भाजें

दोहा

मोतिन के गजरा गलें चंपकली उरमाल
सीसफूल मांथे पर बेंदी कोकिल कंठ र
साल

श्रवण कुंडल की झलकन्यारी ॥ सुघर बरषाने
की नारी

बसन झीने तन में सोहें ॥ अंग अतरन की खुशबो
हें ॥ देखि सुरनर मुनि मन मोहें ॥ कहें उपमा सो

कवि कोहैं

दोहा

मारग में मोहन मिले आनंद उरन समात
सामलगौर पियाप्यारी मिलि करत पर
स्पर बात

जनार्दन कुंज बनबिहारी ॥ सुघर बरषाने की
नारी

इति श्रीव्रज बिहार
समाप्तम्

अथ श्रीअनुरागरस दोहावली लिख्यते

दोहा
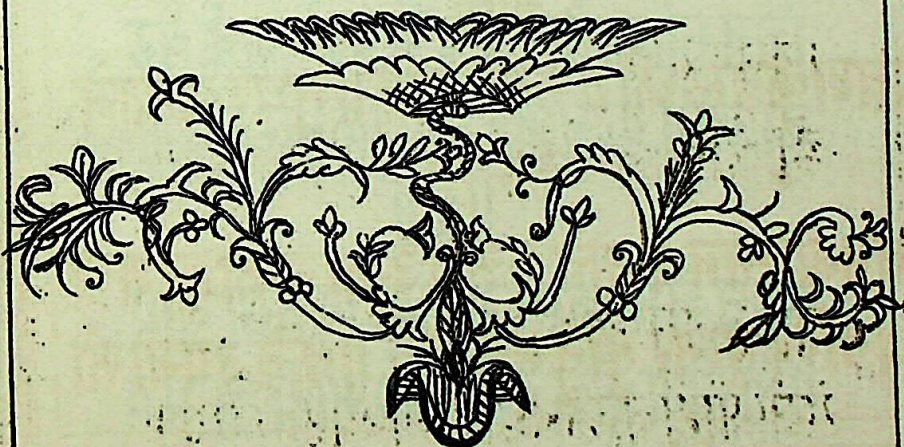
मेरी भवबाधा हरो राधानागर सोय ॥
जातन की झँई परें स्याम हरित द्युत होय
॥ १ ॥

यद्यपि हों कायर कुटिल खरो चाकरी चोर
तद्यपि कृपा न छांड़ियो चितै आपनी ओर
॥ २ ॥

गुरु बिचारा क्या करे हिरदा भया कठोर
नौ नेजे पानी चढ़ा तऊ न भींजी कोर ॥
॥ ३ ॥

जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी बैठ
हों बौरी ढूंढन गई रही किनारे बैठ ॥
॥ ४ ॥

बालू जैसी करकरी उज्जल जैसी धुप्प
ऐसी मीठी कुछ नहीं जैसी मीठी चुप्प ॥

नवद्वारे का पींजरा तामें पंछी पौन ॥
रहने को आश्चर्य है गये अचंभा कौन
॥६॥
द्वारधनी के परि रहे धका धनी के खाय ॥
कबहूं धनीं निवाजहीं जो दरछांडि नजाय
॥७॥
साहिब के दरबार में कमी काहु की नाहिं
बंदा मौज न पावही चूक चाकरी माहिं।
॥८॥
मेरा मुझको कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मोर ॥ ७
॥९॥
दुख सुख एक समान हैं हरष शोक नहिं व्याप
परउपकार निहकामता उपजे छोह न ताप
॥१०॥
जो तोकों कांटा बुवे ताहि बोय तू फूल ॥
तोकों फूल के फूल हैं वाकों है तिरसूल

दुरबल को न सताइये वाकी मोटी हाय ॥
मुई खाल की स्वास सों सार भसम होजाय

॥१२॥

या दुनियां में आय के छांड़ि देय तू ऐंठ
लैना है सो लेइ ले उठी जात है पैंठ ॥

॥१३॥

ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोय
औरन को सीतल करे आपो सीतल होय

॥१४॥

दुख मैं सुमिरन सब करे सुख में करे न कोय
जो सुख में सुमिरन करे दुख काहे को होय

॥१५॥

एकाहि साधे सब सधे सब साधे सब जाय
जो तू सींचे मूल को फूले फले अघाय ॥

॥१६॥

सब आये इस एक में डार पात फल फूल
कबिरा पाछे क्या रहा गहि पकरा जिन मूल

मांटी कहे कुम्हार सों तू क्या रूंधे मोय
एक दिन ऐसा होयगा मैं रूंधोंगी तोय॥

॥१८॥

चलन २ सब कोइ कहै पहुंचे बिरला कोय
एक कनक अरु कामिनी दुर्लभ घाटी दोय

॥१९॥

पोथी पढ़ि २ जग मुवा पंडित भया न कोय
एकहि अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय

॥२०॥

कलि का बाम्हन मसखरा ताहि न दीजे दान
कुटुंब सहित नरकै चला संग लिये जिजमान

॥२१॥

चाह घटी चिंता गयी मनुवा बे परवाह ॥
जिनको कछू न चाहिये वे साहन पति साह

॥२२॥

जहां दया तहां धर्म है जहां लोभ तहां पाप
जहां क्रोध तहां पाप है जहां क्षमा तहां आप

सांचे आप न लागई सांचे काल न खाइ
सांचे में सांचा मिले सांचे माहिं समाइ
॥२४॥

माला फेरत जुग गया पाय न मन का फेर
कर का मनका छांड़ि के मन का मनका फेर
॥२५॥

साहिब सों सब होत है बंदे सों कछु नाहिं
राई सों परबत करे परबत राई माहिं ॥
॥२६॥

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न देखा कोय
जो दिल खोजों आपना मुझ से बुरा न कोय
॥२७॥

देह धरे को दंड है सब काहू को होय ॥
ज्ञानी भुगते ज्ञान में मूरख भुगते रोय
॥२८

काल करे सो आज कर आज करे सो अब
पल में परलै होयगी बहुरि करेगा कब

पाव पलक की सुधि नहीं करे काल की बात
काल अचानक मारिहै ज्यों तीतर कों बाज

॥३०॥

माली आवत देखिके कलियां करी पुकार
फूले फूले चुनिलिये कालि हमारी बार ॥

॥३१॥

काचा काया मन अथिर थिर २ काम करंत
ज्यों २ नर निधरक फिरै त्यों २ काल हसंत

॥३२॥

आसपास जोधा खड़े सबै बजावत गाल
मंझ महल ते लेचला ऐसा बरबस काल

॥३३॥

जाकों राखे साइयां मारि न सक्कै कोय
बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय

॥३४॥

बकरी पाती खात है ताकी काढी खाल।
जो बकरी को खात है ताकी कौन हवाल

दया कौनपर कीजिये कापर निर्दय होय
साईं के सबजीव हैं कीड़ी कुंजर सोय ॥

॥३६॥

कासुख ले बिनती करों लाज आवति है मोय
तुम देखत औगुन किये कैसे भाऊं तोय ॥

॥३७॥

साहिब तुम न बिसारियो लाख लोग मिलिजायँ
हम से तुम कों बहुत हैं तुम से हम कों नायँ

॥३८॥

खूंदन तो धरती सहे बाट सहे बनराय
कुबचन तो साधू सहे ओर तें सह्यो नजाय

॥३९॥

सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप
जाके हिरदें सांच है ताके हिरदें आप

॥४०॥

भाव सरस समझत सबै भले लगें इह भाय
जैसे औसर की कही बानी सुनत सिहाय

नीकी पै फीकी लगे बिन औसर की बात
जैसे बरनत युद्ध में रससिंगार न सुहात
॥४२॥
फीकी पै नीकी लगे कहिये समें बिचार
सब के मन हर्षित करे ज्यों बिवाह में गार
॥४३॥
जाही सों कछु पाइये करिये ताकी आस
रीते सरवर पै गये कैसे मिटत पियास।
॥४४॥
स्वांति बूंद है मघन में चातक मरत पियास
जो जाही को है रह्यो सो तिहि पूरे आस ॥
॥४५॥
भले बुरे सब एक से जौलों बोलत नांहि ॥
जानि परत हैं काक पिक ऋतु बसंत के मांहि
॥४६॥
मधुर बचन सों जात मिटि उत्तम जन अभिमान
तनक सीत जल सों मिटे जैसे दूध उफान॥

सबै सहायक सबल के कोई न निबल सहाय
पवन बुझावत दीप कों अग्नि हिं देत जगाय
॥४८॥
कछु बसाय नहिं सबल सों करत निबल सों जोर
चले न अचल उखारि तरु डारत पवन झकोर
॥४९॥
जो जाही सों रचि रह्यो तिहि ताही सों काम
जैसे किरवा आक को कहा करे बसि आम
॥५०॥
प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिल सों न मिलाय
दूध दही सों जमत है कांजी सों फटि जाय॥
॥५१॥
परघर कबहु न जाइये गये घटति है जोति
रबिमंडल में जात ससि हीन कला छबि होत
॥५२॥
ब्रह्म बनाये बनि रहे ते फिर और बनै न
कान कहत नहिं बैन ज्यों जीभ सुनत नहिं बैन

मूरख गुन समझै नहीं तौन गुनी में चूक ॥
कहा भयो दिन को विभौ देखी जोन उलूक

॥५४॥

मूंद तहांही मानिये जहांन पंडित होय ॥
दीपक की रवि के उदै बात न बूझै कोय ॥

॥५५॥

निपट अबुध समझै कहा बुधजन बचन बिलास
कबहूं भेक न जानहीं अमल कमल की बास

॥५६॥

सांच झूठ निर्णय करे नीति निपुण जो होय ॥
राजहंस बिन को करे नीर क्षीर को दोय ॥

॥५७॥

देखहि को उमहै गहै गुण न गहै खल लोक
पिये रुधिर पय ना पिये लगी पयोधर जोक।

॥५८॥

कारज धीरे होत है काहे होत अधीर ॥
समय पाय तरवर फलै केतिक सींचो नीर

क्यों कीजे ऐसो जतन जासों काज न होय
पर्वत पै खोदे कुआ कैसे निकसे तोय॥
॥६०॥
सुधरी बिगरै बेगिही बिगरी फिर सुधरैन
दूध फटे कांजी परे सो फिर दूध बनैन॥
॥६१॥
छोटे नर तें रहत हैं शोभायुत सिरताज
निर्मल राखे चांदनी जैसे पायंदाज॥
॥६२॥
सहज रसीलो होय सो करे अहित पै हेत
जैसे पीड़ित कीजिये ईख तऊ रस देत
॥६३॥
कहा करे कोऊ जतन प्रकृत और की और
बिष मारे ज्यावे सुधा उपजे एकाहि ठौर
॥६४॥
डरे न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की बान॥
भौंर न छांडे केतकी तीखे कंटक जान

धन बाढे मन बढ़ गयो नाहिन मन घट होय
ज्यों जल संग बढ़े जलज जल घट घटे न सोय

॥६६॥

सबतें लघु है मांगिवो यामें फेरि न सार॥
बलि पै जांचत ही भये बमन तन करतार

॥६७॥

सबहु कामें होत न कहूं होत सबन में फेर॥
कपरौ खादी बाफतौ लोह तवा शमशेर॥

॥६८॥

जैसे की सेवा करे तैसी आसा पूर॥ ७॥
रत्नाकर सेवे रतन सर सेवे शालूर॥ १॥

॥६९॥

होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसंग के थान
गंधी और लुहार की बैठो देखि दुकान॥

॥७०॥

गैर छुटे ते मीत हू है अमीत सत रात ॥
रवि जल उखरे कमल को जारत गारत गात

जातगुनी जात न तहां आडंबर जुत सोय
पहुंचे चंग अकास लों जो गुन संयुत होय

॥७२॥

गुनवारो संपति लहै लहै न गुन बिन कोय
काढे नीर पताल सों जो गुनयुत घट होय

॥७३॥

अरि छोटो गिनिये नहीं जासों होत बिगार
तनसमूह कों छिनक में जारत तनक अंगार

॥७४॥

पंडित जन को श्रम मरम जानत जे मतिधीर
कबहुं बांझ न जानही तन प्रसूत की पीर॥

॥७५॥

बीर पराक्रम ना करे तासों डरत न कोय ॥
बालकहू को चित्र को बाघ खिलौना होय

॥७६॥

नृप प्रताप तें देस में रहे दुष्ट नहिं कोय
प्रगटत तेज दिनेश को तहां तिमिर नहिं होय

कारज ताही को सरे करे जो समय निहार
कबहुं न हारे खेल जो खेले दाव बिचार

॥७८॥

कोउ दूरि न करि सके उलटे बिधि के अंक
उदधि पिता तजु चंद को धोय न सको कलंक

॥७९॥

गाहक सबै सपूत के सारै काज सपूत ॥
सब को ढंपन होत है जैसे बन को सूत ॥

॥८०॥

करत २ अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान

॥८१॥

को सुख को दुख देत है देत कर्म झकझोर
उरझे सुरझे आपही ध्वजा पवन के जोर

॥८२॥

भली करत लागे बिलँब बिलँब न बुरे बिचार
भवन बनावत दिन लगें ढहत लगे न बार ॥

सोई अपनों आपनों रहै निरंतर साथ ॥
होत परायौ आपनों शस्त्र पराये हाथ ॥

॥८३॥

का रस में का रोस में अरि सों जिन पतियाय
जैसे सीतल तप्त जल डारत अग्नि बुझाय॥

॥८४॥

अंतर अंगुरी चारि को सांच झूठ में होय
सब मानें देखी कही सुनी न मानें कोय

॥८५॥

होय भले कौ सुत बुरौ भलौ बुरे के होय ॥
दीपक सों काजल प्रगट कमल कीच सों होय

॥८६॥

होय भले चाकरन सों भलौ धनी को काम
ज्यों अंगद हनुमान सों सीता पाई राम ॥

॥८७॥

सुख सज्जन के मिलन कों दुर्जन मिले जनाय
जाने ऊख मिठास कों जब मुख नीम चबाय

जाहि मिले सुख होत है तिहि बिछुरे दुख होय
सूरउदै फूले कमल ता बिन सकुचे सोय॥

॥८९॥

झूठेहु करिये जतन कारज बिगरे नाहिं ॥
कपट पुरुष धन खेत पर देखत मृग फिरिजाहिं

॥९०॥

कारज सोई सुधरि है जो करिये समभाय ॥
अति बरसे बरसे बिना जैसे मन कुम्हिलाय

॥९१॥

रहे प्रजा धन यत्न सों जहं बांकी तरवारि ॥
सो फल कोउ न लै सकै जहां कटीली डार

॥९३॥

पंडित अरु बनिता लता सोभित आश्रय पाय
है मानिक बहु मोल को हेम जटित छबि छाय

॥९४॥

अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूंठ बनाय
वेश्या बरष घटावही जोगी बरष बढ़ाय

कहूं २ गुन दोष तें उपजत दुःख शरीर
मीठी बानी बोलि के परत पींजरा कीर

॥९६॥

भले बुरे निबहत सबै महत पुरुष के संग
चंदसर्प जल अग्नि यह बसत शंभु के अंग

॥९७॥

बिना कहेहु सतपुरुष पर की पूरें आस
कौन कहत है सूर कों घर २ करत प्रकास

॥९८॥

कछु काहि नींच न छेड़िये भलौ न वाको संग
पाथर डारे कीच में उछरि बिगारे अंग ॥ ९७

॥९९॥

मीठी मीठी वस्तु नहिं मीठी जाकी चाह ॥
अमली मिसिरी छांड़ि के आफू खात सराह

॥१००॥

खायन खरचे शूद्र मन चोर सबै लै जाय ॥
पीछे ज्यों मधु मक्षिका हाथ मलै पछिताय

उत्तमविद्या लीजिये यद्यपि नीच पै होय ॥
पर्यौ अपावन ठौर में कंचन तजत न कोय

॥१०२॥

जानि बूझि अनुगति करै तासों कहा बसाय
जागतही सोवत रहै ताकों कहा जगाय ॥

॥१०३॥

सजन बचावै कष्ट तें रहै निरंतर साथ ॥
नैन सहाई पलक ज्यों देह सहाई हाथ

॥१०४॥

अरि के कर में दीजिये अवसर को अधिकार
ज्यों २ द्रब्य लुटाय है त्यों २ यश बिस्तार ॥

॥१०५॥

बुद्धिमान गंभीर कों संगति लागति नाहिं
ज्यों चंदन ढिंग अहि रहत बिष न होय तिहि माहिं

॥१०६॥

सज्जन जन दुख हू दिये दुरजन पूरे आस
जैसे चंदन को घिसे सुंदर देत सुबास ॥

सज्जन चित कबहुं न धरत दुर्जन जन के बोल
पाहन मारे आम कों तऊ फल देत अमोल

॥१०८॥

बिरले नर पंडित गुनी बिरले बूझन हार
दुख खंडन बिरले पुरुष ते उत्तम संसार

॥१०९॥

जे करतार बड़े किये मग पग धरत बिचार
दुरजनहू सों मिलि चलें बोलें रोस निवार

॥११०॥

जाहि बड़ाई चाहिये तजे न उत्तम साथ
ज्यों पलास संग पान के पहुंचे राजा हाथ

॥१११॥

बचन पारखी होहु तुम पहलें आपन भाख
अनपूछे नहिं भाखिये यही सीख जिय राख

॥११२॥

मुख श्रवण दृग नासिका सबही के इक ठौर
कहिबौ सुनिबौ देखिबौ चतुरन को कछु और

जो तू चाहे अधिक रस सीख ईख तें लेय ॥
जो तोसें अनरस करे ताहि अधिक रस देय
॥११४॥
नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय
ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै त्यों त्यों ऊंचो होय ॥
॥११५॥
कैसें निबहै निबल जन करि सबलन सों वैर
जैसे बसि सागर विषें करत मगर सों बैर ॥
॥११६॥
अपनी पहुंच बिचारि के करतब करिये दौर
जेते पांव पसारिये तेती लांबी सौर ॥
॥११७॥
पिशुन छल्यौ नर सुजन सो करत विश्वास न चूक
जैसे दाध्यौ दूध कौ पीवत छाछहिं फूंक ॥
॥११८॥
फेरि न ह्वैहै कपट सों जो कीजे ब्यौपार ॥
जैसे हांडी काठ की चढ़त न दूजी बार ॥

करिये सुख कों होत दुख यह कहो कौन सयान
वा सोने को जारिये जासों टूटत कान ॥ ७ ॥

॥१२०॥

भले बुरे जहां एकसे तहां न बसिये जाय
ज्यों अन्यायपुर में बिकें खरि गुर एकहि भाय

॥१२१॥

अति अनीति लहिये न धन जो प्यारो मन होय
पाये सोने की छुरी पेट न मारे कोय ॥ ७ ॥

॥१२२॥

मूरख कों पोथी दई बांचन कों गुन गाथ
जैसे निर्मल आरसी दई अंध के हाथ ॥

॥१२३॥

अति हठ मत कर हठ बढ़े बात न करि है कोय
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय ॥

॥१२४॥

लालच हू ऐसो भलो जासों पूजे आस ॥
चाटेहू कहुं ओस के मिटत काहु की प्यास

जैसो गुन दीनों दई तैसो रूपनिबन्ध ॥
ये दोनों कहां पाइये सोनों और सुगंध

॥१२६॥

प्रेम निबाहन कठिन है समझि कीजियो कोय
भांगभरवन है सुगम पै लहर कठिनही होय

॥१२७॥

एक बस्तु गुन होत है भिन्नप्रकृति के भाय
भटा एक कों पित करे करे एक कों बाय

॥१२८॥

बिनस्वारथ कैसे सहे कोऊ करुरा बैन ॥
लात खाय पुचकारिये होय दुधारू धेन

॥१२९॥

करे बुराई सुख चहे कैसे पावे कोय ॥
रोपै पेड़ बंबूल को आम कहांते होय ॥

॥१३०॥

होय बुराई तें बुरो यह कीनों निरधार ॥
खाड़ खनैगो और को ताकों कूप तयार ॥

कनकन जोरे मन जुरे खाते निबरै सोय ॥
बूंद बूंद सों घट भरे टपकत निबरै सोय ॥

॥१३२॥

श्रमही सों सब मिलत है बिन श्रम मिले न काहि
सीधी अंगुरी घी जम्यों क्योंहूं निकरत नाहि

॥१३३॥

होत न कारज मो बिना यहै कहै सो अयान ॥
जहां न कुक्कुट शब्द तहां होत न कहा बिहान

॥१३४॥

यही बात सबही कहै राजा करे सो न्याव
जों चौपर के खेल में पासो परे सो दाव ॥

॥१३५॥

पर को अवगुन देखिये अपनों दृष्टि न होय
करै उजेरो दीप पै तरें अंधेरो होय ॥

॥१३६॥

अपनी २ गौर पै सब को लागे दाव ॥
जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी पर नाव

सुख दिखाय दुख दीजियें खल सों लरियें काहि
जो रस दीने ही मरत क्यों विष दीजे ताहि ॥

॥१३८॥

छलके ओछे नीर घट पूरे छलके नाहिं
अन पूछे ही जानियें मूंढ देखि मन माहिं

॥१३९॥

बिनसत बार न लागही ओछे जन की प्रीति
अंबर डंबर सांझ के ज्यों बालू की भीति ॥

॥१४०॥

कुल सपूत जान्यों परे लखि सब लच्छन गात
होनहार बिरवान के होत चीकने पात ॥

॥१४१॥

जो धनवंत सु देय कछु देय कहा धनहीन
कहा निचोरे नगन जन न्हाय सरोवर कीन

॥१४२॥

होत निबाह न आपनों लीने फिरत समाज
चूहा बिल न समात है पूंछ बांधियें छाज

बिना प्रयोजन भूलिहू टठिये नाहीं गठ ॥
जानों नहिं जा नगर कों ताकी पूछ न बाट।

॥१४४॥

इंगित औ आकार ते जानि लेत जो भेट
तासों बात दुरत नाहिं ज्यों दाई सों पेट॥

॥१४५॥

आप कहे नाहिन करे ताकों है यह हेत
आप न जावे सासरे औरन कों सिख देत

॥१४६॥

जो कहिये सो कीजिये पहले कर निरधार
पानी पी घर पूछनों नाहीं भलो बिचार॥

॥१४७॥

ठीक किये बिन और की बात सांच मत थर्प
होत अंधेरी रैनि में परी जेबरी सर्प ॥ ७ ॥

॥१४८॥

पाछे को रज कीजिये पहले यतन बिचार
बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहले पार॥

टेर देरिके इजिये कुटिल सरल गति आप
बाइर टेढ़ौ फिरत है बांबी सूधौ सांप ॥ ७॥

॥१५०॥

दोऊ चाहें मिलन कों तौ मिलाप निरधार
कबहू नाहिन बाजि है एक हाथ सों तार

॥१५१॥

आप अकारज आपनों करत कुसंगति साथ
पाय कुल्हारा देत है मूरख अपने हाथ ॥७

॥१५२॥

ताही कौ करिये जतन रहिये ताकी आर ॥
कौन बैठिके डार पर काटै सोई डार ॥७

॥१५३॥

परकृत नीके देखिये कहा बरनें कोऊ ताहि
कर कंकन कौं आरसी को देखत है चाहि

॥१५४॥

आये आदर ना करे जात रहे पछिताय ॥
आयौ नाग न पूजिये बांबी पूजन जाय ॥

निबल सबल की पच्छ तें सबलन सों अनखात
देत हिमायत की गधी गैराकी के लात ॥

॥१५६॥

बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय ॥
कांसे ऊपर बीजरी परत कहत सब कोय ॥

॥१५७॥

ओछे नर के पेट में रहे न मोटी बात ॥ ७ ॥
आधसेर के पात्र में कैसे सेर समात ॥ ७ ॥

॥१५८॥

रससिंगार मंजन किये कंजन भंजन दैन
अंजन रंजन हू बिना खंजन गंजन नैन

॥१५९॥

पत्रा ही तिथि पाइये वा घर के चहुंपास ॥
नितप्रति पून्यों ही रहत आनन ओप उजास

॥१६०॥

जाकी उजराई लखें आंखि उजरी होत ॥
कहा कुसुम कहा कौमुदी कितक आरसी जोत

केसरि क्यों सर करि सके चंपक कितिक अनूप
गातरूप लखि जात दुरि जात रूप को रूप॥

॥१६२॥

भूषनभार संभारही क्यों यह तन सुकमार
सूधे पायँ न धरि परत महि शोभा के भार

॥१६३॥

अरुन सरोरुह कर चरन दृग खंजन मुखचंद
समय पाय सुन्दर सरद काहि न करहि अनंद

॥१६४॥

लगत सुभग सीतल किरन निशदिन सुख अवगाहि
माह ससी स्रम सूर त्यों रहत चकोरी चाहि॥

॥१६५

रणित भृंग घंटावली झरत दान मदनीर॥
मंद मंद आवत चल्यो कुंजर कुंज समीर

॥१६६॥

मंद मंद मारुत तुरँग खुदरत आवत जात॥
रुक्यो सांकरी कुंज मग करत झांझ झुकरात

चटकन चाहत घटतइ सज्जन नेह गंभीर
फीकौ परे न बरघटे रंगयो चोल रंगचीर ॥

॥१६८॥

ज्यों २ बाढ़त उरज उर त्यों २ होत कठोर ॥
जेती संपति रूपन की तेती दूमति जोर ॥

॥१६९॥

नीच हिये हुलसत रहत गहे गेंद को पोत
ज्योंज्यों मांथो मारिये त्यों २ ऊंचो होत ॥

॥१७०॥

कोटिजतन कीजे तऊ परे न प्रकृतहिं बीच
नलबल जल ऊंचो चढ़े अंत नीच को नीच

॥१७१॥

कैसे छोटे नरन सों सरत बड़ेन के काम
मढ़्यौ दमामो जात है कहुं चूहे के चाम

॥१७२॥

ओछे बड़े न ह्वै सकें लगि सतरौहें बैन
दीरघ होंय न नेकहू फारि निहारो नैन

अतिअगाध अतिऊथरो नदी कूपसरबाय
सोताको सागर जहां जाकी प्यास बुझाय॥
॥१७४॥
मीत न नीति गलीति यह जो धन धरिये जोर
खाये खरचे जो बचे तौ जोरिये करोर॥ ७॥
॥१७५॥
दुसह दुराज प्रजान कों क्यों न बढ़े दुखद्वंद
अधिक अंधेरौ जग करें मिलि मावस रवि
चंद॥१७६॥
घरघर डोले दीन ह्वै जनजन जाचत जाय
दिये लोभ चसमा चखनि लघु पुनि बडो-
लखाय॥१७७॥
बसे बुराई जासु तन ताही को सनमान
भले२ काहि छांडिये खोटे ग्रह जपदान॥
॥१७८॥
अरे परेखो क्यों करे तुही विहंग विचार
बाज पराये हाय पै तू पंछिहिं जीन मार

संगति सुमति न पावही परे कुमति के धंधि
राखहु मेलि कपूर में हींग नहोय सुगंधि
॥१८०॥

सबै हंसत कर तार दै नागरता के नांव ॥
गयो गरब गुन को सबै बसे गमेले गांव
॥१८१॥

सोहत संग समान सों यहै कहत सब लोग
पानपीक ओठन बनें काजर नैनन जोग ॥
॥१८२॥

बुरो बुराई जो तजै तो चित खरो सकात
ज्यों निकलंक मयंक लखि गिनें लोग उ-
त्पात ॥

इति श्रीअनुरागरस ॥
दोहावली
समाप्तम्
श्रावणकृष्णा नवमी
१९५०

सूचीपत्र

इति